प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा
(डी.एल.एड.)

पाठ्यक्रम-506
समावेशी-संदर्भ में बच्चों को समझना

ब्लॉक-3
समावेशी शिक्षा

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
A 24/25, सांस्थानिक क्षेत्र, सैक्टर-62 नौएडा,
गौतम बुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201309
वैबसाइट : www.nios.ac.in

EXPERT COMMITTEE

Dr. Sitansu S. Jena
Chairman, NIOS, NOIDA
Sh. B.K.Tripathi
IAS, Principal Secretary, HRD,
Govt. of Jharkhand, Ranchi
Prof. A.K. Sharma
Former Director, NCERT, New Delhi
Prof. S.V.S. Chaudhary
Former Vice Chairperson, NCTE,
New Delhi
Prof. C. B. Sharma
School of Education, IGNOU, New Delhi
Prof. S.C. Agarkar
Professor, Homi Bhabha Centre for Science Education , Mumbai

Prof.C.S. Nagaraju
Former Principal,
RIE (NCERT),Mysore
Prof. K. Doraisami
Former Head, Department of Teacher Education and Extension, NCERT,New Delhi
Prof. B. Phalachandra,
Former Head, Dept of Education & Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore
Prof. K. K. Vashist Former Head, DEE, NCERT, New Delhi
Prof. Vasudha Kamat
Vice Chancellor,
SNDT Women's University, Mumbai

Dr. Huma Masood
Education Specialist, UNESCO,
New Delhi
Prof. Pawan Sudhir
Head, Deptt. of Art & Aesthtic Education, NCERT,New Delhi
Sh. Binay Pattanayak
Education Specialist, UNICEF, Ranchi
Dr. Kuldeep Agarwal
Director(Academic), NIOS,NOIDA
Prof. S.C. Panda
Sr. Consultant(Academic),
NIOS, NOIDA
Dr. Kanchan Bala Kachroo
Executive Officer(Academic),
NIOS,NOIDA

COURSE COORDINATOR

Prof. B. Phalachandra,
Former Head, Dept of Education &
Dean of Instruction, RIE (NCERT), Mysore

LESSON WRITERS

Dr. Sharmista, Lecturer
BGS. B.EdCollege, Mysore
Dr. T. N. Raju, I/C Principal
BES B.EdCollege,Bangalore
Dr. Kavya Kishore, Lecturer,
IASE, Bangalore
Dr. Parimala, Guest Faculty
Dept of Women Studies,
Mysore University
Dr. Jayanthi Narayan
Consultant, Special Education,
(LD & ID), Former Dy. Director,
National Institute for the Mentally Handicapped, Secunderabad

Ms. Lakshmi Prasad. C
Student Counsellor
SSN College of Engineering,
Rajiv Gandhi Salai
Kalavakkam , Tamil Nadu
Dr. D. Rekha,
Project coordinator, V-Lead, Mysore
Dr. S. Bhaskra
Retd Principal, RV Teachers College,
Bangalore
Mr. H. L. Satheesh,
Teacher, DM School,
RIE, Mysore

Dr. I.P. Gowramma, Asstt. Prof,
RIE, Mysore
Ms.Vidya Pramod, Faculty, CBR Net work Bangalore
Dr.Asha Kamath
Assistant Professor,
Regional Institute of Education ,
Mysore
Ms. Kalapana Prakash
Programme Co-ordinator
KPAMRC Bangalore

CONTENT EDITOR

Prof. S.K. Panda,
Professor STRIDE, IGNOU,
New Delhi

TRANSLATORS

Dr. Ravinder Pal
Retd. Sr. Lecturer,
DIET, New Delhi

Ms. Anuradha
Lecturer, DIET
New Delhi

Dr. Satyavir Singh
Principal, S.N.I. College,
Pilana, Baghpat (U.P.)

Dr. Anil Kumar Teotia
Sr. Lecturer,
SCERT, New Delhi

PROGRAMME COORDINATOR

Dr. Kuldeep Agarwal
Director(Academic), NIOS,
NOIDA

Prof.S.C.Panda
Sr. Consultant (Teacher Education),
Acad. Deptt, NIOS, NOIDA

Dr. Kanchan Bala Kachroo
Senior Executive Officer (Teacher Education), Acad. Deptt, NIOS, NOIDA

COVER CONCEPTUALISATION & DESIGNING

Mr. D.N. Upreti
Publication Officer, Printing, NIOS,NOIDA
Mr. Dhramanand Joshi
Executive Assistant, Printing, NIOS NOIDA

TYPESETTING

M/S Shivam Graphics
431, Rishi Nagar, Delhi-34

SECRETARIAL ASSISTANCE

Ms. Sushma
Junior Assistant, Academic, Department,
NIOS, NOIDA

अध्यक्ष का संदेश .....

प्रिय अधिगमकर्ता,

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है। माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लगभग 2.02 करोड़ अधिगमकर्ताओं के साथ वर्तमान में यह विश्व की सबसे बड़ी मुक्त विद्यालयी शिक्षण प्रणाली है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पास अपने शैक्षिक एवं व्यावसायिक कार्यक्रमों के लिए देश में और उसके बाहर 15 से अधिक क्षेत्रीय केंद्रों, 2 उपकेंद्रों और 5000 अध्ययन केंद्रों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय तन्त्र है। यह अधिगमकर्त्ताओं को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से केंद्रिक गुणवत्ता-शिक्षा, कौशल विकास और प्रशिक्षण का उपागम उपलब्ध कराता है। इसके कार्यक्रमों का वितरण मुद्रित सामग्री के माध्यम से मुखाभिमुख शिक्षण से युग्मित, सूचना एवं संचार तकनीकि, श्रव्य-दृश्य कैसेट्स, आकाशवाणी प्रसारण, दूरदर्शन प्रसारण आदि से अनुपूरित होता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान को प्रारंभिक स्तर पर अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अधिकार संपन्न किया गया है। प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्रस्ताव राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान द्वारा उस क्षेत्र में कार्यरत अन्य अभिकरणों के सहयोग से विकसित किया गया है। यह संस्थान शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अनुसार विभिन्न राज्यों में अप्रशिक्षित अंत:सेवी शिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में एक बहुत ही नवीन एवं चुनौतीपूर्ण द्वि-वर्षीय उपाधि प्रदान करता है।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के प्रारंभिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम के इस उपाधि पाठ्यक्रम में आप सबका स्वागत करते हुए मुझे सुखानुभूति हो रही है। मैं आपके राज्य के बच्चों के प्रारंभिक-शिक्षा में योगदान के लिए आपका आभार व्यक्त करता हूं। शिक्षा के अधिकार कानून 2009 के अनुसार सभी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो गया है। हम समझते हैं कि एक अध्यापक के रूप में आपका अनुभव, एक अच्छा शिक्षक होने के लिए आवश्यक अपेक्षित कौशल आपको पहले ही प्रदान कर चुका है। चूंकि कानून द्वारा अब यह अनिवार्य है अत: आपको यह कार्यक्रम पूर्ण करना पड़ेगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपके द्वारा अब तक संचित ज्ञान और अनुभव निश्चय ही आपको इस कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करेगा।

प्रारम्भिक शिक्षा डिप्लोमा कार्यक्रम में प्रशिक्षण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विधि के माध्यम से दिया जाता है और एक शिक्षक के रूप में आपके नियमित कार्य को बाधित हुए बिना आपको पेशेवर रूप से प्रशिक्षित होने का विस्तृत अवसर प्रदान करता है। विशेष रूप से आपके उपयोग के लिए विकसित स्व-अनुदेशात्मक सामग्री आपको सेवा के लिए योग्य होने के अतिरिक्त आपकी समझ सृजित करने और एक अच्छा शिक्षक होने में सहायक होनी चाहिए।

इस महान प्रयत्न में शुभकामनाओं सहित!

एस.एस. जेना

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

पाठ्यक्रम अवधारणा मानचित्र

पाठ्यक्रम-506 ''समावेशी-संदर्भ में बच्चों को समझना''

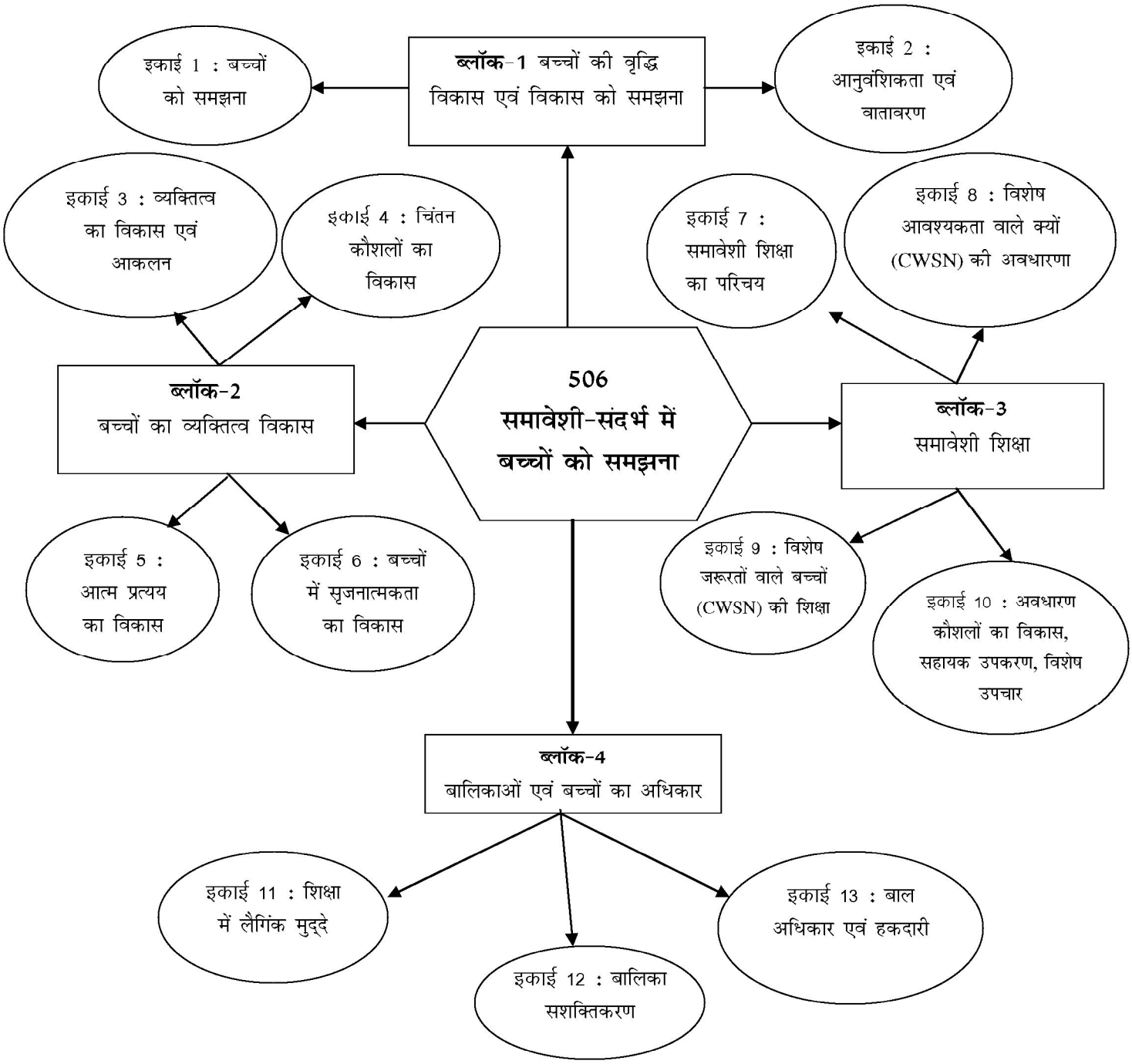

श्रेय अंक (8=6+2)

खण्ड	इकाई	इकाई का नाम	सैद्धान्तिक अध्ययन अवधि (घंटों में)		प्रयोगात्मक अध्ययन
			विषय-वस्तु	क्रियाकलाप	
ब्लॉक-1 बच्चों की वृद्धि विकास एवं विकास को समझना	**इकाई 1**	बच्चों को समझना	6	3	• आपके विद्यालय के बच्चों के वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
	इकाई 2	आनुवंशिकता एवं वातावरण	6	3	• अपनी कक्षा के षिक्षार्थियों पर आनुवंषिक प्रभावों की सूची बनाओ। • अपने विद्यालय में एक ही परिवार से भाई बहनों पर वातावरण के प्रभाव से संबंधित गुणों का पता लगाओ।
ब्लॉक-2 बच्चों का व्यक्तित्व विकास	**इकाई 3**	व्यक्तित्व का विकास एवं आकलन	8	4	• अपनी कक्षा के षिक्षार्थियों में व्यक्तित्व की विषेषताओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।
	इकाई 4	चिंतन कौशलों का विकास	8	4	• आपके विद्यालय शिक्षार्थियों में प्रश्न पूछने संबंधी कौशल के विकास के तरीकों की पहचान करना।
	इकाई 5	आत्म प्रत्यय का विकास	10	5	• आत्म प्रत्यय के विकास हेतु कक्षा कक्ष शर्तों की पहचान करना।
	इकाई 6	बच्चों में सृजनात्मकता का विकास	9	7	• अपनी कक्षा में सृजनात्मकता में वृद्धि हेतु आपके द्वारा पैदा की जाने वाली परिस्थितियों को सूचीबद्ध करना।
ब्लॉक-3 समावेशी शिक्षा	**इकाई 7**	समावेशी शिक्षा का परिचय	6	3	• आपके विद्यालय में समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को सूचीबद्ध करना।
	इकाई 8	विशेष आवश्यकता वाले क्यों (CWSN) की अवधारणा	7	4	• अपने विद्यालय में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अधिगम संबंधी जरूरतों की पहचान करना।
	इकाई 9	विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा	9	6	• गृह–आधारित शिक्षा के लिए क्रियात्मक योजना तैयार करना।
ब्लॉक-4 बालिकाओं एवं बच्चों का अधिकार	**इकाई 10**	अवधारण कौशलों का विकास सहायक उपकरण, विशेष उपचार	9	3	• अपने विद्यालय में किसी भी प्रकार की बाधा के संदर्भ में विशेष उपचारों पर सेमिनार
	इकाई 11	शिक्षा में लैगिंक मुद्दे	9	6	• लैंगिक मुद्दों पर अपने विद्यालय की भूमिका की पहचान करना।
	इकाई 12	बालिका सशक्तिकरण	9	6	• अपने विद्यालय की बालिकाओं में जीवन कौशलों के विकास में अपनी भूमिका को

					सूचीबद्ध करना।
	इकाई 13	बाल अधिकार एवं हकदारी	9	6	• अपने विद्यालय एवं आस–पास के क्षेत्र में बाल अधिकारों के हनन को सूचीबद्ध करना।
		शिक्षण	15		
			120	60	30
कुल योग			**120+60+60=240**		

ब्लॉक-3
समावेशी शिक्षा

इकाई 7 : समावेशी शिक्षा का परिचय

इकाई 8 : विशेष आवश्यकता वाले क्यों (CWSN) की अवधारणा

इकाई 9 : विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा

इकाई 10 : अवधारण कौशलों का विकास (Development of Adoptive Skills), सहायक उपकरण (Assistive Devices), विशेष उपचार (Special Therapies)

खंड प्रस्तावना

खण्ड 3 : समावेशी शिक्षा

एक विद्यार्थी के रूप में आप खण्ड 3 : समावेशी शिक्षा का अध्ययन करेंगे। इस खण्ड में समावेशी शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा एवं प्रत्यय तथा अवधारण कौशल (Adoptive Skills), सहायक उपकरण (Assistive Devices) एवं विशेष उपचार (Special Therapies) के विकास से संबंधित चार इकाईयां है। प्रत्येक इकाई कुछ भागों तथा उपभागों में विभाजित है। इससे पूर्व आप खण्ड 1 : बाल विकास एवं वृद्धि के आधार तथा खण्ड 2 : बच्चों का व्यक्तित्व विकास का अध्ययन कर चुके हैं।

इकाई 7 : समावेशी शिक्षा का परिचय

यह इकाई आपको विशेष शिक्षा, एकीकृत शिक्षा तथा समावेशी शिक्षा के प्रत्येक तथा इनकी प्रकृति को समझने के योग्य बनाने में मदद करेगी। आप समावेशी विद्यालय तथा समावेशी कक्षा कक्ष को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों पर चर्चा कर सकेंगे। आप विभिन्न वंचित वर्गों जैसे दलित आदिवासी, बालिका इत्यादि के संदर्भों में समावेशी शिक्षा हेतु विभिन्न प्रबंधनों जैसे अधिगम सामग्री, भौतिक वातावरण, कक्षाकक्ष इत्यादि को जान सकेंगे।

इकाई 8 : विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की संकल्पना

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप विशेष आवश्यकता वाले बच्चे (CWSN) की अवधारणा को परिभाषित कर सकेंगे। आप विभिन्न प्रकार की अक्षमताओं जैसे–मानसिक, शारीरिक, भावानात्मक, व्यवहार संबंधी, अधिगम संबंधी इत्यादि की पहचान कर सकेंगे। आप समय पूर्व पहचान, आकलन तथा उपचार को जान सकेंगे। आप इस इकाई में विभिन्न अधिनियमों जैसे PWD एक्ट 1995, PWD Bill 2011 में निहित विभिन्न प्रावधानों को जान सकेंगे।

इकाई 9 : विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक चुनौतियाँ, अधिगम प्रवृत्ति तथा उनकी आवश्यकताओं को समझने के योग्य हो सकेंगे। आप पाठ्यचर्या अवधारण तथा इसकी आवश्यकता की चर्चा कर सकेंगे। आप विभिन्न स्तरों जैसे स्कूल, संकुल, ब्लाक, जिला तथा राज्य इत्यादि पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अधिगम आवश्यकता की पूर्ति हेतु आवश्यक सुविधाओं को जान सकेंगे। आप इन बच्चों के अधिगम हेतु उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का समावेशी कक्षाकक्ष के संदर्भ में उपयोग कर सकेंगे। आप आवास आधारित शिक्षा के प्रत्यय पर भी चर्चा करने में सक्षम हो सकेंगे।

इकाई 10 : अवधारण कौशलों का विकास (Development of Adoptive Skills), सहायक उपकरण (Assistive Devices), विशेष उपचार (Special Therapies)

यह इकाई आपको अवधारणा कौशलों के विकास, सहायक उपकरणों तथा विशेष उपचार के बारे में जानकारी हासिल करने में मदद करेगी। आप adoptive skills and assistive devices जैसे श्रवण बाधितों के लिए, वाचन बाधितों के लिए, बहु असम के लिए इत्यादि को जान पायेंगे तथा इनका उपयोग करने में सक्षम ही सकेंगे। आप अधिगम अक्षमता, दृष्टि अक्षमता इत्यादि के adoptations की समझ पायेंगे तथा कक्षा में इन संदर्भों में शिक्षक की भूमिका की समझ सकेंगे। आप समावेशी संदर्भों में प्रभावी शिक्षण हेतु कुछ विशेष तरीकों की समझ सकेंगे।

विषय सूची

क्रम. सं.	*पाठ का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	इकाई 7 : समावेशी शिक्षा का परिचय	1
2.	इकाई 8 : विशेष आवश्यकता वाले (CWSN) की अवधारणा	21
3.	इकाई 9 : विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा	53
4.	इकाई 10 : अवधारण कौशलों का विकास (Development of Adoptive Skills), सहायक उपकरण (Assistive Devices), विशेष उपचार (Special Therapies)	69

इकाई-7 समावेशी शिक्षा का परिचय

टिप्पणी

संरचना

7.0 प्रस्तावना

7.1 अधिगम उद्देश्य

7.2 समावेशी शिक्षा की संकल्पना

- 7.2.1 समावेशी शिक्षा का अर्थ एवं प्रकृति
- 72.2. समावेशी शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व
- 7.2.3 समावेशी शिक्षा-अन्य संबंधित अवधारणाओं से भिन्न

7.3 समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक

- 7.3.1 शिक्षार्थियों में विविधता
- 7.3.2 शिक्षकों की तैयारी
- 7.3.3 आधारिक संरचना
- 7.3.4 संसाधनों की उपलब्धता
- 7.3.5 मूल्यांकन प्रणाली

7.4 एक समावेशी कक्षा का निर्माण

- 7.4.1 अधिगम सामग्री का उपयोग करना
- 7.4.2 भौतिक वातावरण को संशोधित करना
- 7.4.3 सरल कक्षा प्रबंधन तकनीकों को अपनाना
- 7.4.4 बच्चे के अनुकूल मूल्यांकन प्रणाली का प्रयोग

7.5 शिक्षा व्यवहार से बाहर होने के जोखिम वाले बच्चे

- 7.5.1 विकलांग बच्चे
- 7.5.2 वंचित वातावरण से बच्चे
- 7.5.3 बालिकाएं
- 7.5.4 प्रतिभाशाली और सूचनात्मक बच्चे
- 7.5.5 अन्य-निम्न उपलब्धि स्तर वाले, अल्पसंख्यक समुदाय से, भौगोलिक बाधाओं से।

7.6 सारांश

7.7 प्रगति जाँच के उत्तर

7.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

7.0 प्रस्तावना

प्रत्येक बच्चा अपने देश की जिम्मेदारी है। वे देश के भविष्य के नागरिक हैं। देश के विकास में व्यक्तिगत रूप से सभी नागरिकों के योगदान की आवश्यकता है। इसके लिए देश को प्रत्येक बच्चे के स्वास्थ्य, खुशी, उपलब्धि, योगदान, सुरक्षा और सफलता की चिंता होती है। निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आरटीई अधिनियम 2009) इस लक्ष्य की प्राप्ति के उठाये गए कदमों में से एक कदम है। शिक्षक होने के नाते इस राष्ट्रीय मिशन में हमारा योगदान महत्त्वपूर्ण है। इस प्रक्रिया में प्रत्येक बच्चे को चाहे कितनी विविधता हो, सशक्त बनाने में हमारी सक्रिय प्रतिभागिता महत्त्वपूर्ण है। शिक्षार्थियों के बीच विविधता उनके सीखने की क्षमता, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक विविधताओं यहां तक कि भावनात्मक व्यवहारिक विशेषताओं के संदर्भ में हो सकती है। हमारी शिक्षा प्रणाली प्रत्येक बच्चे को इष्टतम विकास के लिए बराबर अवसर प्रदान करने के लिए कहती है। 'समावेशी शिक्षा' इस दृष्टि की कल्पना करने के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उभरी है। यह वास्तव में बहुत ही उत्साहवर्धक और सकारात्मक कदम है। इस इकाई में पहले हम पढ़ेंगे कि समावेशी शिक्षा क्या है। एक बार हम यह जान गए तो हम समझ जाएंगे कि क्यों हमें इसको व्यवहार में लाना है, और इस प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं। आइए हम इस प्रकार की कक्षा का निर्माण करने में अपनी भूमिका को समझें। अंत में, आइए देखें कि कौन से बच्चे हैं जो कक्षा में समायोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं। जैसे हम इस इकाई में आगे बढ़ते हैं, हर स्तर पर विभिन्न आवश्यकताओं वाले बच्चों की जरूरतों के अनुरूप हम अपनी भूमिका का विश्लेषण करेंगे।

मुझे विश्वास है कि इस इकाई को पूरी तरह पढ़ने के बाद हम राष्ट्रीय मिशन में पूरा योगदान देकर प्रसन्नता महसूस करेंगे।

7.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- 'समावेशी शिक्षा' क्या है, स्पष्ट कर सकेंगे।
- समावेशी शिक्षा की आवश्यकता का औचित्य समझाएंगे।
- एकीकृत शिक्षा और समावेशी शिक्षा के बीच अंतर बता सकेंगे।
- समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों की सूची बना पाएंगे।
- समावेशी शिक्षा के लिए 'जोखिम में बच्चों' की पहचान कर पाएंगे।
- कक्षा व स्कूल में समावेशिता को सुनिश्चित करने में शिक्षक की भूमिका का वर्णन कर पाएंगे।

टिप्पणी

7.2 समावेशी शिक्षा की संकल्पना

हमारे लोकतांत्रिक देश में सभी नागरिकों को समान अवसरों की गारंटी है। इस संवैधानिक अधिकार के बावजूद हमारे समाज में अनौपचारिक भेदभाव को सामान्यत: देखा गया है। व्यक्तियों पर उनके भिन्न होने (सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शारीरिक, बौद्धिक और व्यवहारिक गुणों में) के आधार पर प्रतिबंध लगाए जाते हैं। यह न तो लोकतांत्रिक है और न ही स्वाभाविक। पृथक्करण प्रकृति के नियम के विरुद्ध है। सूर्य ने अपनी गर्मी व प्रकाश देने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया, हवा इस पृथ्वी पर किसी को न नहीं कहती। प्रकृति अपने सदस्यों को बिना भेदभाव पूर्ण क्षमता तक विकसित होने के अवसर प्रदान करती है।

कुछ स्कूल कुछ बच्चों को 'न' कहते हैं। क्यों? कुछ बच्चों को शिक्षा के समान अवसर नहीं मिलते, वे कौन हैं? शिक्षा में पृथक्करण की प्रथा और स्कूल जाने की उम्र में स्कूल न जा पाना, समाज में बच्चों से समानता व प्रतिभागिता का हक छीन लेता है। इस परिस्थिति में व्यक्तिगत क्षमता के मूल्य को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया जाता है। इसे समझते हुए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय घोषणाओं ने बिना किसी भेदभाव के सभी बच्चों को स्कूलों में शामिल करने का समर्थन किया है।

इसीलिए हाल ही में बनी शिक्षा योजनाएं और नीतियों ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया है जो सभी बच्चों को समान अवसर प्रदान करती है। दुनियाभर की लोकतांत्रिक प्रणाली के प्रशासन इस दर्शन को मानते हैं। यही सिद्धांत शिक्षा के क्षेत्र में समावेशी शिक्षा के नाम से प्रारंभ किया गया है। सामेकन बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने व उनकी आंतरिक शक्ति के विकास से संबंधित है। यह विभिन्नताओं को महत्त्व देता है चाहे बाहरी कारक कितनी ही सीमाएं खड़ी कर दें। ''समस्या मतभेदों का सफाया करने की नहीं है बल्कि मतभेदों को बरकरार रखकर कैसे एकजुट हुआ जाए, की है।'' रवीन्द्रनाथ टैगोर

7.2.1 समावेशी शिक्षा का अर्थ और प्रकृति

एक पेशेवर के रूप में एक डाक्टर एक समय में एक ही मरीज़ का इलाज़ करता है, वकील एक समय में एक ही व्यक्ति का केस लड़ता है क्योंकि समस्याएं विविध हैं और लोग व्यक्तिगत रूप से उनकी मदद लेते हैं। परन्तु पेशेवरों के रूप में हम युवा बच्चों के समूह से पेश आते हैं। समूह को एक इकाई के रूप में मानकर उसमें व्यक्तिगत आवश्यकता को ध्यान में रखकर उसमें अच्छी शिक्षा प्रदान करने के विचार को समावेशी शिक्षा कहते हैं। आप हैरान हो रहे होंगे कि ऐसा तो पहले भी करते थे परंतु तब इसको कोई विशेष नाम नहीं दिया गया था। आप ठीक समझते हैं। प्राचीन काल से ही हम प्रत्येक बच्चे को बेशक वे विविध पृष्ठभूमियों से आए हों, शिक्षा प्रदान करते रहे हैं। हम उन्हें उनकी क्षमता के अनुसार तैयार करके आत्मनिर्भर और सामाजिक रूप से उत्पादक बनाते थे। कुछ देर से हम शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में दबाव के कारण इस लोकतांत्रिक प्रथा से दूर चले गए हैं। चलो अब सीखें कि हमारे शिक्षा क्षेत्र के दूरदार्शियों की कल्पना के अनुसार समावेशी शिक्षा क्या है। समावेशी शिक्षा उन सब बच्चों को

शिक्षा देने का उपागम है जो शिक्षा प्रणाली में उपेक्षित होने के कारण शिक्षा छोड़ने के जोखिम में हैं। यह उम्मीद करता है कि सभी शिक्षार्थी सामान्य शैक्षिक प्रावधानों के उपयोग से इकट्ठे सीखते हैं। इस व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण लोग हैं- माता-पिता और समुदाय; शिक्षक, अधिकारी और पौलिसी बनाने वाले। इन सबको बच्चों की विविध आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना होगा। उसे अनुभव के रूप में देखना चाहिए न कि समस्या के रूप में।

समावेशी कक्षा में हमारा प्रमुख ध्यान किस पर केंद्रित होना चाहिए? आइए एक परिस्थिति द्वारा इसे समझें :

लता कक्षा 4 के बच्चों को भाषा का विषय 'आम' पढ़ाने की तैयारी कर रही थी। उसने योजना बनाई कि यह पाठ उस मौसम में पढ़ाएगी जब आम बहुत होंगे। उसने कक्षा के हर बच्चे से एक-एक रुपया लिया और पके आम कक्षा में ले आई। उसने बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में बांटा। सब बच्चे स्कूल में बड़े आम के पेड़ के नीचे बैठ गए। प्रत्येक समूह के सामने दो आम रखे गए। पाठ में आम का रंग, खुशबू, टेक्सचर सब पढ़कर सुना दिया। सब बच्चे पाठ में आए नए शब्द लिख रहे थे। शिक्षिका सब शब्दों का अर्थ सामने पड़े आमों से जोड़कर बता रही थी। बच्चों ने फल को छुआ, सूंघा और उसका अनोखा आकार देखा। आम का आकार जो कला में मशहूर है बच्चों ने शिक्षिका की साड़ी में भी देखा। शिक्षा ने कुछ शादी के कार्ड और ग्रीटिंग कार्ड भी दिखाए जिसमें आम के डिजाइन प्रिंट थे। आम के स्वाद के अतिरिक्त सभी शब्द समझा दिए गए। कक्षा समाप्त होने से पहले लता ने बच्चों को हाथ धोने के लिए कहा। पानी आम के पेड़ के नीचे ही रखा था। हर समूह में से एक बच्चा पानी डालता था और बाकी सब हाथ धोते थे। जब वे हाथ धोकर आए तो लता ने हर समूह में आम काटे। सब बच्चों ने रसदार, चटक पीला फल, जिसकी खुशबू से मुंह में पानी आ जाता है, खाया और उसके मज़ेदार स्वाद का आनंद लिया। इस पूरे पाठ के दौरान शिक्षिका क्या कर रही थी?

- उसने हर बच्चे को समूहों के सदस्य के रूप में स्वीकार किया।
- कक्षा का भौतिक रूप से और साथ ही दृष्टिकोण के हिसाब से पुनर्गठन किया।
- क्रियाकलापों की इस प्रकार योजना बद्ध किया कि कक्षा के सभी बच्चों को प्रतिभागिता अवश्य करनी पड़े।
- उसका ध्यान कक्षा में बच्चों की विविधता के अनुसार क्रिया-कलाप करवाने पर था।

ऊपर दिए उदाहरण से आप बहुत से निष्कर्ष निकाल सकते हो।

उन्हें यहां लिखो :

.....

.....

.....

टिप्पणी

.....

.....

तो सामेविश होने का अर्थ है सभी बच्चों द्वारा प्रभावी अधिगम। यह अवसर की समानता के सामाजिक मॉडल पर आधारित है। यह अभ्यास विभिन्नता का आदर और विविधता को स्वीकारने के सिद्धांत पर आधारित है जो प्रकृति और मानवता का हिस्सा है।

7.2.2 समावेशी शिक्षा की आवश्यकता और महत्त्व

शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है। समाज को मानवता की प्रगति के लिए विभिन्न लोगों की आवश्यकता होती है। इसे पूरा करने के लिए समावेशी शिक्षा की आवश्यकता है। आइए विभिन्न कोणों से समावेशी शिक्षा की आवश्यकता को समझें :

मानवाधिकार

- सभी बच्चों को इकट्ठे सीखने की आवश्यकता है।
- कोई भी अधिगम क्षमता, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और परिवारिक पृष्ठभूमि के कारण बच्चों में भेद-भाव नहीं कर सकता।

शिक्षा

- शोधकार्यों से पता चलता है कि समावेशित वातावरण में बच्चे शैक्षिक व सामाजिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं।
- प्रतिबद्धता और समर्थन को देखते हुए समावेशी शिक्षा शैक्षिक संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग है।

सामाजिक

- सभी बच्चे अपने आसपास के विभिन्न लोगों से संबंध बनाते हैं और यह उन्हें जीवन की मुख्यधारा के लिए तैयार करता है।
- समावेशन में डर कम करने और मैत्री विकसित करने की क्षमता है।
- साथियों के बीच आपसी सम्मान, समझ और करुणा बढ़ जाती है।

मनोवैज्ञानिक

- समूह में सुरक्षित होने की भावना का विकास
- विविधता में भी व्यक्तिगत क्षमता पर विश्वास

समावेशी शिक्षा विभिन्न तरीकों से बच्चों के विकास में मदद करती है। विशिष्ट चुनौतियों वाले शिक्षार्थी शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास व मोटर कौशलों में बढ़त हासिल करते हैं। वे अच्छा करते हैं जब सामान्य पर्यावरण उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए समायोजित किया जाता है। स्कूलों में बच्चे सामान्य विविधता वाले लोगों और वंचित लोगों के लिए सहिष्णुता विकसित करते हैं। जब हम बच्चों को शिक्षा व्यवस्था से बाहर करते हैं, समाज में वहां सीमांकन शुरू हो जाता है। ऐसे बच्चों को बाद में समुदाय के किसी प्रयोजन में शामिल करना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार समावेशी शिक्षा एक समावेशी समाज की नींव डालती है जो विविधता को स्वीकारता है। सम्मान करता है और मानता है। (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 2005)

समावेशी शिक्षा के लाभ

- समावेशी शिक्षा गरीबी और अपवर्जन के चक्र को तोड़ने में मदद कर सकती है।
- यह बच्चों को उनके परिवारों और समुदायों के साथ रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- स्कूल का वातावरण सुधारती है जिसका लाभ सभी शिक्षार्थियों को मिलता है।
- यह भेदभाव को मिटाती है जो हर समाज में बड़े पैमाने पर फैला है।
- यह राष्ट्र के विकास के लिए सभी व्यक्तियों के समावेश को बढ़ावा देती है।

इस लिस्ट में आप अपनी समावेशी शिक्षा की समझ से जो जोड़ना है, जोड़ सकते हैं।

7.2.3. समावेशी शिक्षा-अन्य संबंधित अवधारणाओं से भिन्न

इन वर्षों में 'एकीकृत शिक्षा' के स्थान पर 'समावेशी शिक्षा' का प्रयोग होने लगा है। शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे कई लोग इन दो शब्दों का एक ही अर्थ समझते हैं। वे इसे केवल शब्दावलि का परिवर्तन समझते हैं। परन्तु समावेशी शिक्षा का अर्थ एकीकृत शिक्षा से कहीं अधिक विस्तृत है। कई वर्षों से विकलांग बच्चों के पृथक्करण को रोकने व उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिए 'एकीकृत करना' व 'मुख्यधारा में शामिल करना' आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा है। समावेशी शिक्षा एक विस्तृत शब्द है जो शिक्षा के लिए बच्चों के पृथक्करण को रोकने की बात कहती है। आइए इन शब्दों को स्पष्ट रूप से समझें।

मुख्यधारा में लाना

शुरू में प्रयास किया गया था कि विकलांग बच्चों को सामान्य रूप से शिक्षा प्रदान की जाए। इस दृष्टि के अनुसार विशेष स्कूल विकलांग बच्चों को सामान्य स्कूल के लिए तैयार करता और जो बच्चे तैयार हो जाते उन्हें सामान्य स्कूलों में भर्ती करवा दिया जाता। यहां 'तैयार होने' का अर्थ है कि बच्चा स्कूल की शैक्षिक व सामाजिक मांगों को पूरा कर पाएगा। इस प्रक्रिया को मुख्य धारा में लाना कहा गया।

टिप्पणी

एकीकरण

एकीकरण शब्द का प्रयोग विकलांग बच्चों की सामान्य बच्चों के साथ शैक्षिक कार्यक्रमों में प्रतिभागिता का वर्णन करने के लिए किया गया। यहां प्रतिभागिता की जिम्मेदारी बच्चे की थी। पढ़ाने की विधि या शिक्षण अधिगम सामग्री के संदर्भ में कक्षाएं और विद्यालय बच्चे की आवश्यकताओं और ज़रूरतों से समायोजन करने के लिए तैयार नहीं थे। सभी बच्चों के केवल एक ही समय में एक स्थान पर बैठाने तक ही 'एकीकृत' करना सीमित था।

समावेशन

कोई शक नहीं कि ऊपर लिखी सोच और व्यवहार ने एक व्यापक, लोकतांत्रिक दृष्टि-समावेशी शिक्षा को लागू करने की नींव बनाई। समावेशन से तात्पर्य है विद्यालयों और समुदायों का पुनर्गठन जिसे सभी बच्चे एक समान वातावरण में बिना किसी भेदभाव के सीख पाएं। समावेशी शिक्षा का सामान्य दर्शन अच्छी शिक्षण पद्धतियों, कक्षा में सभी बच्चों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता अच्छे शिक्षक-शिक्षार्थी संबंधों द्वारा बढ़ाने आदि की सोच प्रदान करता है। कक्षा का नियमित वातावरण व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित किया जाता है। बच्चों को एक ही समय में इकट्ठा बैठाकर (एकीकृत), पाठ्यक्रम में उचित परिवर्तन करके, अतिरिक्त समय देकर, पढ़ाने की विशिष्ट विधियां अपनाकर, बड़ों की अतिरिक्त मदद देकर उन्हें लाभ पहुंचाया जाता है।

समावेशी शिक्षा और एकीकृत शिक्षा में अंतर

दोनों का एक उद्देश्य समान है, दोनों विकलांग बच्चों को नियमित स्कूलों में स्थान देने की बात कहते हैं। इस समानता के अतिरिक्त, वे कई माइनों में एक दूसरे से भिन्न हैं।

एकीकृत करना विकलांग बच्चों को मुख्यधारा (नियमित स्कूलों) में स्थान देने की प्रक्रिया है। एकीकृत करने में विकलांग बच्चे को नियमित स्कूल में 'फिट' करने पर जोर है। एकीकृत करने में विकलांग बच्चे को नियमित व्यवस्था में बैठने के लिए तैयार करने का प्रयास है। उदाहरण के लिए कम सुनने वाले बच्चे को उपयुक्त परिवर्धन यंत्र (सुनने में सहायक) लगाना। सुनने और बोलने का प्रशिक्षण बच्चे को संसाधन कक्ष में दिया जाएगा।

दृष्टि दोष वाले बच्चों को संसाधन कक्ष में या विशेष केंद्र में ब्रेल सीखने के लिए भेजा जाएगा। चलने-फिरने संबंधी विकलांगता वाले बच्चों को गति में सहायक उपकरण दिए जाएंगे। कक्षा/विद्यालय के मूल ढांचें को रूपांतरित किया जाएगा ताकि बच्चे स्वतंत्र रूप से विद्यालय आ सकें। यह लोगों की मानसिकता बदलने की दिशा में वास्तव में एक स्वागत योग्य कदम था।

इसमें कोई शक नहीं कि एकीकरण ने हमें समावेशन को लागू करने के लिए तैयार किया। समावेशी शिक्षा एक कार्य करने का तरीका है और सोच का रास्ता है। जो सभी बच्चों के लिए सभी संदर्भों में लागू होता है। समावेशन बच्चों में परिवर्तन लाने के बजाय व्यवस्था में परिवर्तन

टिप्पणी

लाने पर ज़ोर देता है। समावेशी शिक्षा में विकलांग बच्चों के अतिरिक्त और भी बच्चों के समूह जिन्हें शिक्षा पाने में कोई खतरा है, सामान्य शिक्षा वाली कक्षा के सदस्य होते हैं। यहाँ हर बच्चे को कक्षा में चल रही गतिविधियों में भाग लेने के लिए समर्थन प्रदान करने पर बल है।

व्यवस्था को बच्चों की आवश्यकता व जरूरतों के अनुसार अनुकूलन करने की आवश्यकता होती है जैसे अनुकूलित पाठ्यक्रम, सामग्री व शिक्षण पद्धतियां। समर्थन में अतिरिक्त स्टाफ, परामर्श स्टाफ और मौजूदा स्टाफ का विशेष प्रशिक्षण शामिल है। पाठ्यक्रम और गैर-पाठ्यक्रम गतिविधियों के स्थानों को भी रूपांतरित किया जाता है तभी बच्चे भाग ले सकें और किसी को यह महसूस न हो कि वे किसी स्थिति में प्रतिभागिता लेने में असमर्थ हैं। नीचे तालिका में स्पष्ट अंतर दिया गया है :

तालिका-एकीकृत व समावेशी शिक्षा में अंतर

एकीकृत शिक्षा	समावेशी शिक्षा
विकलांग बच्चों को नियमित स्कूलों में स्थान देना	विकलांग बच्चों के साथ अन्य बच्चों को जिन्हें शिक्षा पाने में खतरा है, पड़ोस के स्कूल में स्थान देना।
विकलांगों का पृथक्करण नहीं	विकलांग बच्चों, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व भाषा के आधार पर वंचित बच्चों का पृथक्करण नहीं।
बच्चों को मौजूदा शिक्षा व्यवस्था के लिए तैयार करना	शिक्षा व्यवस्था में वांछनीय रूपांतरण ताकि वे बच्चों की आवश्यकताओं के अनुकूल बनें।
अतिरिक्त सहायता के लिए बच्चे को संदर्भ कक्ष में भेजना	बच्चे की ज़रूरत की सारी सहायता नियमित कक्षा में बच्चे को मिलेगी।
बच्चों की अक्षमताओं को उजागर करना	बच्चों को कभी महसूस न होने देना कि वे अक्षम हैं। सभी पाठ्यक्रम व गैर-पाठ्यक्रम क्रियाएं विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप बदलना

'विविधता में एकता' हमारे समाज का अनोखापन है। किसी देश की शिक्षा व्यवस्था उसकी सामाजिक व्यवस्था के अनुरूप होती है। पिछले कुछ वर्षों में विकास और प्रगति की प्रक्रिया में विविधता एकता से अधिक नज़र आई।

जातियों के पदानुक्रम, आर्थिक स्थिति, लिंग संबंधों, असमान शहरी विस्तार ने सभी के लिए शिक्षा मिलने में एक कृत्रिम बाधा खड़ी की हुई है। अब राष्ट्रीय और अंत:राष्ट्रीय एजेंसियां शिक्षा को समावेशी शिक्षा द्वारा समाज के कमजोर वर्ग तक पहुंचाने के लिए वचनबद्ध है। बढ़ती हुई विविधता के बावजूद हमें कक्षा से ही एकता को साबित करना है।

टिप्पणी

प्रगति जाँच-1

1. समावेशी शिक्षा किसे कहते हैं।

.....

.....

.....

2. एक समावेशी कक्षा में शिक्षक के लिए दो 'ध्यान केंद्र करने के क्षेत्र' लिखें।

.....

.....

.....

3. समावेशी शिक्षा के दो लाभों की सूची बनाएं।

.....

.....

.....

4. एकीकृत और समावेशी शिक्षा के बीच दो अंतर लिखें।

.....

.....

.....

7.3 समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक

जैसा कि आप सब जानते हैं, समावेशी शिक्षा एक वैश्विक प्रवृति हैं। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए लागू करने वाली एजेंसियों को बच्चों के अधिकारों को मानना पड़ेगा। स्कूलों को सभी समुदाय के बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार, उनकी क्षमताओं की परवाह किए बिना शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। यह विचार सरल लगता है परंतु इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कई बाधाएं हैं। समावेशी शिक्षा की दृष्टि को पूरा करने के लिए रास्ते में कई परेशानियां आती हैं, जिन पर इस खंड में चर्चा की गई है।

टिप्पणी

7.3.1 शिक्षार्थियों में विविधता

एक ही आयु के एक बच्चों के समूह में भी बहुत विविधता है। बच्चे अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रेरणा, सीखने की क्षमता, व्यक्तिगत गुण जो पढ़ाई में सफलता, अभिवृत्तियां, रूचियां और प्रतिबद्धताओं आदि में एक दूसरे से भिन्न हैं। इस व्यापक विविधता को एक समूह में पढ़ाना एक मुश्किल काम है।

7.3.2 शिक्षकों की तैयारी

प्रत्येक शिक्षक में बच्चे की आवश्यकता को पहचानने का कौशल होना चाहिए। परंतु शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम इस मुद्दे पर कभी बात नहीं करते। कक्षा में दैनिक रूप में विविधता का ध्यान रखने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हमारे देश में इस आवश्यकता पर ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए यह समावेशी शिक्षा के लिए खतरा हो सकती है।

7.3.3 भौतिक सुविधाएं

समावेशी शिक्षा के लिए कक्षा का स्थान, जगह और व्यवस्था एक अनिवार्य कारक है। कई स्कूलों में अधिगम के लिए उपयुक्त मूल सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। शोर शराबे से दूर जगह, कमरों में उचित हवा का आवागमन, कक्षा के अंदर व बाहर स्वतंत्र गति करने की जगह, खेलने के लिए मैदान, अन्य पाठ्येत्तर क्रियाओं का प्रावधान समावेशी शिक्षा का समर्थन करने के लिए अनिवार्य हैं।

7.3.4 संसाधनों की उपलब्धि

हमारे स्कूलों में अभी तक बच्चों की अधिगम क्रिया का समर्थन करने हेतु संसाधनों की उपलब्धि के बारे में सोचा नहीं गया है। शिक्षक विभिन्न-विभिन्न अधिगम सामग्रियों को प्रयोग करने में कुशल नहीं हैं। उन्हें कक्षा में उपयुक्त सामग्री के अभाव में विविध अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति करने में कठिनाई होती है।

कुछ वर्ग के बच्चों को संभालने के लिए पेशेवरों की आवश्यकता होती है। क्लीनिकल मनोवैज्ञानिक, समाजसेवक, ऑडियोलोजिस्ट, बोलने में मदद करने वाले भाषा पैथोलोजिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट, ओक्यूपेशनल थेरापिस्ट आदि कुछ बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया में मदद करने के लिए ज़रूरी होते हैं। परंतु हमारे पास इस क्षेत्र में काम करने वाले लोग सीमित संख्या में हैं। स्कूलों में विशेषज्ञों के आने की संभावना विशेषकर गांवों में बहुत कम है।

''अकेले हम बहुत कम करते हैं, इकट्ठे बहुत कुछ करते हैं'' —हेलन कैलर

7.3.5 मूल्यांकन व्यवस्था

हमारी परीक्षा व्यवस्था में इतनी कठोरता है कि बच्चे का आकलन गलत हो जाता है। विविध शिक्षार्थियों के लिए विविध मूल्यांकन व्यवस्था की जरूरत है। यदि बच्चा लिख नहीं सकता तो

टिप्पणी

उसकी बाकी सभी क्षमताएं छिपी रह जाएंगी। यदि बच्चे को पढ़ने, लिखने के अतिरिक्त कोई और मूल्यांकन के तरीके की ज़रूरत है तो वह हमारे पास है ही नहीं। हम बच्चों को कोई और विकल्प नहीं देते हैं। इससे बच्चा हताश हो जाता है व शिक्षा प्रणाली से बाहर निकल आता है जो कि समावेशी शिक्षा के लिए बड़ा धक्का है।

हर कोई प्रतिभाशाली है। परंतु यदि एक मछली की पेड़ पर चढ़ने की क्षमता का मूल्यांकन होगा तो वह पूरा जीवन यह मानती रहेगी कि वह बुद्धू है। —एल्बर्ट आइंसटाइन

प्रगति जाँच-2

1. समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले चार कारकों की सूची बनाओ।

.....

.....

.....

7.4 समावेशी शिक्षा का निर्माण

ऊपर के खंड में हमने देखा शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिवादियों के भले सपने को पूरा करने में कौन-कौन सी बाधाएं हैं। केंद्रीय और राज्य सरकारों की योजनाएं कुछ भी हों, समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कक्षा में कार्य शिक्षक को ही करना होगा। तो आइए कक्षा में प्रभावी होने के लिए अपनी भूमिका को स्पष्ट रूप से समझें। एक शिक्षक के नाते समावेशी कक्षा के निर्माण में शिक्षक क्या कर सकते हैं?

7.4.1 अधिगम सामग्री का उपयोग

कक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षक को अधिगम का समर्थन करने के लिए सामग्री की आवश्यकता होती है। यदि विविध अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाए तो कोई भी बच्चा अधिगम प्रक्रिया में पूरी तरह भाग लेना।

जहां उपयुक्त हो अधिगम के समर्थन के लिए दृश्य सामग्री जैसे चित्र, फोटोग्राफ आदि का प्रयोग करना चाहिए। एक 'समुद्री घोड़े' या 'ताजमहल' का चित्र बच्चे को शब्दों से कहीं अधिक जानकारी देगा। महान व्यक्तियों के चित्र, कम गिनती में रह गए जानवरों व पौधों के चित्र, ऐतिहासिक स्थानों को फोटोग्राफ और घटनाएं चित्रों के रूप में, सब बच्चों की कल्पना सही दिशा में ले जाने में मदद करती हैं।

स्पर्शसंबंधी सामग्री जैसे असली वस्तुएं, या उनके मॉडल संकल्पनाओं को स्पष्ट करती हैं। प्रिज्म की संरचना समझाने के लिए कितने ही भाषण दे दो या चित्र दिखा दो, असली प्रिज्म या उसके मॉडल से प्रभावी कुछ नहीं है। आंतरिक अंगों, तीन आयामी ज्यामितीय आंकड़े आदि मॉडलों द्वारा अधिक अच्छी तरह समझ आते हैं। स्पर्षसंबंधी सामग्री जैसे गुड़हल का फूल आदि यदि

उपलब्ध हों तो फूल की संरचना सिखाना आसान है, आम का वास्तविक नमूना आम पढ़ाने के लिए सबसे उत्तम है।

हमारे आसपास का पर्यावरण अधिगम सामग्री से भरपूर है। संकल्पनाएं जैसे शाक, झाड़ियां, पेड़, लताएं आदि आसपास के पौधों से आसानी से समझाई जा सकती हैं। पोस्ट ऑफिस, बैंक या क्लीनिक में बच्चों को ले जाकर वहां कार्य कर रहे लोगों के बारे में पढ़ाया जा सकता है।

आसपास में उपलब्ध आसानी से मिलने वाली चीजों से कक्षा में प्रयोग का प्रदर्शन बच्चों को सिखाने का एक और तरीका है। एक पारदर्शक पॉलीथीन का लिफाफा और एक धागा पत्तियों से वाष्पोत्सर्जन की क्रिया का प्रदर्शन करने के लिए पर्याप्त है। ज्यामितीय चित्रों के क्षेत्रफल के सूत्र निकालने, प्रमेय की व्युत्पत्ति आदि के लिए व्यर्थ पड़े कार्ड प्रयोग हो सकते हैं।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी वैद्युत अधिगम सामग्री को प्रयोग करने के असीमित विकल्प देता है। यदि हम कम्प्यूटर का प्रयोग जानते हैं तो हम कक्षा में वास्तविक वस्तुओं को लाने की पूर्ति कर सकते हैं। सभी स्कूलों में प्रिज्म हो, ऐसा ज़रूरी नहीं। परंतु हम उसकी तीन आयामी तस्वीर, हर तरफ से घूमती हुई बच्चों को दिखा सकते हैं। शरीर के अंदर पाचन की जटिल क्रिया को कम्प्यूटर मल्टीमीडिया द्वारा आसानी से दिखाया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के रासायनिक बंध ों में इलेक्ट्रानों की प्रतिभागित को श्रव्य, दश्य और प्रिंट माध्यम का प्रयोग करते हुए कम्प्यूटर की सहायता से समझाया जा सकता है।

शिक्षक द्वारा बनाए गई कम लागत की अधिगम सामग्री शिक्षण में प्रयोग करने के लिए सबसे उत्तम है। यह और कुछ नहीं व्यर्थ व आसानी से उपलब्ध कच्ची सामग्री को अपने पर्यावरण लेकर उसका अधिगम सामग्री बनाकर प्रयोग करना है। हमारे आसपास प्रत्येक वस्तु उपयोगी है। क्रियाकलापों में बच्चों की खुशी से प्रतिभागिता शिक्षक को प्रत्येक वस्तु को सृजनात्मक तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करती है। रंगबिरंगे शादी के कार्डो से घरों के मॉडल बन सकते हैं। पेड़ों के बीजों को हम 2+2=4 सिखाने में प्रयोग कर सकते हैं। एक साटन का रिब्बन व्यर्थ पड़ा हुआ, भारत के नक्शे में राज्यों की सीमाएं दिखा सकता है। पुरानी पुस्तिकाएं अधिगम सामग्री निर्माण के लिए सोने की खाने हैं। इस सूची का कोई अंत नहीं है। आओ प्रारंभ करें और स्वयं अंतर को देखें।

अधिगम सामग्री की विविधता का बच्चों की कक्षा में प्रतिभागिता में सक्रिय भूमिका है। यह कक्षा से बोरियत को दूर करता है। बच्चे रोज स्कूल जाने का इंतजार करते हैं।

7.4.2 भौतिक वातावरण का रूपांतरण

जिस जगह में हम रहते हैं उसे हर लिहाज से उपयुक्त होना चाहिए। यदि बच्चे को कक्षा में एक स्थान से दूसरे स्थान तक गति करने में तकलीफ होती है तो उसकी जगह में उसके अनुकूल बदलाव कर देना चाहिए। यदि बच्चा सीढ़ियां नहीं चढ़ सकता तो कक्षा को नीचे कर देना चाहिए। यदि बच्चे को कक्षा तक पहुंचने में बहुत समय लगता है तो कक्षा-कक्ष मेन गेट के पास वाला ले लेना चाहिए। कक्षा के अंदर जगह ध्यान देने योग्य एक और बात है। फर्नीचर की व्यवस्था ऐसी हो कि बच्चों को गति करने में बाधा न हो। बैठने की व्यवस्था बच्चों के

टिप्पणी

अनुकूल होनी चाहिए। श्रव्य संबंधी कमज़ोरी वाले बच्चे को अगली सीट पर बैठाना चाहिए। जिस बच्चे को शिक्षक का अधिक ध्यान चाहिए वह शिक्षक की पहुंच के भीतर होना चाहिए। जिस बच्चे को तेज रोशनी की समस्या है, उसके चेहरे पर सीधा प्रकाश नहीं पड़ना चाहिए।

कक्षा के अंदर व बाहर शोर के स्रोतों का नियंत्रित करना होगा। जिस बच्चे का ध्यान आसानी से विचलित हो जाता है उसे दरवाजे, खिड़की या बरामदे से दूर बैठाना चाहिए। फर्नीचर के नीचे रबड़ लगे होने चाहिए ताकि वे हिलाने पर आवाज न करें। जहां तक संभव हो प्राकृतिक प्रकाश व हवा का प्रयोग करना चाहिए। कुछ बच्चों को पंखे व प्रकाश विचलित करते हैं। चार्ट का फड़फड़ाना भी आवाज करता है। उन्हें सही तरह दीवार पर चिपकाना चाहिए।

सबसे महत्त्वपूर्ण है वातावरण को स्वच्छ व व्यवस्थित रखना। शिक्षक के रूप में इसमें हमारी भूमिका ज़रूरी है। बच्चों को बारी-बारी से यह जिम्मेदारी देनी चाहिए। कक्षा में चार्ट व अन्य सजावट की चीजों को सुंदर ढंग से लगाना चाहिए। कक्षा में स्वच्छता व अच्छी व्यवस्था अधिगम में बच्चों की सहायता करती है।

7.4.3 सरल प्रबंधन तकनीकों को अपनाना

जब विविध आवश्यकताओं वाले बच्चे एक कक्षा में होते हैं तो हमें चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि हम चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं तो हम परिस्थितियों की आवश्यकता के अनुसार तकनीकों का प्रयोग कर सकेंगे। हमारी तैयारी कक्षा में दैनिक व्यवहार में सारा अंतर लेकर आता है।

सूरज अपनी शरारतों के लिए जाना जाता है। वह आसपास बैठे बच्चों के परेशान करने में आनंद लेता है। यदि हम उसके प्रति संवेदनशील हैं तो बच्चे पर एक नजर जो कहें 'मैं तुम्हें देख रही हूं', उसे सचेत कर देखी। स्वाथी बहुत डरपोक है व किसी से शिकायत नहीं करती। प्रिया को उसके बाल खींचने में मज़ा आता है। प्रिया और स्वाथी का स्थान बदलने से प्रिया का यह व्यवहार रुक जाएगा। दोनों स्थितियों में लंबे भाषणों से बच्चों को कोई संदेश नहीं मिलता। अनिल शिक्षक व मित्रों का ध्यान आकर्षित करने के लिए आवाजें निकालता है। यदि अनिल के कक्षा में उत्तर व उसके प्रोजेक्ट आदि की प्रशंसा की जाए तो वह अवाजें निकालना बंद कर देगा। शुभा को गणित की कक्षा में समस्या सुलझाने में दिक्कत आती है। जब कक्षा के अन्य बच्चे अपने कार्य में व्यस्त हों, शिक्षक शुभा के पास बैठकर उसे समस्या सुलझाने में सहायता कर सकती है। रामिया को लिखना मुश्किल लगता है इसलिए वह ब्लैकबोर्ड से नकल करने में कतराती है। शिक्षिका उसके पास जाकर उसे लिखने के लिए प्रेरित कर सकती है। संतोष पढ़ने में दिक्कत महसूस करता है और कई गलतियां करता है। सारी क्लास उस पर हंसती है और उसे बेइज्जती महसूस होती है। शिक्षिका उसे कोई और कार्य दे सकती है जो वह बखूबी कर सकता है। उस कार्य के लिए की गई प्रशंसा उसका आत्मविश्वास बढ़ाएगी।

कक्षा का प्रबंधन हमारे अनुभवों से और निखरता है। बहुत कम समय और प्रयास में दैनिक समस्याएं आसानी से हल हो सकती हैं। केवल बच्चों से प्यार व उनमें विश्वास की आवश्यकता है।

7.4.4 बच्चों के अनुरूप मूल्यांकन व्यवस्था अपनाना

समावेशी कक्षा में कठोर मूल्यांकन व्यवस्था कार्य नहीं करती। मूल्यांकन को उन चीजों का आंकलन करना चाहिए जो बच्चा कर सकता है न कि उनका जो बच्चा नहीं कर सकता। हमें देखना होगा कि कक्षा में हर बच्चे के अनुकूल मूल्यांकन हम कैसे कर सकते हैं।

श्रुथि कक्षा 4 में पढ़ती है। वह कक्षा में पाठ को समझ सकती है। परंतु जब शिक्षिका मौखिक प्रश्न पूछती है, वह जवाब नहीं दे पाती। उसकी समस्या या तो भाषा अभिव्यक्ति है या वह शिक्षिका के सामने बोलने में शर्माती है। हमारा ध्यान अधिगम स्तर को जांचना है न कि उसकी अभिव्यक्ति को। ऐसी परिस्थिति में एक शिक्षक होने के नाते हम कौन सा विकल्प चुने जो उसके अधिगम का सबसे अच्छी तरह आंकलन कर सके। हम बच्चे से उत्तर लेने के ढंग में परिवर्तन कर सकते हैं। मौखिक उत्तर के स्थान पर कम्प्यूटर द्वारा, चित्र द्वारा या लिखित रूप में उसकी क्षमता का पता लगाया जा सकता है।

कोई ऐसा बच्चा हो सकता है जो दृष्टि में कमज़ोर हो और लिखित सामग्री न पढ़ पा रहा हो। यहां शिक्षक को मूल्यांकन के लिए बड़े अक्षरों में लिखी सामग्री या ब्रेल का प्रयोग करना होगा।

13 वर्ष का विक्रम कक्षा 7 में पढ़ता है। उसकी अमूर्त संकल्पनाओं को समझने की क्षमता उसकी उम्र के बच्चों से कम है। परंतु वह सरल प्रश्नों के उत्तर देता है। इस बच्चे को शिक्षक किस प्रकार मूल्यांकित करे? यहां बेहतर विकल्प है कि बच्चे की अक्षमता को भूलकर जो उसे आता हो उसका आंकलन करें।

कुछ बच्चे कोई भी मूल शैक्षिक कौशल सीखने की क्षमता नहीं रखते। परंतु उनकी किसी और क्षेत्र में प्रतिभा होगी। यहां शिक्षक को बच्चे का आंकलन करने के लिए क्षतिपूर्ति तकनीक का प्रयोग करना होगा। बच्चे की स्वयं देख-रेख व व्यवसायिक कौशलों का आंकलन कर लेना चाहिए।

यदि हमें बच्चे को हमारी बच्चे की समझ के अनुसार मूल्यांकन करने की छूट मिल जाए तो स्कूल एक बहुत सुंदर स्थान बन जाएगा। बच्चे को परीक्षा व टैस्ट का भय परेशान करना बंद कर देगा।

प्रगति जाँच-3

1. वे चार तरीके कौन से है जिनके द्वारा मूल्यांकन की कठोरता की समस्या हल हो सकती है?

.....

.....

.....

टिप्पणी

7.5 शिक्षा व्यवस्था से बाहर होने के जोखिम वाले बच्चे

लाखों बच्चे व युवा शिक्षा का अधिकार पाने से वंचित रह जाते हैं और उन्हें उपयुक्त वातावरण में पर्याप्त शिक्षा नहीं मिलती। स्कूल से बाहर ये बच्चे अधिकतर वे हैं जिन्हें उनके अनुकूल स्कूल का वातावरण नहीं मिला। या तो उन्हें पड़ोस के स्कूल में दाखिला नहीं मिलता, या अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण स्कूल से दूर रहने के लिए मज़बूर किया जाता है। आइए देखें कि वे कौन से प्रमुख समूह हैं जो स्कूल से बाहर होने के जोखिम में हैं।

7.5.1 विकलांग बच्चे

शैक्षिक कौशल सीखने में समस्या के कारण विकलांग बच्चे स्कूल छोड़ने के जोखिम में हैं। विकलांगता के प्रकार के आधार पर बच्चे स्कूल में समस्याएं महसूस करते हैं। हम संक्षेप में इन विकलांगताओं के प्रकार देखते हैं जो सीखने में बाधक हैं।

(a) **संकल्पनात्मक/अधिगम संबंधी विकलांगता वाले बच्चे**–विभिन्न स्तर पर मानसिक रूप से मंद बच्चों को सीमित संकल्पनात्मक अधिगम क्षमता के कारण कक्षा में न्यूनतम स्तर तक सीखने में समस्या होती है। विशेष अधिगम विकलांगता वाले बच्चे मूल शैक्षिक कौशल जैसे पढ़ना, लिखना व गणित अर्जित करने में दिक्कत महसूस करते हैं। इनमें से कई बच्चों की समस्या शिक्षक पहचान नहीं पाते।

(b) **सामाजिक, भावनात्मक व व्यवहारगत विकलांगता वाले बच्चे**–कुछ ऐसी विकलांगताएं हैं जिनके कारण बच्चे कक्षा के कार्य नहीं कर पाते। ये उनके सामाजिक कौशलों में कमी, भावनात्मक गड़बड़ियां या व्यवहारिक समस्याओं के कारण हो सकता है। शिक्षक ऐसे बच्चों को गलत समझते हैं क्योंकि वे इस प्रकार की परिस्थितियों से अवगत नहीं हैं।

(c) **भाषा और संप्रेषण की समस्या**–कई बच्चे बाहर से तो अपनी उम्र के बच्चों की ही तरह दिखाई देते हैं। परंतु उन्हें समझने में और/या उपयुक्त भाषा के माध्यम से व्यक्त करने में समस्या है। ऐसे बच्चे शैक्षिक व गैरशैक्षिक, दोनों प्रकार की गतिविधियों में समस्या महसूस करते हैं।

(d) **संवेदी हानि**–स्कूलों में ऐसे भी बच्चे होते हैं जिन्हें सुनने या देखने की समस्या होती है। यह समस्या थोड़ी या कभी बहुत गंभीर भी हो सकती है। आंशिक रूप से दिखना और सुनने के शैक्षणिक प्रभाव बहुत हैं।

(e) **भौतिक विचलन**–स्कूल जाने की उम्र के बच्चों में गति में परेशानी या तो बड़ी पेशियों के कारण या छोटी पेशियों के कारण है। ये हड्डियों, तंत्रिकाओं या मांसपेशियों से संबंधित हो सकती है जिस कारण शरीर के विभिन्न अंगों में समन्वय नहीं होता। इससे स्कूल में छोटी से लेकर बड़ी समस्याएं हो सकती है।

(f) **स्वास्थ्य समस्याएं**–बच्चों की कई स्वास्थ्य समस्याएं हैं जो उन्हें लंबी अवधि तक स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। यह एक कारण होता है कि बच्चे शिक्षा बीच में छोड़

देते हैं। कई ऐसी परिस्थितियां हैं जो बीमारी के कारण होती हैं और उनके शैक्षणिक परिणाम गंभीर होते हैं। बच्चों में मधुमेह, गठिया, मिरगी, कुपोषण जिससे सामान्य कमजोरी आती हैं, कुछ आमतौर दिखाई दी गई परिस्थितियां हैं।

विकलांगता के कारण ऊपर दिए गए वर्ग जिससे स्कूल जाना मुश्किल है या सीखना मुश्किल है, बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में मुश्किलें पैदा करती हैं। शिक्षक होने के नाते हमें छोटे से छोटे व्यवहारिक परिवर्तन को महसूस करना है। इस खंड की अन्य इकाईयां इनमें से प्रत्येक परिस्थिति को विस्तार से लेकर कक्षा में उनका प्रबंधन करने पर बात करेंगी। यदि हालात आपके काबू से बाहर हो तो बिना समय गंवाए उन्हें पेशेवरों के पास भेज दें।

7.5.2 वंचित वातावरण से आए बच्चे

यह एक माना हुआ तथ्य है कि रहने के वातावरण में अभाव का संकल्पना-निर्माण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यह स्वभाविक है कि गरीब परिवारों से, दिहाड़ी पर काम करने वालों के, झुग्गी-झोंपड़ी वाले व बेघर परिवारों के बच्चे अपने आर्थिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक वातावरण में समस्याओं का सामना करते हैं।

7.5.3 बालिकाएं

शारीरिक, सामाजिक व सांस्कृतिक कारणों से बालिकाएं हानि में रहती हैं। विशेषकर गांवों में व संयुक्त परिवारों में लड़कियों के साथ अलग ही व्यवहार होता है। उनकी भूमिकाएं परिवारों द्वारा निर्धारित की जाती हैं और उनकी आवश्यकताओं को अनदेखा कर दिया जाता है। जो प्रोत्साहन उन्हें बचपन में शिक्षा पाने के लिए आवश्यक होता है, वह कई परिवारों में बिल्कुल नहीं मिलता। इसलिए स्कूल छोड़ने में उनका सबसे अधिक खतरा होता है। बलिकाओं की समस्याएं और उन्हें निपटने के तरीके इस पाठ्यक्रम के कोर्स 4 की अन्य इकाइयां में दिए गए हैं।

7.5.4 बच्चे जो प्रतिभाशाली और सृजनात्मक हैं

बच्चों की कभी-कभी कुछ क्षेत्रों जैसे खेल, संगीत, नृत्य व कला में विशेष प्रतिभा होती है। यह विशेष क्षमता शैक्षिक विषयों जैसे विज्ञान, गणित या भाषा में भी हो सकती है। ऐसे बच्चे कक्षा में बोर हो जाते हैं क्योंकि हमारी शिक्षा व्यवस्था इन प्रतिभाओं को निखारने के लिए कोई सहायता नहीं करती। उनके अनोखे विचारों से भिन्न सोच के तरीकों के कारण कई बार कक्षा में उन्हें समस्या पैदा करने वाले बच्चों का लेबल लगा दिया जाता है। इन बच्चों के लिए एक नियमित कक्षा हमेशा बोरिंग होगी। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था केवल बच्चों की रेखिक वृद्धि से संबंधित है जिसका ध्यान केवल शैक्षिक उपलब्धियों पर केंद्रित है। यह प्रतिभाशाली व सृजनात्मक बच्चों को स्कूल क्रियाकलापों में हानि पहुंचाती है। इनका स्कूल से बाहर होने का डर बना रहता है।

टिप्पणी

7.5.5 अन्य-कम उपलब्धि वाले, अल्पसंख्यक समुदाय, भौगोलिक बाधाओं वाले बच्चे

कम उपलब्धि वाले एक और समूह है जो अपनी पूरी क्षमता का प्रयोग नहीं कर पाते। आसपास में ध्यान बंटने से कुछ बच्चों की क्षमता पूर्णत: विकसित नहीं हो पाती।

यह टी.वी., कम्प्यूटर, समाज में किसी अन्य आनंद देने वाली परिस्थिति की आसान पहुंच आदि हो सकते हैं। कुछ कर दिखाने के लिए दबाव, स्कूल, माता-पिता व स्वयं द्वारा उच्च अपेक्षाएं, कठोर व नीरस विद्यालय के क्रियाकलाप आदि उपलब्धि स्तर में गिरावट के कारण हो सकते हैं।

कुछ समुदाय अपने अनोखे शारीरिक, भाषा-संबंधी, सांस्कृतिक गुणों के कारण समाज में सामूहिक तौर पर भेदभाव के शिकार बनते हैं। उन्हें अल्प-संख्यक कहा जाता है। ऐसे समूह का भाग होने के कारण उन्हें समाज में पूर्ण प्रतिभागिता का अवसर नहीं मिलता। यह हानि और भी बढ़ जाती है यदि दूसरे जोखिम के कारक जैसे गरीबी, विकलांगता आदि भी साथ हों।

कभी-कभी भौगोलिक स्थिति भी बच्चों को उपयुक्त वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने में बाधा डालती है। पहाड़ी क्षेत्र, दूर-दराज के क्षेत्र, क्षेत्र जहां पर उचित परिवहन व्यवस्था नहीं है आदि युवा पीढ़ी को स्कूल तक आने से रोकती है।

प्रगति जाँच-4

1. कक्षा में पाई जाने वाली दो संवेदी हानियां कौन-कौन सी हैं?

   .....

   .....

   .....

2. ऐसी दो शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएं बताओ जो प्रारंभिक स्कूल की उम्र में होती हैं।

   .....

   .....

   .....

3. प्रारंभिक स्तर पर बच्चों में कम उपलब्धि के दो संभव कारण क्या हो सकते हैं?

   .....

   .....

   .....

7.6 सारांश

प्रत्येक बच्चे के उत्कृष्ठ विकास के लिए उन्हें बराबर अवसर देना देश की प्रतिबद्धता है। इस दृष्टि को लागू करने के लिए 'समावेशी शिक्षा' एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उजागर हुआ है। सभी नई शैक्षिक योजनाएं व पॉलिसियां ऐसी शिक्षा व्यवस्था के समर्थन में खड़ी है जिसमें शिक्षा के लिए किसी भी बच्चे को 'ना' कहने पर रोक है। समावेशन बच्चों में आंतरिक शक्ति व आत्मविश्वास बढ़ाने के बारे में है। बाहरी कारकों द्वारा लगाई बाधाओं की परवाह किए बिना यह अंतर का मान समझता है। शिक्षक को स्कूल में विविधता की ओर ध्यान देकर इसका अभ्यास करना है। 'एकीकरण' शब्द का प्रयोग विकलांग बच्चों की सभी बच्चों के लिए बनाए शैक्षिक कार्यक्रम में प्रतिभागिता के लिए किया गया। इसमें कोई शक नहीं है कि एकीकरण ने समावेशन की नींव रखी। समावेशन व्यवस्था में परिवर्तन पर बल देता है न कि बच्चे पर। बच्चों में विविधता, शिक्षक की तैयारी, अपर्याप्त भौतिक सुविधाएं, संसाधनों का अभाव, कठोर मूल्यांकन व्यवस्था आदि मुख्य कारक हैं जो समावेशी शिक्षा में बाधक हैं। शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के लिए मुख्य भूमिका निभाने के लिए तैयार होना होगा। विकलांग बच्चे, प्रतिभाशाली व सृजनात्मक बच्चे, अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चे, और आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चे स्कूलों में समस्याओं का सामना करते हैं। कक्षा में सरल प्रबंधन तकनीकों व उपयुक्त सामग्री के प्रयोग से उनकी अधिगम आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी।

7.7 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

1. समावेशी शिक्षा सब बच्चों को जो शैक्षिक व्यवस्था में नजरअंदाज होने के खतरे में हैं, शिक्षा देने का उपागम है।
2. हर बच्चे को समूह के सदस्य के रूप में स्वीकार करो, सभी की प्रतिभागिता सुनिश्चित करो, कक्षा के सांस्कृतिक वातावरण का पुनर्गठन करो।
3. विद्यालय का वातावरण सब बच्चों को लाभ देने के लिए बेहतर बन सकता है। यह अभ्यास समाज में प्रचलित भेदभाव को रोकने में सहायता कर सकता है।
4. एकीकृत शिक्षा में बच्चे को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के अनुरूप तैयार करना होता है, और अतिरिक्त समर्थन के लिए उन्हें संसाधन कक्ष में रखा जाता है। समावेशी शिक्षा में शिक्षण व्यवस्था को बच्चों की आवश्यकतों के अनुरूप बदलना पड़ता है और सभी आवश्यक समर्थन कक्षा में प्रदान किया जाता है।

प्रगति जाँच-2

1. शिक्षार्थियों में विविधता, अधिगम संसाधनों की उपलब्धि, शिक्षक की तैयारी और कठोर मूल्यांकन व्यवस्था

टिप्पणी

प्रगति जाँच-3

1. रूपांतरण, विस्थापन, निकाल देना (छोड़ देना), क्षतिपूर्ति

प्रगति जाँच-4

1. श्रव्य व दृश्य कठिनाइयां
2. बाल मधुमेह, गठिया, मिरगी, कुपोषण जिससे सामान्य कमज़ोरी आती है।

7.8 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. जुल्का, ए. (2006) ''इनक्लूडिंग चिल्ड्रन एंड यूथ विद डिसेबिलिटीज़ इन ऐजूकेशन–ए गाइड फॉर प्रेक्टिशनर्स'', एनसीइआरटी, नई दिल्ली।
2. राइट टू एजूकेशन बिल (2005 ड्राफ्ट, 2009 में लागू) ऑनलाइन उपलब्ध
3. इंटरनेट सोर्स, एसएसए (2002), 'बेसिक फीचर्स ऑफ एसएसए', इनक्लूसिव ऐजूकेशन इन एसएसए, www.sss.nic.in/inclusive education/sss plan manual से निकाला गया, ऑनलाइन उपलब्ध।
4. मनी, एमएनजी (2000) 'इनक्लूसिव ऐजूकेशन इन इंडियन कन्टेक्सट', 'इंटरनेशनल ह्यूमन रिसोर्स डेवेलपमेंट सेंटर (IHRDC) फार द डिसेबल्ड, कोएबंटूर, रामाकृष्णा मिशन, विवेकानंद यूर्निवसिटी।
5. स्वरूप, एस (2007) 'इनक्लूसिव ऐजूकेशन' सिक्स्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च 1993, नई दिल्ली 2000, एनसीईआरटी
6. हलाहन, डी.पी., कॉफमा, जेएम, पुलेन, पी.सी. (2009) एक्सेप्शनललर्नरस: एन इंट्रोडक्शन टू ऐजूकेशन (11वां संस्करण), यू.एस.ए., एलिन एंड बेकन, पियरसन ऐजूकेशन, इंक।
7. एलर, एम एंड बैच, एम (2005) ''इनक्लूसिव ऐजूकेशन–फ्राम रिटोरिक टू रिएलिटी, द नार्थ, साउथ डाएलॉग II" वीवा बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
8. हवांग, वाई एस एंड ईवानस, डी (2011) ''ऐटीच्यूड टूवार्डस इनक्लूसिव एजूकेशन: गैप्स बिटवीन बिलीफ एंड प्रेक्टिस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पैशल एजूकेशन, वोल्यूम 26, न.1

कल्याणपुर, एम (2007) ''इक्वालिटी, क्वालिटी एंड क्वांटिटी : चैलेंजेस इन इनक्लूसिव ऐजूकेशन पालिसी एंड सर्विस प्रोवीजन इन इंडिया ''इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्पैशल एजूकेशन, 2007, वोल्यूम 20, न.1

टिप्पणी

7.9 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. समावेशी शिक्षा क्या है?
2. समावेशी शिक्षा का क्या महत्त्व है?
3. समावेशी शिक्षा एकीकृत शिक्षा से किस प्रकार भिन्न है?
4. अपने अनुभवों के आधार पर समावेशी शिक्षा को प्रभावित करने वाले दो कारकों पर चर्चा करो।
5. सभी बच्चों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिए कक्षा का भौतिक ढांचा किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है?
6. ''विकलांग बच्चों को शिक्षा से बाहर होने का खतरा है'', इस कथन पर चिंतन करें।
7. घर के वंचित वातावरण का बच्चे की 'गुणवत्ता शिक्षा' पाने पर क्या प्रभाव पड़ता है?

इकाई-8 विशेष आवश्यकता वाले (CWSN) की अवधारणा

टिप्पणी

संरचना

8.0 प्रस्तावना

8.1 अधिगम उद्देश्य

8.2 विशेष जरूरतों वाले बच्चों की समझ

- *8.2.1 संज्ञानात्मक आशक्तता*
- *8.2.2 श्रवण एवं वाचन दुर्बलता (बाधिता)*
- *8.2.3 वाचन दुर्बलता (वाचन बाधिता)*
- *8.2.4 दृष्टि बाधिता*
- *8.2.5 गति विषयक बाधिता*
- *8.2.6 बहु बाधिता*
- *8.2.7 अधिगम अशक्तता*
- *8.2.8 संवेदनात्मक एवं व्यवहारात्मक विकार*
- *8.2.9 'वेटिंग चिल्ड्रेन' की संकल्पना*

8.3 प्रारंभिक पहचान, मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप

- *8.3.1 अशक्तता की पहचान*
- *8.3.2 मूल्यांकन*
- *8.3.3 प्रारंभिक हस्तक्षेप*

8.4 विकलांगता कानून एवं नीतियाँ

- *8.4.1 अशक्तताओं वाले लोगों के अधिकार पर सम्मेलन*
- *8.4.2 अशक्तता वाले लोगों का कानून, 1995*

8.5 सारांश

8.6 प्रगति जाँच के उत्तर

8.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

8.0 प्रस्तावना

विशेष जरूरतों वाले बच्चे कौन हैं के बारे में आपने पूर्व की इकाई में पढ़ लिया है। इस इकाई में हमलोग इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे। बच्चे जिन्हें विशेष ध्यान और विशिष्ट जरूरतें

अपेक्षित हैं जिसकी अन्य बच्चों को जरूरत नहीं होती हैं ऐसे बच्चे विशेष जरूरत वाले बच्चे कहे जाते हैं। सभी कक्षाकक्षों में विभिन्न योग्यताओं वाले बच्चे होते हैं। कक्षाकक्षों में विविधता को पहचानना महत्त्वपूर्ण है। हममें से प्रतयेक ने अपने विद्यालय एवं कॉलेज के वर्षों के दौरान कुछ विशेष जरूरत को अनुभूत किया है।

विशेष जरूरत कुछ नहीं है बल्कि एक संकल्पना को समझने या एक गतिविधि (संगीत, कला) का निष्पादन करने के क्रम में अतिरिक्त सहायता की जरूरत है। कोई भी परिपूर्ण नहीं है, कोई समस्या चाहे सामाजिक, बौद्धिक, संवेदी, प्रेरक या लम्बे समय वाली बीमारी स्वयं को अधिगम में परेशानी के रूप में प्रकट करेगी। यह इकाई आपको विशेष जरूरतों वाले बच्चों से सम्बद्ध अर्थों, कारणों, प्रारंभिक हस्तक्षेप एवं पहचान तथा राष्ट्रीय नीतियों के बारे में बतायेगी।

8.1 अधिगम उद्‌देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप सक्षम होंगे :

- विशेष जरूरत वाले बच्चों (CWSN) का अर्थ वर्णित करने में।
- विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं (संज्ञानात्मक विकलांगता, श्रवण बाधिता, गति विकार, वाचन वाधिता, अधिगम कठिनाईयाँ एवं बहु विकलांगता) को पहचानने में।
- विकलांगता की प्रत्येक श्रेणी में प्रारंभिक पहचान, हस्तक्षेप एवं मूल्यांकन के लिए जरूरतों को तर्कसंगत ठहराने में।
- CWSN के मुद्‌दों को पहचानने एवं संबोधित करने में शिक्षकों की भूमिका का विश्लेषण करने में।
- प्रत्येक समूह की विकलांगताओं के लिए अधिगम अपेक्षाओं का सुझाव देने में।
- PWDACT 1995, UNCRPD में चर्चा किये गये मुख्य मुदों को चिह्नित करने में।
- CWSN के सन्दर्भ में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों की भूमिका का वर्णन करने में।

8.2 CWSN की समझ

क्या मेरे बच्चे की विशेष जरूरते हैं? एक प्रश्न है जिसे बड़े बच्चों के अधिकांश माता-पिता पूछते हैं। शीघ्र ही इससे जुडा अन्य मुख्य प्रश्न पूछा जाता है, विशेष जरूरत क्या है? 14 महीने का एक बच्चा अधिकांश अन्य बच्चों के समान अब तक नहीं चलता है। क्या इस बच्चे को विशेष जरूरत है? दूसरा बच्चा प्रत्येक चीज जो सुनता है उसे वापस दुहराता है यहाँ तक कि जो दूरदर्शन पर देखता है उसे भी। क्या उसे विशेष जरूरत है? और यदि एक बच्चे की एक या अधिक विशेष जरूरतें हैं तो ऐसा परिवार सेवाओं एवं समर्थन के लिए कहां जा सकते हैं जो उनकी सहायता कर सकें?

टिप्पणी

एक शिक्षक पहला व्यक्ति होगा जिनके पास दुखी माता-पिता जाते हैं। पहले शिक्षक ही जानता है कि कौन से बच्चे विशेष जरूरत वाले हैं। कोई बच्चा शारीरिक समस्याओं या शारीरिक या संवेदनात्मक तनावों से ग्रस्त है तो विशेष जरूरत वाले बच्चे के रूप में माना जा सकते हैं। देर से होने वाली, गतिविधियां जो नहीं की जा सकती, भोजन जो नहीं खाया जा सकता एवं प्रदत्त दैनिक कार्य जो हम ले सकते हैं, जो बिना सहायता के नहीं किये जा सकते हैं।

'विशेष जरूरत' बहुत सी परिभाषाओं वाला एक शब्द है, जिसका विस्तार मन्द अधिगम से गंभीर संज्ञानात्मक विकलांगता (मानसिक मन्दन), आवधिक बीमारी, भोजन एलर्जी या विकासात्मक देरी तक है। जब एक बच्चा सामान्य बच्चे की अपेक्षा सहायता चाहता है तो उसकी विभिन्न जरूरतें होती है जो उसे मिलती हैं एवं उन्हें प्राप्त करने को विभिन्न लक्ष्य होते हैं।

अशक्तता की परिभाषा–विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विकलांगता शब्द परेशानियों में परिवर्तित होना चाहिए–देखने, सुनने, सम्प्रेषित करने, घूमने, सीखने में परेशानी।

CWSN को समझने के क्रम में हमें विभिन्न विशेषणों या शब्दों को अवश्य जानना चाहिए जो अक्सर वर्णित होते हैं। बाधिता, अशक्तता और विकलांगता ऐसे शब्द है जो तीव्रता से एक दूसरे के बदले में प्रयुक्त होते हैं। जबकि इन शब्दों में अवधारणात्मक अन्तर है। बाधिता, अशक्तता और विकलांगता के अन्तर्राष्ट्रीय वर्गीकरण में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रत्येक शब्द की परिभाषाओं में उनके अन्तरों को स्पष्टता से चिह्नित किया है।

> बाधिता कोई संरचनात्मक क्षति है, अशक्तता कार्यात्मक अक्षमता है एवं विकलांगता एक व्यक्ति द्वारा अनुभूत किया गया एक सामाजिक असहायता है।

अब, हम अशक्तता के अर्थ, कारण एवं संभावित प्रभावों के बारे में चर्चा करते हैं।

8.2.1 संज्ञानात्मक अशक्तता

यह शब्द तब प्रयुक्त होता है जब एक व्यक्ति के मानसिक कार्यों को करने में या कौशलों जैसे बातचीत करने, स्वयं का देखभाल करने और सामाजिक कौशलों में निश्चित सीमायें होती हैं। ये सीमायें एक विशिष्ट बच्चे की अपेक्षा ऐसे बच्चों में बहुत धीरे-धीरे सीखने और विकसित होने का कारण होंगी। मानसिक मन्दन वाले बच्चे बोलने, चलने, और अपनी वैयक्ति जरूरतों का ध्यान रखने (जैसे–पहनना, खाना) में अधिक समय लेते हैं। उन्हें विद्यालय में सीखने में कठिनाई संभव है। वे सीखेंगे लेकिन उनमें अधिक समय लेंगे। हो सकता है वे कुछ चीजों को न सीख सकें।

एक मानसिक बाधित बच्चा वह है जिसमें औसत से कम सामान्य बौद्धिक क्षमता है तथा धीमा बौद्धिक विकास है। मन्दन की सीमा कम से गंभीर हो सकती है। यह विकासात्मक अवधि के दौरान जीवन में पहले ही आता है।

a. **अर्थ**–हाल में संज्ञानात्मक अशक्तता मानसिक मन्दन, मानसिक विकलांगता जैसे पुराने शब्दों को हटाने के लिए प्रयुक्त हुआ है। शब्दावली में परिवर्तन विकलांगता या अशक्तता जैसे शब्दों से सम्बद्ध कलंक या वर्गीकरण के प्रभाव को हटाने के लिए किया गया है।

एक मानसिक बाधित बच्चे का IQ औसत की अपेक्षा कम भी होता है। उनमें से कुछ एक सामान्य बच्चे की कक्षा में भी प्रशिक्षित हो सकता है तथा उसे स्वयं एवं राष्ट्र के लिए लाभप्रद बना सकता है। किन्तु अन्य इतने अधिक मानसिक क्षीण होते हैं कि वे किसी कार्य से प्रशिक्षित नहीं हो सकते हैं। इस प्रकार कुछ मानसिक क्षीण बच्चे 'शिक्षणीय' हैं जबकि गंभीर क्षीणता वाले अन्य केवल 'प्रशिक्षणीय' हैं।

मानसिक मन्दन को IQ पर निर्भर कर वर्गीकृत किया गया है :

संज्ञानात्मक अशक्तता (मानसिक मन्दन) का वर्गीकरण	
गंभीरता का स्तर	IQ की सीमा
कम मानसिक मन्दता	50–75
साधारण मानसिक मन्दता	35–49
गंभीर मानसिक मन्दता	20–34
गूढ़ मानसिक मन्दता	20 से कम

b. **कारण**–संज्ञानात्मक अशक्तता के कुछ महत्त्वपूर्ण एवं ज्ञात कारण हो सकते हैं :

   a. संक्रमण एवं उन्मादन (एक्स रूबेला, सिफलिस, इन्सेफलाइटिस, मेनिनजाइटिस के लिए)

   b. सदमा एवं शारीरिक कारक (एक्स दुर्घटना, जन्म के दौरान या बाद, एनोक्सिया के लिए)

   c. उपापचय एवं पोषण (Exphenly Ketoneuria)

   d. सकल मस्तिष्क रोग (जैसे ट्यूमर)

   e. पैतृक प्रभाव (for exhydrodphalus, micro cephalus)

   f. गुणसुत्रीय असमानता (जैसे डाउन सिन्ड्रोम)

   g. मनोविकार (आज तक एक कारण के रूप में बिरले ही देखा गया हो)

c. **कारक जो संज्ञानात्मक बाधिता के कारण प्रभावित होते हैं**–संज्ञानात्मक अशक्तता वाले बच्चों में स्मृति समस्यायें, जागरूकता समस्यायें, समस्या समाधान में परेशानी, भाषायी परेशानियाँ जो समझने में परेशानियाँ उत्पन्न करती हैं तथा लिखित या मौखिक भाषा की अभिव्यक्ति की समस्यायें हो सकती हैं।

संज्ञानात्मक बाधिता के प्रकार का बहुत विस्तार हो सकता है, गंभीर मंदता से याद करने में अक्षमता, विशिष्ट संज्ञानात्मक कार्यों (सबसे उपयुक्त भाषा) की बाधिता या अनुपस्थिति। इसलिए कार्यात्मक सीमाओं के प्रकार भी बहुत विस्तृत हो सकते हैं।

टिप्पणी

8.2.2 श्रवण एवं वाचन बाधिता

(a) **अर्थ**–श्रवण बाधिता का तात्पर्य है किसी प्रकार का श्रवण विकार जबकि बधिरता का तात्पर्य है कान के माध्यम से भाषायी वाचन में भेदभाव करने की अत्यन्त अक्षमता। श्रवण बाधित बच्चे वे हैं जो अपने श्रवण को भाषा के लिए प्रयुक्त नहीं कर सकते हैं। न्यूनतम श्रवण बाधिता वाले लोग ऊँचा सुनने वाले कहलाते हैं। सामान्यत: एक व्यक्ति बधिर माना जाता है जब आवाज का स्तर 90 डेसिबल (सामान्य आवाज की अपेक्षा 5 से 10 गुना अधिक) तक सुना जाता है एवं विस्तारित आवाज को नहीं समझा जा सकता है।

श्रवण बाधित संवेदी या संचालक हो सकता है। संवेदी श्रवण क्षति में केंद्रिय तंत्रिका तंत्र के अन्तर्गत श्रवण संबंधी रास्तों में क्षति शामिल होती है जो काकलिया एवं श्रवण तंत्रिका से शुरू होता हैं एवं मस्तिष्क कोशिका तथा प्रमस्तिष्कीय वल्कल (यह श्रवण संबंधी संकेत की व्याख्या को रोकता है) को शामिल करता है। संचालक श्रवण क्षति कान के बाह्य या मध्य की क्षति है जो ध्वनि तरंगों को काकलिया तक पहुँचने में बाधा पहुँचाता है।

(b) **कारण**–बधिरता के मुख्य कारण हैं–आनुवंशिक, दुर्घटना एवं बीमारी। बधिरता के सभी मामलों में लगभग 50% आनुवंशिक कारक है जो बधिरता के संभावित कारण है। पर्यावरणीय कारक (दुर्घटना, बीमारी, स्वत: विषाक्त दवाईयाँ आदि) बहुत से मामलों में बधिरता के लिए उत्तरदायी हैं। गर्भवती मां द्वारा संचरित रूबेला या अन्य वायरल संक्रमण एक अजन्मे बच्चे को बहरा कर सकता है। जन्म की प्रक्रिया से सम्बद्ध जोखिम (जो हैं ऑक्सीजन की आपूर्ति में बाधा) श्रवण को प्रभावित कर सकती है। बीमारी या संक्रमण बड़े बच्चों में बधिरता के कारण हो सकते हैं। शोर का लगातार उच्च स्तर गंभीर संवेदी तंत्रीकीय श्रवण क्षति का क्रमिक एवं संभावित कारण हो सकता है। उसी प्रकार ट्यूमर, विस्फोटक आवाज, खोपड़ी या कान में चोट बधिरता को जन्म दे सकती है।

(c) **कारक जो श्रवण बाधिता के कारण प्रभावित होते है**–एक श्रवण बाधित बच्चा (मुख्यत: गंभीर से गूढ़ श्रवण क्षति से ग्रस्त) संप्रेषण कौशल के रूप में भाषा एवं वाचन को सीखने पर विचारणीय समय व्यतीत करना चाहता हैं जो कि उन्हें शिक्षा ग्रहण करने और सामाजिक कौशलों को विकसित करने में सहायता करेगा।

8.2.3 वाचन दुर्बलता (वाचन बाधिता)

(a) **अर्थ**–वाचन बाधिता का विस्तार अभिव्यक्ति की समस्याओं या आवाज की शक्ति से पूर्ण आवाज विहीनता, पुराने स्वरभंग, हकलाहट तक होता है। वाचन परेशानियां, सेरेब्रल पल्सी, श्रवण बाधिता एवं मस्तिष्क चोट से संबद्ध भी हो सकती है। वाचन परेशानियों वाले बच्चों को समझने एवं विचारों को व्यक्त करने में कठिनाइयां हो सकती हैं।

(b) **कारण–विलंबित वाचन**–बहुसंख्यक शर्ते-मानसिक मन्दन, श्रवण बाधिता एवं व्यवहारात्मक विकार विलंबित वाचन के कारण हो सकते हैं। कटे-फटे तालु: तालु, मुंह एवं ओष्ठ में

संरचनात्मक कमियाँ वाचन अशक्तताओं का कारण होती है। वाचन कमियों का संवेदनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक उद्भव भी है। प्रेरण का अभाव, अनुकूलन न करने योग्य व्यवहार जैसे समन्वयन में अति गतिशीलता एवं सामान्य व्यावहारात्मक विकारों, आनुवंशिकता।

(c) **कारक जो वाचन बाधिता के कारण प्रभावित होते हैं**–वाचन विकार से ग्रस्त विशेषत: बड़े बच्चों में नकारात्मक सामाजिक प्रभाव होते हैं। वाचन विकार वाले बच्चे अपने विकार के कारण दबंगई के लक्ष्य हो सकते हैं। दबंगई घटे हुए आत्म-सम्मान में परिणत हो सकता है। बाद के जीवन में एक सामान्य जनसंख्या द्वारा दबंगई कम अनुभूत किया जाता है क्योंकि अपनी उम्र के अनुसार वे अधिक समझदार हो जाते हैं।

8.2.4 दृष्टि बाधिता

(a) **अर्थ**–खराब दृष्टि वाले बच्चों के लिए दृष्टि बाधिता, बच्चे जो प्रकाश को देख सकते हैं किन्तु आकार को नहीं, बच्चे जिन्हें प्रकाश का बिल्कुल ही ज्ञान नहीं है दृष्टि बाधित होते हैं। यद्यपि सामान्य चर्चा के लिए यह इस जनसंख्या के लिए सोचना लाभप्रद है जो दो बड़े समूहों को प्रस्तुत करते हैं–वे जो कम दृष्टि वाले है तथा जो वैधानिक रूप से अंधे हैं।

एक बच्चे को वैधानिक रूप से अंधा तब कहा जाता है जब उसकी दृष्टि क्षमता (दृष्टि की तीव्रता) 20/200 हो या सुधार के पश्चात् भी बुरी हो या जब उसकी दृष्टि का क्षेत्र 20 डिग्री से कम हो, सुधार के पश्चात् अच्छी आंख में सुधार के पश्चात् अच्छी आँख में 20 डिग्री से कम हो। कम दृष्टि में शामिल समस्यायें हैं (सुधार के पश्चात्) जैसे–दृष्टि का धुंधलापन, धुंधलापन, आंख पर परत, धुंध दृष्टि, अत्यधिक नजदीक या दूरदृष्टिपन, दृष्टि की विकृति, आंखों के आगे धब्बे, रंगों की विकृति, दृश्य क्षेत्र की कमी, सुरंग दृष्टि, बिना परिधीय दृष्टि, प्रकाश या चमक के प्रति, असामान्य संवेदनशीलता, एवं रात्रि अंधता।

(b) **कारण**–दृष्टि बाधिता के मुख्य कारण है–

1. विटामिन 'A' की कमी
2. गर्भावस्था के दौरान कुछ असामान्यताओं से उत्पन्न सहज मोतियाबिन्द या वंशानुगत।
3. इन्क्यूबेटर में अपरिपक्वता के रेटिनोपैथी को दूर करने के लिए दिये जाने वाले उच्च सान्द्रता के ऑक्सीजन के प्रचालन में अपरिपक्वता जो दृष्टि क्षति का कारण हो सकता है।
4. मोतियाबिन्द–प्राय: उच्च आयु में होता है। ऐसी स्थिति को शल्य चिकित्सा के द्वारा उपचारित किया जाता है।
5. ग्लूकोमा–आँख में उच्च दबाव के परिणाम स्वरूप रेटिना को नुकसान।

(c) **कारक जो दृष्टि बाधिता के कारण प्रभावित होत हैं**–वे जो दृष्टि बाधित हैं उन्हें सर्वाधिक परेशानी दृष्टि प्रदर्शन एवं अन्य दृष्टि निर्गम (उदाहरणार्थ–जोखिम चेतावनी) से

टिप्पणी

है। इसके अतिरिक्त नियंत्रणों का उपयोग करने में समस्यायें हैं जहां स्तरीकरण या वास्तविक संक्रिया दृष्टि पर निर्भर है (उदाहरणार्थ–जहाँ आँख-हाथ का समन्वय अपेक्षित है, जैसे एक कम्प्यूटर माउस के साथ)। लिखित संक्रिया निर्देश एवं अन्य दस्तावेज अप्रयोज्य हो सकते हैं तथा जहाँ परिचालन में परेशानियाँ हो सकती हैं (जैसे–निवेशन/नियोजन, सभा)।

वे जिन्हें वर्णाधंता है उन्हें निश्चित रंगों के युग्मों के बीच अन्तर करने में परेशानी होती है। यह समस्या सामान्यत: वहाँ अधिक नहीं होती है जहाँ सूचनायें रंगों में दी गई हैं अपेक्षाकृत उसके जहाँ रंगों का युग्म चुना गया है जिसकी पृष्ठभूमि खराब है।

8.2.5 गति प्रेरक बाधिता

(a) **अर्थ**–गति प्रेरक बाधिता वाले बच्चे विशेष जरूरतों वाले बच्चों की श्रेणी में से एक हैं एवं अनिवार्यत: अन्यों के समान समाज के सदस्य हैं। ऐसे बच्चों एवं सामान्य बच्चों में उनके मनोवैज्ञानिक बनावट में बहुत अधिक अन्तर नहीं है। उनकी अपनी अपवादत्मकतायें एवं समाज में प्रभाव हैं। पहले वे सहानुभूति से देखे जाते थे किन्तु सामाजिक जागरूकता के जाग्रत होने से विभिन्न रूप से सक्षम लोगों के प्रति सामान्य मनोवृत्ति भी परिवर्तित हो गयी है।

एक गति प्रेरक बाधिता शरीर की एक स्थिति है जो बच्चे को विद्यालय में सामान्य प्रगति करने से रोकता है जैसा कि औसत बच्चे करते हैं। विभिन्न योग्यताओं को नियंत्रित करने के लिए या उन पर पार पाने के लिए उन्हें विशेष ध्यान एवं उपकरण अपेक्षित हैं।

(b) **कारण–आर्थराइटिस**–आर्थराइटिस को जोड़ों में दर्द के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो प्राय: गति के विस्तार को कम करता है एवं कमजोरी उत्पन्न करता है। गठिया जैसा आर्थराइटिस एक क्रोनिक सिन्ड्रोम है। ऑस्टियोआर्थराइटिस एक अपकर्षक जोड़ों की बीमारी है।

प्रमस्तिष्क पक्षाघात (CP)–प्रमस्तिष्क पक्षाघत को मस्तिष्क की परिपक्वता से पूर्व मस्तिष्क के गति क्षेत्रों की क्षति के रूप में परिभाषित किया गया है। CP के अधिकांश मामले जन्म से पहले या जन्म के दौरान होते है। CP चोट का एक प्रकार है, बीमारी नहीं (यद्यपि यह एक बीमारी से उत्पन्न हो सकता है) तथा समय के साथ बदतर नहीं होता है। यह उपचार्य भी नहीं है।

मेरुरज्जु चोट–मेरुरज्जु की चोट के परिणामस्वरूप पक्षाघात हो सकता है। पक्षाघात/आंशिक पक्षाघात का विस्तार तथा शरीर के प्रभावित अंगों का निर्धारण मेरुदण्ड के उच्च या निम्न भाग जहाँ क्षति होती है के द्वारा किया जाता है तथा रज्जु की क्षति के प्रकार द्वारा निर्धारित किया जाता है।

सिर की चोट (प्रमस्तिष्क चोट)–'सिर की चोट' शब्द चोटों के विस्तृत विन्यास का वर्णन करने के -लिए प्रयुक्त किया जाता है जिसमें आघात, मस्तिष्क कोशिका की चोट,

बन्द सिर की चोट, प्रमस्तिष्क हेमरेज, खोपड़ी का टूटना, विदेशी वस्तु (बुलेट), एनोक्सिया तथा शल्य के बाद का संक्रमण शामिल है।

आघात (प्रमस्तिष्क संवहनी दुर्घटना)–आघात के तीन मुख्य कारण है–थ्रम्बोसिस (खून का जमना), हेमरेज (मस्तिष्क उत्तक में रक्त स्राव, उच्च रक्त चाप से सम्बद्ध) तथा इम्बोलिज्म (एक बड़ा थक्का टूटना और धमनी को अवरुद्ध करना)।

अंगों या अंगुलियों की हानि (अंगच्छेदन या जन्मजात)–यह आघात के कारण हो सकता है (उदाहरणार्थ–विस्फोट, मशीन में क्षत-विक्षत होना, विच्छेद, जलना) या शल्य के कारण (कैन्सर, बाह्य धमनीय रोग, डाइबिटीज के कारण)।

पार्किन्सन बीमारी–यह प्रौढ़ वयस्कों की एक क्रमिक बीमारी है जिसके लक्षण है–मांशपेशियों की दृढ़ता, गति संचालन में धीमापन तथा एक अद्वितीय प्रकार का कम्पन। यह वास्तविक पक्षाघात नहीं है।

मल्टीपल स्क्लेरोसिस–मल्टीपल स्क्लेरोसिस को केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की एक क्रमिक बीमारी के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसके लक्षण है–तंत्रिका तन्तुओं को ढ़कने वाली पृथक्करण सामग्री का विनाश।

मांशपेशीय कुपोषण–मांशपेशीय कुपोषण आनुवंशिक बीमारियों का एक समूह है जिसके कारण क्रमिक मांशपेशीय कमजोरी, मांशपेशीय नियंत्रण की क्षति, संकुचन एवं चलने में परेशानी, श्वसन, प्रसारण एवं ताकत को शामिल करते हुए हाथों का प्रयोग।

कारक जो गतिप्रेरक बाधिता के कारण प्रभावित होते है–गतिप्रेरक बाधिता वाले लोगों द्वारा सामना की जाने वाली समस्यायें जिनमें शामिल हैं–मांशपेशी का खराब नियंत्रण, कमजोरी एवं थकान, चलने, बात करने, देखने, बोलने, समझने या पकड़ने (दर्द या कमजोरी के कारण) में परेशानी, चीजों तक पहुँचने में परेशानी तथा जटिल या यौगिक संचालनां को करने में परेशानी (धक्का देना एवं घूमना)। मेरुरज्जु की चोट वाले लोग अपने अंगों का उपयोग करने में असक्षम हो सकते हैं। कई प्रकार की शारीरिक अशक्तताओं वाले लोगों के लिए मुड़ने वाली गतियाँ मुश्किल या असंभव हो सकती हैं (प्रमस्तिष्क पक्षाघात, मेरुरज्जु चोट, आर्थराइटिस, मल्टीपल स्कलेरोसिस, मांशपेशीय कुपोषण आदि)।

8.2.6 बहु बाधिता

(a) **अर्थ**–यह पता लगाना सामान्य है कि एक अकेले प्रकार की बाधिता का जो कुछ भी कारण है वह अन्यों का भी कारण है। यह विशेषरूप से जहाँ बीमारी या आघात गंभीर है या बढ़ती उम्र के कारण उत्पन्न बाधिता के मामले में सत्य है।

बधिर एवं अन्धता एक सामान्य रूप से चिह्नित समुच्चय है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति न तो पूर्ण रूप से बधिर होते हैं न ही पूर्णत: अंधे। किन्तु दृष्टि एवं श्रवण बाधिता दोनों के विस्तार जो, कि बधिरता या अंधता के लिए रणनीतियां अलग-अलग कार्य नहीं करेगी।

विकासात्मक अशक्तताओं वाले लोगों में मानसिक एवं शारीरिक बाधिता का एक समुच्चय है जो कि जीवन के मुख्य गतिविधि के तीन या अधिक क्षेत्रों में वास्तविक कार्यात्मक सीमाओं में परिणत हो जाता है। मधुमेह अन्धता उत्पन्न कर सकता है तथा प्राय: इसके कारण अंगुलियां में संवेदनायें भी समाप्त हो जाती हैं। यह ब्रेल बना देता है या उभरे अक्षरों को पढ़ना असंभव बना देता है। प्रमस्तिष्क पक्षाघात प्राय: दृष्टि बाधिता के द्वारा, श्रवण एवं भाषायी विकारों के द्वारा या संज्ञानात्मक बाधिता के द्वारा साथ-साथ चलते हैं।

(b) **कारण**–बहु विकारों के बहुत से सामाजिक, पर्यावरणीय एवं शारीरिक कारण है यद्यपि कुछ एक निश्चित कारण कभी भी निर्धारित नहीं किये जा सकते। बहु विकारों को उत्पन्न करने वाले सामान्य कारकों में शामिल हैं :

- जन्म के दौरान या पश्चात् मस्तिष्क की चोट या संक्रमण
- वृद्धि या पोषण समस्यायें (प्रसव पूर्व या प्रसव के पश्चात्)
- गुणसूत्रों या जीनों की असामान्यतायें
- जन्म के अपेक्षित समय से काफी पूर्व जन्म-अत्यन्त अपरिपक्वता भी कहा जाता है।
- माता द्वारा लिया गया खराब भोजन तथा न्यूनतम स्वास्थ्य देखभाल।
- गर्भावस्था के दौरान मादक ड्रगों का सेवन, अल्कोहल एवं धुम्रपान का सेवन शामिल।
- ड्रग सम्बन्धित प्रसव पूर्ण विकासात्मक अनदेखी जैसे–थालीडोमाइड।
- गंभीर शारीरिक कुउपचार, जो मस्तिष्क चोट का कारण हो सकता है तथा जो बच्चे की अधिगम क्षमता एवं सामाजिक-संवेदनात्मक विकास को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है।

8.2.7 अधिगम अशक्तता

(a) **अर्थ**–अधिगम अशक्तता स्थितियों के एक विपरीत समूह में से कोई एक है जो तंत्रिका तंत्रीय उद्‌भव पर विश्वास रखता है जो श्रवण, दृश्य या स्थानीय सूचना या इन सूचनाओं के रूपों के कोई समुच्चय को महसूस करने या संशोधित करने में सार्थक परेशानियों का कारण है। अधिगम कठिनाईयां प्राय: बच्चों में औसत या औसत से ऊपर की बुद्धि में होता है तथा उनमें एक या एक से अधिक आधारभूत प्रक्रियाओं को समझने, बोलने या लिखने में शामिल होते हैं।

वे विकारों को शामिल करते हैं जो बाधित कार्यों जैसे पढ़ने (डिसलेक्सिया) लिखने (डिसग्राफिया) तथा गणितीय गणना (डिसकैलकुलिया) में हैं। वे जिन पैटर्नो को दिखाते है उसके प्रत्येक श्रेणी के अन्तर्गत विस्तृत रूप से बदलते रहते हैं। बौद्धिक क्षमता, उपलब्धि एवं निर्गम (सूचना व्यक्त करना और जवाब देना) के बीच चिह्नित असंगति है

टिप्पणी

जो दिखाती है कि कौन सी अधिगम परेशानी है।

(b) **कारण**–अधिगम अशक्तताओं के लिए कारणों को अच्छी तरह नहीं समझा गया है तथा कभी-कभी इसके लिए स्पष्ट कारण भी नहीं होते हैं। फिर भी तंत्रिका-तंत्रीय बधिता के कुछ कारणों में शामिल हैं :

- आनुवंशिक–अधिगम अशक्ततायें प्राय: परिवार में चलती हैं।
- गर्भावस्था एवं जन्म के दौरान समस्यायें–मस्तिष्क के विकास में असामान्यतायें, बीमारी या चोट, अल्कोहल या ड्रग के प्रति अधिक लगाव, जन्म के समय कम वजन, ऑक्सीजन का वंचन, या अपरिपक्व जन्म के परिणाम स्वरूप अधिगम अशक्ततायें हो सकती हैं।
- जन्म के पश्चात् दुर्घटना–सिर की चोट, कुपोषण, या विषाक्त प्रदर्शन (जैसे भारी धातु या कीटनाशक) के कारण भी अधिगम अशक्ततायें हो सकती हैं।

82.8 संवेदनात्मक एवं व्यवहारात्मक विकार

(a) **अर्थ**–संवेदनात्मक एवं व्यवहारात्मक विकार एक व्यापक श्रेणी है जो बच्चों एवं किशोरों में महसूस की गई अधिक विशिष्ट कठिनाईयों को समूहबद्ध करने में सामान्यत: शैक्षिक प्रणाली में प्रयुक्त होता है।

एक बच्चा लम्बे समय के दौरान एक चिह्नित डिग्री के एक या अधिक निम्नलिखित लक्षणों को प्रदर्शित करता है जो उसकी शिक्षा को बुरी तरह प्रभावित करता है:

1. सीखने में परेशानी जो बौद्धिक, संवेदी या स्वास्थ्य कारकों द्वारा वर्णित नहीं किये जा सकते हैं।
2. सहपाठियों एवं शिक्षकों के साथ संतोषजनक अन्तर्वैयक्तिक संबंधों को बनाये रखने में परेशानी।
3. सामान्य परिस्थितियों के अन्तर्गत अनुपयुक्त प्रकार के व्यवहार में अनुभूतियाँ।
4. दुख या तनाव की एक सामान्य व्यापक मनोदशा।
5. व्यक्तिगत या विद्यालय की समस्याओं से सम्बद्ध शारीरिक लक्षणों या भय विकसित करने की एक प्रवृत्ति।

(b) **कारण**–जीव विज्ञान एक कारक हो सकता है। संवेदनात्मक एवं व्यवहारात्मक विकार जीनों के माध्यम से वंशागत हो सकते हैं, मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन के कारण या मस्तिष्क की चोट के परिणामत: भी हो सकता है। लोगों का पड़ोस भी भूमिका निभा सकता है। यदि युवक मादक पदार्थों का सेवन करता है, अत्यन्त तनाव में रहता है, परिवार में कोई मृत्यु हुई हो या हिंसा को देखा हो तो इस विकार के ये संभावित कारण है।

टिप्पणी

8.2.9 'वेटिंग चिल्ड्रेन' की संकल्पना

बच्चे जो गोद लिये जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वो अंगीकरण के लिए वैधानिक रूप से मुक्त हैं। वे लोक बाल कल्याण प्रणाली की देखभाल में है, वे अपने घर वापस नहीं जा सकते हैं तथा उन्हें स्थायी परिवारों की जरूरत है।

यह शब्द सामान्यत: अ-शिशु, विद्यालय जाने वाले बच्चे, जो अंगीकरण के लिए वैधानिक रूप से उपलब्ध होते हैं को प्रदर्शित करता है। वे सामान्यत: वैधानिक न्यायाधिकरण एवं लोक पालन देखभाल एजेंसियों के अन्तर्गत होते हैं तथा कई कारणों से पालन पोषक एजेंसियों में आये होंगे जिसमें नकार देना, परित्याग कर देना, मादकता या उनके परिवार में अन्य बुराईयों को शामिल किया जा सकता है।

बहुत से प्रतीक्षारत बच्चे सहोदर होंगे जो अंगीकरण के लिए उपलब्ध हैं तथा वे एक साथ एक परिवार की इकाई के रूप में रहना चाहेंगे। अधिकांश भौगोलिक स्थितियों में आधे से अधिक प्रतीक्षारात बच्चे नृजातीय रूप से भिन्न होंगे या अलग रंग के बच्चे होंगे। सभी प्रतीक्षारत बच्चों में दो चीजें सामान्य होंगी–(1) उनकी जरूरत एक उत्तरदायी एवं पोषण करने वाले परिवार का एक स्थायी अंग होना तथा (2) यद्यपि वे अपूर्ण एवं प्राय: अधिकांश चुनौतीपूर्ण है, फिर भी वे अपने नये परिवारों के लिए अद्भूत आनंद एवं संतोष दे सकते हैं।

भारतीय अंगीकरण प्रणाली के अनुसार, हिन्दुओं के द्वारा अंगीकरण के अलावा भारतीय कानून में अंगीकरण का प्रावधान नहीं है। देश छोड़ने के लिए बच्चों को अंगीकरण करने वाले माता-पिता के संरक्षण में रखा जाता है तथा अंगीकरण माता-पिता के गृह में ही होगा।

प्रगति जाँच-1

1. बच्चे जो अंगीकृत होने के लिए इंतजार कर रहे हैं वह बच्चे हैं जो वैधानिक रूप से अंगीकरण के लिए मुक्त हैं वे जाने जाते हैं ..... के रूप में।
2. एक बच्चा वैधानिक रूप से अंधा तभी कहा जाता है जब उसकी दृष्टि संवेदनशीलता ..... है। (20/20, 20/200, 10/200, 20/2000)
3. एक श्रवण बाधित बच्चे को ..... अधिगम पर अपेक्षित समय बिताना जरूरी है। (भाषा, ब्रेल, लेखन, पठन)
4. विटामिन 'A' की कमी एक मात्र रोग ..... का कारण है। (श्रवण बाधिता, गति प्रेरक बाधिता, संज्ञानात्मक अशक्तता, दृष्टि बाधिता)

8.3 प्रारंभिक पहचान, मूल्यांकन एवं हस्तक्षेप

भारत में राज्य एवं केंद्र दोनों सरकारों द्वारा प्रारंभिक बचपन की देखभाल एवं विकास की जरूरत को पहचाना गया है। बच्चों को विद्यालय जाने के लिए तैयार करने के साथ-साथ प्राथमिक एवं

टिप्पणी

द्वितीयक विकलांगता को रोकने में इसकी प्रभाविता के लिए प्रारंभिक हस्तक्षेप को भी पहचाना गया है। प्रत्येक बच्चे में अवशिष्ट क्षमता के सर्वोत्तम उपयोग के लिए यह मौलिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बच्चे के भविष्य के लिए आधार रखता है तथा बच्चों के समग्र विकास को प्रोन्नत करता है।

प्रारंभिक पहचान एवं हस्तक्षेप का लाभ पुनर्वास के क्षेत्र में विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत एवं प्रलेखित हो चुका है। ICDS ने समग्र बाल विकास कार्यक्रम शुरू किया है जो पोषण पर विशेष प्रकाश डालता है। यह कार्यक्रम बाद में किशोरी लड़कियों, प्रसव पूर्व एवं पश्चात देखरेख एवं 6 वर्ष तक पूर्व विद्यालयी शिक्षा तक विस्तारित हो चुका है। जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं (आंगनबाड़ी कार्यकता) के लिए प्रशिक्षण के एक घटक के रूप में अशक्तताओं पर एक जागरूकता माड्युल शामिल किया गया था। यद्यपि अशक्तताओं वाले बच्चे आंगनवाड़ी केंद्रों के प्रारूप में नहीं जोड़े गये थे।

उपर्युक्त तकनीक एवं कौशलों का उपयोग कर पांच वर्षों से नीचे वाले अशक्त बच्चों की प्रारंभिक पहचान, हस्तक्षेप एवं प्रेरण द्वितीयक विकलांगों एवं समस्याओं की गंभीरता को रोकने में सहायता करेगी।

अधिकांश माता-पिता दु:खी हैं कि उनके विशेष जरूरत वाले बच्चे के अंकन से उनके बच्चे कलंकित होंगे। वे चिंतित हैं कि विशेष जरूरत की पहचान कर लेना बच्चे के लिए एक जोखिम प्रस्तुत कर सकता है, जैसे उस आयु के सामान्य बच्चों के लिए होने वाले सामान्य कार्यक्रमों एवं गतिविधियों से बच्चे को अलग करना।

अत: यह व्यवहारिक उद्देश्यों से बहुत महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे जिनकी विशेष जरूरतें हैं जितनी जल्दी संभव हो पहचान लिये जायें और वे उसी प्रकार परिभाषित हों, ताकि वे संभव बेहतर जीवन जीने के क्रम में जरूरी विशेष सहायता प्राप्त कर सकें।

यहाँ शिक्षक की भूमिका बहुत निर्णायक है, सर्वप्रथम शिक्षक एक बच्चे में इस इकाई में वर्णित कुछ लक्षणों को ढूंढ़ते हैं फिर शिक्षक स्क्रीनिंग फार्म का उपयोग करते हैं एवं बाद में बच्चे को एक पेशेवर के पास मूल्यांकन के लिए भेजते हैं।

प्रारंभिक बचपन के विकासात्मक देरी के कुछ चेतावनी चिह्न:

- तेज आवाज पर प्रतिक्रिया नहीं देना।
- अपने हाथों को न खोज पाना तथा वे अपने हाथों को मुँह में नहीं रखते हैं।
- अपनी आँखों से वस्तुओं का पीछा न करना या आवाज की दिशा में सिर को न घुमाना।
- खिलौनों तक नहीं पहुँचना या उन्हें न पकड़ना।
- अंग या तो बहुत सख्त हैं या बहुत मुलायम।
- अपने शरीर को दूसरी ओर की अपेक्षा एक ओर घुमाना पसंद करते हैं।

टिप्पणी

- छोटी वस्तुओं को नहीं उठा सकते हैं।
- अनाड़ी है और अक्सर गिरता है।
- लगातार लार टपकाना।
- दूसरे बच्चों के साथ खेलने में रूचि नहीं रखता है।
- सामान्य अनुदेशों का अनुकरण नहीं कर सकता है।
- पृथक्करण की आशंका से ग्रस्त है, जब मां से दूर ले जाया जाता है।
- अजनबियों से भयभीत है।
- गेंद फेंक नहीं सकता, दौड़ या उछल नहीं सकता है।
- किसी गतिविधि में बहुत जल्दी रूचि खो देता है।

8.3.1 अशक्तताओं की पहचान

क्षतियों की सामयिक पहचान, एक द्वितीयक रोकथाम व्यक्ति के कार्यात्मक स्तर पर तथा अशक्त होने की स्थिति से क्षतियों की जांच में भी क्षति के प्रभाव को कम कर सकती है। प्रारंभ में माता-पिता द्वारा घर में तथा बाहर (आंगनवाड़ी केंद्रों/विद्यालयों/उप-स्वास्थ्य केंद्रों में) जितनी जल्दी संभव हो पहचानना जरूरी है तथा फिर आवश्यक हस्तक्षेप की योजना के क्रम में विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा उन्हें मूल्यांकित किया जाना जरूरी है।

सभी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों को अशक्त बच्चों को पहचानने का उत्तरदायित्व है। विशेष जरूरतों वाले बच्चों की पहचान के लिए जांच सूची (विद्यालय के शिक्षक एवं माता-पिता को इस जांच सूची का उपयोग करना चाहिए):

क्षति	लक्षण	सावधानी
दृष्टि	(a) आँखों से पानी आना (b) आवर्तक लालिमा (c) निरंतर जलन (d) निरंतर पलक झपकना (e) भेंगा होना (f) वस्तुओं पर अनुपयुक्त बाधा या अन्य लोगों पर उच्छलन (g) सिर का अंकन या एक आँख की समाप्ति (h) 1 मीटर की दूरी से तने हुए हाथ की अंगुलियों को गिनने में परेशानी। (i) पढ़ते समय सिर को घुमाना (j) दूर की वस्तुओं को पहचानने में परेशानी	यदि कोई चार स्थितियां उपस्थित है तो एक नेत्र चिकित्सक द्वारा उपयुक्त जांच की जानी चाहिए कि चश्मों का उपयोग कर उपचार द्वारा इस स्थिति को सुधारा जा सके।

	(k) पर्याप्त दृष्टि वाले सूक्ष्म कार्य को करने में परेशानी (l) पुस्तकों को आंखों के बहुत पास या बहुत दूर रखना (m) ब्लैक बोर्ड से नोट करते समय बार-बार दूसरे बच्चों से पूछना (n) ब्लैक बोर्ड से पढ़ने में परेशानी प्रदर्शित करना (o) दीवार पर वस्तुओं के विरुद्ध हिट करना।	
श्रवण	(a) कान की कुसंरचना (b) कान से अपशिष्ट निकलना (c) कान में जलन (d) कान में दर्द (e) नजदीक से सुनने की कोशिश करना (f) अनुदेशों को दुहराने को कहना (g) उचित ढंग से लिखने में सक्षम नहीं (h) स्पीकर की अपेक्षा अनुगूंज परावर्तन को सुनने की कोशिश करना (i) ब्लैक बोर्ड से नकल करते समय गलतियां करना (j) सहपाठी को बार-बार उसकी अभ्यास पुस्तिका दिखाने को कहना (k) कक्षा में ध्यान देने में समस्या (l) सुनने के लिए एक कान का उपयोग करना (m) जब कोई पीछे से बोले तो समस्या (n) बहुत तेज या बहुत धीरे बोलना (o) गलत उच्चारण एवं आवाज की समस्या प्रदर्शित करना (p) TV/रेडियो को अधिक तेज चलाना (q) असंगत जवाब (r) अपने आयु समूह वालों से दूरी रखना (s) जब दूसरे कमरे से बुलाया जाये तो बच्चा जवाब देने में असक्षम हो (t) बच्चा कुछ दुहरावों के बाद सुनता है।	यदि 3 या 4 स्थितियां मौजूद हैं तो वह श्रवण/वाचन क्षति दिखलाता है। फिर बच्चे का सावधानी पूर्वक नाक, कान, गला विशेषज्ञ द्वारा जांच किया जाना चाहिए तथा पूर्ण मूल्यांकन के लिए स्पीच थेरेपिष्ट द्वारा भी जांच की जानी चाहिए। यदि बच्चा 4-5 वर्ष से कम का है तो मनोवैज्ञानिक समस्याओं जो प्रत्यक्षत: नहीं दिखती हैं की जांच के लिए मनोवैज्ञानिक से भी सलाह लेनी चाहिए।
वाचन	(a) बोलने में अनुपयुक्त आवाजें (b) हकलाहट (c) शिशु की बोली (d) सही आवाज सीखने में अक्षमता तथा गलत वाणी का उपयोग (e) अबोध्य वाणी	

टिप्पणी

गति प्रेरक अशक्ततायें	(a) गला, हाथ, अंगुली, कमर या पैरों में विक्रति (b) बैठने, खड़े होने या चलने में परेशानी (c) उठाने, पकड़ने या चीजों को सतह पर रखने में परेशानी (d) घूमने या शरीर के किसी अंग का प्रयोग करने में परेशानी (e) कलम पकड़ने में परेशानी (f) टहलने के लिए छड़ी का प्रयोग करना (g) टहलने के दौरान झटके लगना (h) शारीरिक संतुलन का अभाव (i) कम्पनों की अपस्मारी गतियां (j) जोड़ों का दर्द। (k) शरीर का कोई अंग कटा हो	यदि कोई भी स्थिति मौजूद है तो बच्चे का अस्थि रोग सर्जन द्वारा सावधानी पूर्वक जांच की जानी चाहिए, तथा फिजियोथेरेपीस्ट को रेफर कर दिया जाना चाहिए।
संज्ञानात्मक अशक्तता (मानसिक मन्दन)	(a) यदि एक बच्चा 12–15 महीने बाद भी बिना सहायता के नहीं बैठता है (b) या $2^1/_2$ वर्षों द्वारा बाद भी नहीं चलता है (c) या $2^1/_2$ वर्षों बाद भी बात नहीं करता है। (d) यदि एक बच्चे को 6 वर्षों की आयु तक निम्नलिखित में से कोई गतिविधि स्वतंत्रतापूर्वक करने में अनुचित समस्यायें आती है: – खाने – पहनने – शौचालय जाने (e) पेंसिल को पकड़ने या कैंचियों का एक जोड़ा उपयोग करने में समस्यायें (f) एक गेंद पकड़ने में अक्षम या सहपाठियों के साथ गुल्ली-डंडा खेलने में अक्षम (g) सहपाठियों के साथ खेलते समय बार-बार झल्लाना (h) वाणी बोलने में सामान्य असावधानी (i) सामान्य चीजों को याद करने के लिए बहुत अधिक दुहराव अपेक्षित (j) यहां तक कि पांच फलों, सब्जियों या पौधों का नाम लेने में परेशानी (k) सप्ताह के दिनों का नाम लेने में समस्यायें (l) अन्य सहपाठियों से भिन्न जरूरतों को स्पष्ट भाषा में व्यक्त करने में समस्यायें (m) यहां तक कि कम समय के लिए कार्यों पर एकाग्र करने में अक्षम	समान उम्र समूह के और कक्षा के विद्यालय जाने वाले औसत साथियों की जब तुलना की जाये तब यदि किसी चार सूचकों के जवाब सकारात्मक है तो फिर बच्चे का एक सक्षम मनोविज्ञानी या शिक्षक जो विशेष रूप से प्रशिक्षित है के द्वारा उचित ढंग से मूल्यांकन होना चाहिए।

	(n) अनुपयुक्त मौखिक जवाब (o) नई चीजों को सीखने में परेशानी (p) विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले पाठों का खराब बोध (q) अवधारणा बनाने में परेशानी (r) अपने समान उम्र के बच्चों के साथ अच्छे से नहीं रहना (s) अन्य सहपाठियों की तुलना में सीखने या अभ्यास करने में अधिक प्रयास अपेक्षित है। (t) किसी कार्य को पूर्ण करने में अधिक समय लेता है। (u) खराब शैक्षिक उपलब्धियां (v) सीखने के लिए ईशारों या सामग्री पर अनुचित निर्भरता दिखाना	
अधिगम अशक्ततायें	(a) गिनने में परेशानी (b) एकाग्रता का अभाव या घर पर या विद्यालय में पड़ोस से आसानी से विचलित हो जाना (c) कक्षाकक्ष में चुपचाप बैठने में परेशानी (d) बोले गये शब्दों को आसानी से नहीं लिखता है (e) ठीक शब्दों में अनुपयुक्त अक्षर लगा देना जैसे–इस्कूल (f) दायें एवं बायें के बीच हमेशा भ्रमित रहना (g) मौखिक अनुदेशों को याद करने में अतार्किक परेशानी (h) चीजों का स्मरण करने में सामान्य परेशानी (i) बच्चे में अत्यंत बेचैनी जो विविध कार्यों की समय पर पूर्णता के लिए सार्थक रूप से हस्तक्षेप करता है। (j) पढ़ते समय बार–बार अक्षरों या प्रतीकों को उल्टा कर देता है, उदाहरणार्थ–b को d, saw को was आदि (k) पढ़ते समय बार–बार अंकों को उल्टा कर देता है जैसे 31 को 13, 6 को 9 आदि (l) पढ़ते समय अत्यधिक त्रुटियां जैसे स्थान छोड़ना, दुहराना, अन्य शब्द बोलना, स्थानापन्न शब्द बोलना (m) गणितीय गणना में कमजोर (n) पुस्तक या ब्लैक बोर्ड से सटीक नकल करने में समस्या जबकि दृष्टि सामान्य है (o) अक्षरों या शब्दों को या तो बहुत पास या बहुत दूर लिखना (p) बच्चा संतोषजनक रूप से समझता है किन्तु सार्थक प्रश्नों का जवाब देने में सक्षम नहीं है	यदि बच्चे में 3–5 स्थितियां मौजूद हैं तो बच्चे का एक योग्य बाल विशेषज्ञ या विशेष शिक्षक द्वारा जांच की जानी चाहिए तथा आगे सलाह देनी चाहिए। सीखने में अशक्त बच्चों का एक मुख्य लक्षण है–उनका मौखिक कौशल लेखन कौशल की अपेक्षा अधिक बेहतर होता है। इसलिए उनकी औपचारिक जांच होनी चाहिए।

टिप्पणी

8.3.2 मूल्यांकन

विशेष जरूरत वाले बड़े बच्चों की प्रारंभिक पहचान एवं हस्तक्षेप प्राय: बेहतर विद्यालय समायोजन एवं उत्पादन का नेतृत्व करता है। मूल्यांकन बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को निधरित करने में सहायता करता है। कुछ बच्चों में निश्चित समय पर सीखने में परेशानियां होती हैं तथा उन्हें थोड़े समय की सहायता अपेक्षित होती है। जबकि बहुत से बच्चों को जीवन भर जरूरतें हो सकती है। बच्चों की जरूरतें परिवर्तित हो सकती हैं, पर्यावरण एवं रणनीतियों पर निर्भर वह विकसित करता है। अन्य बहुत से कारक बच्चों की शैक्षिक जरूरतों को प्रभावित कर सकते हैं तथा यह महत्त्वपूर्ण है कि विद्यालय की टीम इन कारणों की पहचाने एवं इन पर चर्चा करने के लिए नियमित रूप से मिलें एवं बच्चों की कार्ययोजना को उनकी जरूरतों के अनुसार समायोजित करें।

माता-पिता की सहमति विद्यालय को देने के पश्चात् उनके बच्चों को साधन सेवी शिक्षक या चिकित्सक के पास भेज दिया जाता है तत् पश्चात् मूल्यांकन योजना विकसित होगी। माता-पिता विविध तरीकों से मूल्यांकन प्रक्रिया में शामिल हो सकते हैं।

एक मूल्यांकन कैसे किया जाता है?

मूल्यांकन प्रविधि निम्नलिखित प्रश्नों को संबोधित करती है:–

1. बच्चा कौन है? रूचियों, पसंद एवं नापसंद, कौशलों एवं अन्य शक्तियों को शामिल करते हुए।
2. बच्चे को विशेष जरूरतें क्या है? बच्चा विशेष शिक्षा क्यों ले रहा है?
3. बच्चे का परिवार तथा सहायक कौन है? आशाओं एवं स्वप्नों, जरूरतों एवं सम्बद्धों को शामिल करते हुए।
4. बच्चे को नियमावली एवं दैनिक गतिविधियां क्या है?
5. नियमावली एवं गतिविधियों को पहले देखें, एक समय पर एक, बच्चे को अधिक सफल होने के लिए क्या सहायता हो सकती है?
   - बातचीत एवं सम्प्रेषण?
   - घूमना
   - खेलना एवं समाजीकरण?
   - सीखना एवं याद करना?
   - पसंद बनाना एवं नियंत्रण रखना?
   - दोस्तों के साथ भागीदारी?
   - आत्मनिर्भरता बढ़ाना?
   - दूसरों की सहायता करना?

   इन सबको शामिल कर।

टिप्पणी

6. कौन से IEP लक्ष्यों एवं उद्देश्यों पर हमें सहायक तकनीक के लिए देखना चाहिए? (2 या 3 को प्राथमिकता दें)
   - भाषा एवं संप्रेषण
   - खेल एवं समाजीकरण
   - पोषण
   - गतिशीलता एवं अवस्थिति
   - तत्परता कौशलों
   - स्वयं सहायता
   - दैनिक जीवन की गतिविधियां
   - व्यवहार
   - दोस्तों की टोली

   इनको शामिल कर।

बच्चों की जरूरतों के अनुसार विशेषज्ञ एक साधन सेवी शिक्षक, पाठ्य चिकित्सक, बोली भाषा रोगविज्ञानी, मनोवैज्ञानिक, व्यावसायिक थेरेपिस्ट या अन्यों को शामिल कर सकता है। विभिन्न व्यवसायी बच्चे के विकास के विभिन्न क्षेत्रों का मूल्यांकन करने में निपुण होते हैं। उदाहरण के लिए एक मनोवैज्ञानिक बच्चे की संज्ञानात्मक योग्यता या क्षमता का मूल्यांकन करता है। एक कक्षाकक्ष शिक्षक या साधन सेवी शिक्षक बच्चों के अधिगम कौशलों का मूल्यांकन करता है। बच्चों की अशक्तताओं के प्रारंभिक मूल्यांकन के लिए एक प्रश्नावली का उपयोग शिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। (परिशिष्ट में दिया गया है)

बच्चे के लिए एक मूल्यांकन योजना विकसित करने के पश्चात् तथा जब बच्चे के सभी मूल्यांकन परिणाम पूर्ण हो जाते हैं तो विद्यालय को माता-पिता से सम्पर्क करना चाहिए और मूल्यांकन के परिणामों की व्याख्या करने तथा सुझावों की चर्चा करने के लिए मूल्यांकन में शामिल स्टॉफ के साथ एक सभा व्यवस्थित की जानी चाहिए तथा किसी भी संबंधित निर्णयों को लेने में माता-पिता को शामिल करना चाहिए। एक लिखित रिपोर्ट माता-पिता, शिक्षक एवं बच्चों के साथ कार्य करने वाले अन्य लोगों से साझा की जाती है।

8.3.3 प्रारंभिक हस्तक्षेप

प्रारंभिक हस्तक्षेप शब्द परिस्थितियों के प्रभाव को कमतर करने के उद्देश्य के साथ विशेष जरूरतों वाले बड़े बच्चों को दी जाने वाली सेवाओं को इंगित करता है। सेवाओं में वाणी, शारीरिक या व्यवसायिक थेरेपी शामिल हो सकती है तथा घर में या कार्यालय में प्रदत्त हो सकती है।

उम्मीद है कि प्रारंभ में दी गई ये सेवायें विकास में किसी भी देरी में सहायता करेंगी ताकि बच्चे

टिप्पणी

को बाद में थेरेपी की जरूरत नहीं होगी। यदि कभी भी जब बच्चा विद्यालय जाने की उम्र में पहुंचता है तथा उसे थेरेपी की जरूरत होती है तो वहां उपचारी विद्यालय विभिन्न प्रकार की विशेष जरूरतों के लिए होते हैं।

ऐसे बहुत से विद्यालयों में थेरेपी बच्चे की दिनचर्या में रिमिडल पाठ्यचर्या के रूप में कार्य करती है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है?

प्रारंभिक हस्तक्षेप क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है और जितनी जल्दी संभव हो उतनी जल्दी शुरू करने की क्यों जरूरत है? इसके तीन महत्त्वपूर्ण कारण हैं।

यह बच्चे के विकास को प्रोन्नत करने में सहायता करता है, यह एक समर्थन प्रणाली है न केवल बच्चों के लिए बल्कि परिवार के लिए भी तथा अन्ततः यह समाज का एक कार्यात्मक सदस्य होने की योग्यतायें बच्चे को देता है।

हस्तक्षेप प्रक्रिया निम्नलिखित टीम गतिविधियों को शामिल करेगी:

- हस्तक्षेप योजना का प्रारूप बनाना।
- माता-पिता के साथ सलाह एवं भागीदारी।
- उपर्युक्त मीडिया का सृजन करना एवं दिशा तय करना।
- उपर्युक्त सामग्री का सृजन करना एवं दिशा तय करना। (व्यावसायिक एवं स्थानीय तौर पर विकसित दोनों)
- अन्य उपर्युक्त सहायक तकनीक का सृजन करना एवं दिशा तय करना।
- कम-से-कम 4 सप्ताहों के लिए दैनिक आधार पर एक योजना कार्यान्वित करना।
- विद्यार्थी के अधिगम परिणामों का मूल्यांकन करना।
- सहायक तकनीक समर्थनों के लिए अगले कदम का उद्देश्य।

हस्तक्षेप विद्यालय आधारित या घर आधारित हो सकते हैं जो कि विद्यालय में बच्चों की सफलता को समर्थ करने में भावी सकारात्मक व्यावहारात्मक समर्थन के लिए एक प्रणाली के साथ एकीकृत है। इस कार्यक्रम का दीर्घकालीन परिणाम उपकरणों एवं रणनीतियों का एक विन्यास होगा (उदाहरणार्थ–मूल्यांकन उपकरण, विद्यालय पूर्व पाठ्यक्रम) जो विशेष जरूरत वाले छोटे बच्चों या विशिष्ट अधिगम अशक्तताओं के लिए उच्च जोखिम वालों के लिए पूर्व किण्डरगार्टेन से किण्डरगार्टेन के माध्यम से संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक एवं संवेदनात्मक जरूरतों के लिए प्रभावी प्रलेख हो चुका है।

प्रत्येक बच्चे की अधिगम अपेक्षायें उनकी क्षतियों एवं योग्यताओं के अनुसार व्यक्तिगत रूप से

टिप्पणी

भिन्न होती है। वैयक्तिक शिक्षा योजना प्रयुक्त हो सकती है। गतिविधियां सामान्य से जटिल होनी चाहिए। प्रत्येक बच्चे के लिए पाठ्यचर्या की योजना में शिक्षक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्यवेक्षण ही एकमात्र तरीका है जिससे वह बच्चों की जरूरतों पर आधारित एक पूर्व पाठ्यचर्या की योजना कर सकते हैं।

8.4 विकलांगता कानून एवं नीतियां

कानून के कार्यान्वयन से अर्जित अनुभव के प्रकाश में एक नये अधिनियम के द्वारा बदलने के लिए अशक्त व्यक्तियों का कानून, 1995 प्रस्तुत किया गया था, विकास जो कि वर्षों से अशक्तता के क्षेत्र में स्थान लेने हैं तथा अशक्त व्यक्तियों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र की सभा में सुझावों से भी स्थान लेते हैं।

इस इकाई में हम वर्तमान कानूनों एवं नीतियों के बारे में चर्चा करेंगे।

अशक्त व्यक्तियों के मानवाधिकार क्या हैं?

समुदाय के सभी सदस्यों के समान मानवाधिकार हैं–जिसमें सिविल, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक अधिकार शामिल हैं। इन अधिकारों के उदाहरण निम्नलिखित को शामिल करते हैं:

- कानून के समक्ष बिना भेदभाव के समानता
- व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता एवं सुरक्षा का अधिकार
- कानून एवं वैधानिक क्षमता के समक्ष समान पहचान
- उत्पीड़न से मुक्ति (स्वतंत्रता)
- शोषण, हिंसा एवं दुर्व्यवहार से मुक्ति
- शारीरिक एवं मानसिक एकता के आदर का अधिकार
- घूमने एवं राष्ट्रीयता का अधिकार
- समुदाय में रहने का अधिकार
- अभिव्यक्ति एवं सम्मति की स्वतंत्रता
- गोपनीयता का आदर
- घर एवं परिवार के लिए आदर
- शिक्षा का अधिकार

टिप्पणी

- स्वास्थ्य का अधिकार
- कार्य का अधिकार
- एक पर्याप्त जीवन स्तर का अधिकार
- राजनीतिक एवं लोक जीवन में भाग लेने का अधिकार
- सांस्कृतिक जीवन में भाग लेने का अधिकार

सभी अशक्त व्यक्तियों को उनके अधिकारों का आनंद लेने के लिए भेदभाव से मुक्त होने का अधिकार है। यह न केवल अशक्तता बल्कि अन्य आधारों जैसे जाति, रंग, लिंग, धर्म, राजनीतिक या अन्य सम्मति, राष्ट्रीय या सामाजिक उत्पत्ति, धन, जन्म एवं अन्य स्थितियों के आधार पर भेदभाव से मुक्ति होने के अधिकार को शामिल करता है।

8.4.1 अशक्त व्यक्तियों के अधिकार पर सम्मेलन

अशक्त व्यक्तियों के अधिकार पर सम्मेलन एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है जो अशक्त व्यक्तियों के अधिकारों की पहचान करता है साथ ही साथ उन अधिकारों को प्रोन्नत, सुरक्षित एवं सुनिश्चित करने के लिए सम्मेलन का उत्तरदायित्व राज्य के दलों का है। सम्मेलन कार्यान्वयन की दो तकनीकों को भी स्थापित करता है–अशक्त व्यक्तियों के अधिकारों पर समिति, कार्यान्वयन के निरीक्षण के लिए स्थापित की जाती है तथा राज्य पार्टियों का सम्मेलन कार्यान्वयन संबंधी मुद्दों पर विचार करने के लिए स्थापित की जाती है।

राज्य सम्मेलन का प्रबंध सिविल सोसाइटी संगठनों, राष्ट्रीय मानवाधिकार संस्थाओं, एवं अन्त: सरकारी संगठनों की भागीदारी से करते हैं। संयुक्त राष्ट्र की आम सभा ने सम्मेलन को 31 दिसंबर, 2006 को अपनाया और यह हस्ताक्षर के लिए 30 मार्च, 2007 को रखा गया था। राज्य जो सम्मेलन को अभिपुष्ट करते हैं वे वैधानिक रूप से सम्मेलन के मानकों का आदर करने के लिए बंधे होते हैं। अन्य राज्यों के लिए सम्मेलन एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक को प्रस्तुत करता है जिसका उन्हें आदर करने का प्रयत्न करना चाहिए।

वर्तमान कानून संशोधन की प्रक्रिया में है। प्रलेख जो इस अध्याय में प्रयुक्त हुआ है वह संशोध न से पहले का कानून है।

दक्षिण एशिया के अधिकांश देशों में अशक्तता राज्य का विषय है और UNCRPD के समझौतों को कार्य में परिणत करने का उत्तरदायित्व स्थानीय सरकारों का है। उदाहरणार्थ–भारत में भारतीय संविधान के अन्तर्गत विषयों को तीन सूचियाँ केंद्रीय, समवर्ती एवं राज्य सूची में विभाजित की गई हैं। केंद्रीय सूची के अन्तर्गत आने वाले विषय हैं–रक्षा, बाह्य संबंध जो केंद्रीय सरकार के उत्तरदायित्व हैं। समवर्ती सूची के अन्तर्गत आने वाले विषय हैं जैसे–शिक्षा, स्वास्थ्य आदि। अशक्तता राज्य सूची के अन्तर्गत सूचीबद्ध है। इसका तात्पर्य है कि राज्य स्तर पर UNCRPD के कार्यान्वयन का मुख्य उत्तरदायित्व राज्य या प्रांतीय सरकारों का है। ग्रामीण स्तर पर अशक्तता को संबोधित करने का उत्तरदायित्व पंचायती राज संस्थाओं या स्थानीय सरकारों का है।

टिप्पणी

जैसा कि हम जानते हैं भारत में अशक्तता कानून पारित है और यह उपर्युक्त सभी का मिश्रण है। यह नीतियों, योजनाओं एवं अधिनियमों के बारे में एकमात्र प्रलेख में बात करता है।

8.4.2 अशक्त व्यक्तियों का कानून, 1995 (Persons with Disability Act, 1995)

कानून में प्रयुक्त शब्दों की वैधानिक परिभाषा की गई है। अशक्तता का अर्थ है:

- अंधता-दृष्टि का बिल्कुल न होना।
- कम दृष्टि-व्यक्ति जो सहायक यंत्रों से कार्य करने में सक्षम हो।
- उपचारित कुष्ठ-उपचारित किन्तु हाथों या पैरों में संवेदना का न होना साथ ही साथ आंख एवं पलक में संवेदना का अभाव एवं आंशिक पक्षाघात।
- श्रवण बाधिता–बातचीत की आवृत्तियों में 60 या अधिक डेसिबल की क्षति।
- गति प्रेरक अशक्तता–हड्डी के जोड़ों की अशक्तता या अंगों की गतियों के वास्तविक अवरोध को आगे बढ़ाने वाली मांशपेशियों की अशक्तता या प्रमस्तिष्क पक्षाघात।
- मानसिक बीमारी–मानसिक मन्दन के अलावा किसी प्रकार का मानसिक विकार।
- मानसिक मन्दन–अवरुद्धता की स्थिति या एक व्यक्ति के मस्तिष्क का अपूर्ण विकास।

अशक्त व्यक्ति एक चिकित्सिय सत्ता द्वारा प्रमाणित होता है कि वह 40% से कम अशक्तता से ग्रस्त नहीं हैं अर्थात् अशक्तता 40% से अधिक है।

अशक्तताओं की रोकथाम एवं प्रारंभिक पहचान

उनकी आर्थिक क्षमता एवं विकास की सीमाओं के अन्तर्गत उपर्युक्त सरकार एवं स्थानीय सत्तायें, अशक्तताओं की उपस्थिति को रोकने का एक दृष्टिकोण देंगी:

(a) उत्तरदायित्व या अशक्तताओं की उपस्थिति के कारणों से सम्बद्ध सर्वे, खोजों एवं शोधों के उत्तरदायित्व को प्रेरित करना।

(b) अशक्तताओं को रोकने की विविध विधियों को प्रोन्नत करना।

(c) जोखिम वाले मामलों को पहचानने के उद्देश्य से वर्ष में कम-से-कम एक बार बच्चों की जांच करना।

(d) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर स्टाफ के प्रशिक्षण के लिए सुविधायें उपलब्ध कराना।

(e) जागरूकता अभियानों को प्रवर्तित करना तथा फैलाना या सामान्य स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सफाई के लिए प्रसारित सूचना को प्रवर्तित करना।

(f) प्रसव पूर्व, प्रसव के दौरान एवं प्रसव के पश्चात् मां और बच्चे की देखरेख के लिए जाँच करना।

टिप्पणी

(g) पूर्व विद्यालयों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, ग्राम स्तरीय कार्यकर्ताओं एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के माध्यम से लोगों को शिक्षित करना।

(h) जनसमूह में टेलीविजन, रेडियो एवं अन्य मास मीडिया के माध्यम से अशक्तताओं के कारण एवं निवारण मानकों को अपनाते हुए जागरूकता उत्पन्न करना।

शिक्षा

केंद्र एवं राज्य सरकारें तथा स्थानीय सत्तायें सुनिश्चित करेंगी कि प्रत्येक अशक्त बच्चा 18 वर्ष की उम्र तक मुफ्त एवं पर्याप्त शिक्षा पहुंचे।

रोजगार

सरकार पदों को पहचानेगी जो अशक्त लोगों के लिए आरक्षित हो सकती है। ये आरक्षण 3% से कम नहीं होंगे जिसका 1% नीचे वर्णित प्रत्येक अशक्तताओं के लिए आरक्षित होगी।

1. अंधता या कम दृष्टि

    1. श्रवण बाधिता

    2. गति प्रेरक अशक्तता या प्रमस्तिष्क पक्षाघात

सकारात्मक कार्य

सरकार अशक्त व्यक्तियों को साधन एवं उपकरण प्रदान करेगी तथा अशक्त लोगों को घर, व्यवसायों, विशिष्ट मनोरंजन केंद्रों, विशेष विद्यालयों, शोध केंद्रों एवं फैक्टरियों के लिए रियायती दरों पर जमीन आवंटन करेंगी।

भेदभाव नहीं

सरकारी परिवहन उनकी सुविधाओं एवं सुखों को अपनाने के लिए विशेष मानक अपनायेंगे ताकि वे अशक्त लोगों तक आसानी से पहुंच सकें, व्हील चेअर वालों के लिए भी। अपनी क्षमता के अन्तर्गत सरकार एवं स्थानीय सत्तायें भी लाल प्रकाशों के साथ श्रवण संकेतों को प्रदान करते हैं, व्हील चेअर वालों के लिए चौराहों का प्रारूप बनायेंगे तथा अंधे लोगों के लिए जेब्रा लाइन उत्कीर्ण करेंगे। अशक्त लोगों के लिए उपयुक्त स्थानों पर चेतावनी संकेत प्रदान किये जायेंगे। भवनों एवं शौचालयों को रैम्पों एवं अन्य गुणों के साथ बनाया जायेगा ताकि व्हील चेअर प्रयोग करने वाले वहां पहुंच सकें। सेवा के दौरान अशक्त होने वाले कर्मचारी को कोई नियोक्ता बर्खास्त नहीं कर सकेगा। बल्कि कार्य के प्रकार के आधार पर इसे रोकने का प्रबंध करेगा।

शोध एवं मानवशक्ति विकास

सरकार एवं स्थानीय सत्तायें अशक्तता रोकने, अशक्त को पुनर्स्थापित करने, सहायक उपकरणों

टिप्पणी

को विकसित करने, अशक्त के लिए नौकरी पहचानने तथा फैक्टरियों एवं कार्यालयों में अशक्तता पूर्व संरचनात्मक लक्षण विकसित करने को प्रोन्नत करेंगी तथा धन उपलब्ध करायेंगी।

गंभीर अशक्त लोगों के लिए संस्थान

80% या अधिक अशक्तता वाले लोग गंभीर अशक्तता वाले लोगों में माने जाते है। सरकारें उनके लिए संस्थानों को स्थापित करेंगी और उनकी देख रेख करेंगी। जहां प्राइवेट संस्थान हैं जो सरकारी मानकों को मानते हैं वे गंभीर अशक्त लोगों के लिए उपर्युक्त संस्थान के रूप में जाने जायेंगे।

अशक्तों के लिए मुख्य आयुक्त एवं आयुक्तों

केंद्र सरकार अशक्त लोगों के कानून के कार्यान्वयन के लिए एक मुख्य आयुक्त की नियुक्ति करेगी। मुख्य आयुक्त, आयुक्तों के कार्यों का समन्वय करेगा, अशक्त लोगों के लिए केंद्र सरकार द्वारा दिये गये कोषों के इस्तेमाल का निरीक्षण करेगा, अशक्त लोगों के लिए उपलब्ध सुविधाओं एवं अधिकारों को सुनिश्चित करेगा एवं इस कानून के कार्यान्वयन पर केंद्र सरकार को एक वार्षिक रिपोर्ट जमा करेगा।

8.4.3 अशक्त लोगों के अधिकारों का बिल, 2011

प्रस्तावित बिल अशक्त लोगों की समानता को मान्यता देता है एवं अशक्तता अध्ययन केंद्र, NALSAR यनिवर्सिटी ऑफ लॉ के द्वारा तैयार किया गया है। अशक्तता कानून, 1995 ने क्षति पर आधारित अशक्तता की सम्पूर्ण परिभाषा प्रदान किया है। फलस्वरूप, बाधित लोग कानून में वर्णित नहीं हैं जो कानून में माने गये अधिकारों एवं हकों से वंचित कर दिये जाते हैं।

प्रस्तावित अधिनियम के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं:

- सभी अशक्त लोगों को गारंटी समानता एवं भेदभाव नहीं: अशक्त लोगों के अधिकार बिल, 2011।
- सभी अशक्त लोगों की वैधानिक क्षमता को पहचानना तथा ऐसी वैधानिक क्षमता के अभ्यास के लिए जहां अपेक्षित है समर्थन के लिए प्रावधान करना।
- अशक्त औरतों द्वारा सामना किये जाने वाले बहु एवं गंभीर भेदभाव को पहचानना एवं दोनों अधिकारों में लैंगिक समझ प्रवेश कराना तथा कार्यक्रमानुसार हस्तक्षेप।
- अशक्त बच्चों की विशेष दोषपूर्णता को पहचानना एवं सुनिश्चित करना कि वे अन्य बच्चों के साथ एक समान आधार पर व्यवहार किये जाते हैं।
- अशक्त लोग जो अपने घरों में बंद हैं, परित्यक्त है, पृथक है या संस्थानों में रह रहे हैं तथा उन्हें उच्च समर्थन की जरूरत हैं के लिए उपसक्रिय हस्तक्षेपों का शासनादेश जारी करना।

टिप्पणी

- राष्ट्रीय एवं राज्य अशक्तता सत्ता स्थापित करना जो अशक्तता नीति तथा अशक्तों की सक्रिय भागीदारी के कानून को सुसाध्य बनाने का सूत्रण करती है। अशक्त लोगों के विरुद्ध उपस्थित संरचनात्मक भेदभाव को विखंडित करना तथा सुरक्षा के लिए इस कानून के अंतर्गत प्रवर्तित नियमों के देय अनुपालन को लागू करना तथा इस कानून में प्रत्याभूत सभी अधिकारों को प्रोन्नत एवं उपभोग करना।
- गलत कार्यों एवं अनाचरण के लिए विशिष्ट सिविल एवं आपराधिक सजायें देना।

प्रगति जाँच-2

1. UNCRPD का पूर्ण रूप लिखें।

.....

.....

.....

2. PWD-ACT का पूर्ण रूप लिखें।

.....

.....

.....

3. केन्द्रीय सूची में क्या आता है तथा इस पर कानून कौन बनाता है?

.....

.....

.....

4. समवर्ती सूची में क्या आता है तथा इस पर कानून कौन बनाता है?

.....

.....

.....

5. राज्य सूची में क्या आता है तथा इस पर कानून कौन बनाता है।

.....

.....

.....

टिप्पणी

8.5 सारांश

जैसा कि कोई भी व्यक्ति जानता है, प्रत्येक बच्चा एक परिवार में जरूरतों के अभाव में अन्य चीजों के बीच प्यार और देखभाल के लिए पोषण, भोजन, वस्त्र एवं शिक्षा पाने आता है। विशेष जरूरतों वाला बच्चा मूलत: वह बच्चा है जिसे अपनी अद्भूत चिकित्सिय या विकासात्मक परेशानियों के कारण उसके साथियों से अधिक उसकी जरूरतें होती हैं। विशेष जरूरतों का विस्तार सामान्य से अधिक गंभीर तक है। अधिकांश विशेष जरूरतें उपचार या विशेष कार्यक्रमों और सेवाओं को अच्छी तरह प्रतिक्रिया देती हैं।

शिक्षक बच्चे की अधिकांश जरूरतों को निष्पादित करने में एक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अशक्तता कानून, 1995 और UNCRPD अधिकार अभिभावकों एवं अन्य साझीदारों को इसे वर्णित करने में शिक्षक के लिए एक महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।

CWSN से निपटते समय शिक्षक की भूमिका बहुत निर्णायक है, वह प्रत्येक अशक्तता के अर्थ को समझता है, बच्चे को पहचानता है और इसे वर्गीकृत करता है कि किस समूह की अशक्तता से यह संबंध रखता है तथा बाद में बच्चे को मूल्यांकन के लिए एक पेशेवर के पास भेजता है तथा एक बार जब मूल्यांकन हो जाता है, वह आगे के हस्तक्षेप के लिए संयुक्त रूप से पेशेवरों, अभिभावकों के साथ कार्य की योजना कर सकते हैं।

8.6 प्रगति जांच के उत्तर

प्रगति जाँच-1

(1) प्रतीक्षारत बच्चे

(2) 20/200

(3) भाषा

(4) दृष्टि बाधिता

प्रगति जाँच-2

(1) UNCRPD–United Nations Conventions on the Rights of Person with Disabilities.

(2) PWD Act–Person with Disability Act.

(3) केंद्र – रक्षा

(4) समवर्ती – स्वास्थ्य

(5) राज्य – अशक्तता

टिप्पणी

8.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तकें

राव इन्दुमति : समावेशी शिक्षा पर एक पाठ्य पुस्तक (2003), CBR नेटवर्क बैंगलोर

राव इन्दुमति : ABC of CBR (2010), CBR नेटवर्क, बैंगलोर

http://retabcouncil.nic.in

http://trace.wisc.edu

http://en.wikipedia.org

8.8 इकाई अन्तः अभ्यास

- PWD Act 1995 के महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की सूची बनायें।
- सभी क्षतियों एवं उनके संभावित कारणों की सूची बनायें।

टिप्पणी

परिशिष्ट-1

प्राथमिक मूल्यांकन के लिए शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित प्रश्नावलियाँ प्रयुक्त की जा सकती हैं:

फार्म-4

6-14 वर्ष का आयु समूह

ग्राम का नाम : **मकान संख्या :** **बच्चों की संख्या :**

(a) बच्चे का नाम :

(b) आयु :

(c) पिता का नाम :

(d) माता का नाम :

निम्नलिखित प्रश्नों के सही जवाबों के सामने (√) का चिह्न लगायें :

1. क्या जन्म निर्धारित समय से पहले हुआ? हाँ ना नहीं जानते
2. वाणी विकास में क्या कोई देर हुई है? हाँ ना नहीं जानते
3. उस आयु समूह के अन्य बच्चों से तुलना किया था, क्या निम्नलिखित में देर हुई थी?
   बैठने में हाँ ना नहीं जानते
   खड़े होने में
   चलने में
   बोलने में
4. क्या बच्चा अच्छी तरह दौड़ता है? हाँ ना नहीं जानते
5. क्या बच्चा बोलने की अपेक्षा संकेत का उपयोग करता है? हाँ ना नहीं जानते
6. क्या पाठों को पढ़ने में आंखों का उपयोग करने में तथा
   दैनिक गतिविधियों को करने में कोई परेशानी होती है? हाँ ना नहीं जानते
7. क्या बच्चे से बात करते समय समझने में उसे कोई परेशानी होती है?
   हाँ ना नहीं जानते
8. क्या बच्चे को सुनने में कोई परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते
9. उसकी आयु समूह के अन्य बच्चों से तुलना करते समय क्या बच्चे को कोई परेशानी हुई?
   सीखने में हाँ ना नहीं जानते
   समझने में
   याद करने में और अन्य गतिविधियों में

टिप्पणी

10. क्या बच्चा दूसरों के साथ अच्छी तरह मिल जाता है? हाँ ना नहीं जानते

11. क्या बच्चे में कोई शारीरिक अशक्तता है? हाँ ना नहीं जानते

12. क्या अन्यों को आपके बच्चे की बात समझने में कोई परेशानी होती है?

हाँ ना नहीं जानते

13. क्या आपके बच्चे की बात को बच्चे के परिवार से बाहर के लोगों को समझने में समस्या होती है? हाँ ना नहीं जानते

14. क्या बच्चा बात करता है? हाँ ना नहीं जानते
(उनके लिए जो फार्म भरते हैं)

क्या वे सूचना देने से इन्कार करते हैं?

क्या परिवार के सदस्य अनुभव करते है कि आपको सूचना प्रदान करने का उपयोग नहीं है?

याद रखें :

यदि खाने में एक भी (√) निशान है तो विस्तृत मूल्यांकन फार्म भरना जरूरी है।

6-14 वर्ष की आयु के बच्चों में हानि की पहचान के लिए विस्तृत फार्म

गांव का नाम : **मकान संख्या :**

बच्चों की संख्या :

(a) बच्चे का नाम :

(b) आयु :

(c) पिता का नाम :

(d) माता का नाम :

निम्नलिखित प्रश्नों के सही जवाबों के सामने (√) का चिह्न लगायें :

1. जब अन्य बच्चों के साथ तुलना किया तो क्या आपके बच्चे को चलने में परेशानी होती है? हाँ ना नहीं जानते
2. क्या बच्चा बिना समर्थन के बैठता है? हाँ ना नहीं जानते
3. क्या बच्चा दैनिक गतिविधियों जैसे नहाना, खाना आदि स्वयं करता है? हाँ ना नहीं जानते
4. क्या बच्चा बातों एवं निर्देशों को समझता है? हाँ ना नहीं जानते
5. क्या देखने में कोई परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते
6. क्या बच्चा 19 फीट की दूरी से अंगुलियों को गिन सकता है? हाँ ना नहीं जानते
7. क्या बच्चा 5 फीट की दूरी से अंगुलियों को गिन सकता है? हाँ ना नहीं जानते
8. क्या बच्चा पुस्तक में चित्रों को पहचान लेता है? हाँ ना नहीं जानते
9. क्या सुनने में कोई परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते
10. क्या पीछे से 10 फीट की दूरी से बच्चे का नाम पुकारा जाता है तो वह जवाब देता है? हाँ ना नहीं जानते
11. क्या पीछे से 5 फीट की दूरी से बच्चे का नाम पुकारा जाता है तो वह जवाब देता है? हाँ ना नहीं जानते
12. क्या बच्चा साफ-साफ बोलता है? हाँ ना नहीं जानते
13. क्या अन्यों को बच्चे की बात समझने में कोई परेशानी होती है? हाँ ना नहीं जानते
14. क्या बच्चे को दौरा आता है? यदि हां तो हाँ ना नहीं जानते

टिप्पणी

(a) प्रतिदिन हाँ ना नहीं जानते

(b) सप्ताह में एक बार हाँ ना नहीं जानते

(c) महीने में एक बार हाँ ना नहीं जानते

(d) छः महीने में एक बार हाँ ना नहीं जानते

(e) क्या बच्चा दवाई लेता है? हाँ ना नहीं जानते

(f) क्या बच्चे का परीक्षण डॉक्टर से हुआ है? हाँ ना नहीं जानते

15. छोटे कार्यों को करते समय बच्चा गिर जाता है, पकड़े हुए सामान को नहीं छोड़ता है? हाँ ना नहीं जानते

16. क्या बच्चा नाक से अपशिष्ट निकालते समय शान्त रहता है? हाँ ना नहीं जानते

17. उसकी आयु के अन्य बच्चों से तुलना करते समय क्या बच्चा कम बुद्धिमान प्रतीत होता है? हाँ ना नहीं जानते

18. क्या बच्चा अपनी गतिविधियों में हमेशा सुस्त रहता है? हाँ ना नहीं जानते

19. उसकी आयु के अन्य बच्चों से तुलना करते समय क्या बच्चे को काम पर केंद्रित करने में परेशानी होती है? हाँ ना नहीं जानते

20. अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में क्या बच्चा नुकसान करता है? हाँ ना नहीं जानते

21. क्या बच्चा अपनी आयु के बच्चों की बजाय छोटे बच्चों के साथ मिलना पसंद करता है? हाँ ना नहीं जानते

22. क्या बच्चा आग, पानी के खतरों को जानता है? हाँ ना नहीं जानते

23. क्या बच्चा अपना नाम बोलता है? बोलना है नहीं नहीं जानते

24. क्या बच्चा आंखों से पूर्ण स्राव से पीड़ित है? हाँ ना नहीं जानते

25. क्या बच्चा हमेशा अपनी आंखों को रगड़ता है? रगड़ता है नहीं रगड़ता नहीं जानते

26. क्या पढ़ने, लिखने, देखने में दृष्टि की कोई गंभीर समस्या है? हाँ ना नहीं जानते

27. क्या बच्चा अपने आप बिना किसी भी सहायता के चलता है? चलता है नहीं चलता नहीं जानते

28. क्या विद्यालय में दौड़ने या व्यायाम करने में कोई परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते

29. अन्यों की तुलना में पढ़ाई/खेल में प्रगति कम है? हाँ ना नहीं जानते

30. क्या वह पुस्तकों और वस्तुओं को सावधानीपूर्वक और स्पष्टता से रखता है/रखती है?
हाँ ना नहीं जानते

31. अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में क्या वह कार्य धीरे-धीरे करता है?
हाँ ना नहीं जानते

32. क्या बच्चा कान-दर्द से पीड़ित है? हाँ ना नहीं जानते

33. क्या कान से कोई स्राव होता है? हाँ ना नहीं जानते

34. क्या कहानी कहने या अंक गणित में कोई परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते

35. क्या बच्चा बात को सुनते समय पूरी तरह घूम जाता है? हाँ ना नहीं जानते

36. क्या बच्चा प्राय: स्वयं को चोट पहुंचाता है? हाँ ना नहीं जानते

37. क्या बच्चा स्वयं से बातें करते समय लगातार आवाज निकालता है?
हाँ ना नहीं जानते

38. क्या बच्चा चश्में का प्रयोग करता है? हाँ ना नहीं जानते

39. क्या बच्चा श्रवण यंत्र का प्रयोग करता है? हाँ ना नहीं जानते

40. क्या सुनने में थोड़ी परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते

41. क्या बच्चे को सुनने में पूर्ण समस्या हो सकती है? हाँ ना नहीं जानते

42. क्या एक पैर में कोई समस्या है? हाँ ना नहीं जानते

43. क्या दोनों पैरों में कोई समस्या है? हाँ ना नहीं जानते

44. क्या वह अच्छी तरह नहीं चलता/चलती है? हाँ ना नहीं जानते

45. क्या दोनों हाथों में कोई समस्या है? हाँ ना नहीं जानते

46. अपनी आयु के अन्य बच्चों की तुलना में लिखने में कोई समस्या है?
हाँ ना नहीं जानते

47. क्या कोई अन्य परेशानी है? हाँ ना नहीं जानते

इकाई-9 विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शिक्षा

टिप्पणी

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 अधिगम उद्देश्य

9.2 विशेष जरूरतों वाले बच्चों (CWSN) की शैक्षिक-चुनौतियां

9.2.1 CWSN के अधिगम अभिलक्षण

9.2.2 CWSN की जरूरतें एवं शैक्षिक प्रणाली

9.3 पाठ्यक्रम अनुकूलन

9.3.1 पाठ्यक्रम अनुकूलन के लिए आवश्यकता

9.3.2 CWSN की जरूरतों को जानने के लिए पाठ्यक्रम अनुकूलन

9.3.3 CWSN के लिए मूल्यांकन विधियों का अनुकूलन

9.4 CWSN की अधिगम जरूरतों को पोषित करने के लिए सुविधायें

9.4.1 विद्यालय, कलस्टर, प्रखंड, जिला एवं राज्य स्तरों पर

9.4.2 अशक्त बच्चों को समावेशी शिक्षा

9.5 समावेशी कक्षा-कक्ष

9.5.1 कक्षा-कक्ष समायोजन एवं प्रबंधन

9.5.2 उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीक (ICT) का उपयोग

9.6 गृह आधारित शिक्षा

9.6.1 संकल्पना

9.6.2 गृहआधारित शिक्षा की क्रियाविधि

9.7 सारांश

9.8 प्रगति जांच के उत्तर

9.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

टिप्पणी

9.0 परिचय

एक शिक्षक के रूप में, आप विविध योग्यताओं वाले बच्चों को पढ़ा चुके है। आपने विशेष जरूरतों वाले बच्चों को भी पढ़ाया होगा। कुछ बच्चों की उनकी अशक्तताओं जो दृश्य हैं के कारण विशेष जरूरतें होती है जैसे–जन्म से, पोलियो या दुर्घटना के कारण, अंगों का प्रभावित होना, कुछ में अंधता या कम दृष्टि हो सकती है तथा कुछ श्रवण क्षति के हो सकते हैं। कुछ बच्चों की अशक्ततायें अदृश्य हैं जैसे बौद्धिक अशक्तता (प्रारंभ में मानसिक मन्दन के रूप में जाना जाता था) तथा कुछ विशिष्ट अधिगम अशक्तता वाले। आप जानते हैं कि हमारे देश में शिक्षा सभी बच्चों का एक मौलिक अधिकार है। इसी क्रम में, हमारे देश में अशक्त लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए अधिनियम है जिसे अशक्त लोगों का कानून (समान अवसरों, अधि कारों की रक्षा-पूर्ण भागीदारी) 1995 (PD Act 1995) के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में यह काननू संशोधित हो चुका है। कानून आगे शिक्षा के अधिकार पर प्रकाश डालता है। विशेष जरूरत वाले बच्चे (CWSN) जिसे सर्व शिक्षा अभियान (SSA) में नोट किया गया है सभी अशक्त बच्चों को शामिल करता है जिन्हें उपयुक्त शिक्षा प्रदान करना है। इस इकाई में हम ऐसे बच्चों के अधिगम लक्षणों, पाठ्यचर्या अनुकूलनों एवं शिक्षण अधिगम सामग्रियों, सूचना एवं सन्प्रेषण तकनीक की भूमिका तथा विशेष जरूरत वाले बच्चों के समावेशन के लिए बनाये गये विविध प्रावधानों को देखेंगे। इन व्यवस्थाओं के बावजूद गंभीर अशक्तताओं वाले बच्चे भी हो सकते हैं जो विद्यालयों में जाने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। शिक्षा जैसा कि उनका अधिकार है, केवल यही उपयुक्त है कि शिक्षा उनके दरवाजे तक पहुंचे। इसलिए इस इकाई में हम ऐसे बच्चों के लिए गृह आधारित निर्देशों के अंतर्गत की गई व्यवस्थाओं के बारे में भी चर्चा करेंगे।

9.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप सक्षम होंगे:

- CWSN के अधिगम लक्षणों का वर्णन करने में।
- शैक्षिक प्रणाली पर चर्चा करने और CWSN पर इसके प्रभावों पर चर्चा करने में।
- CWSN की जरूरतों को जानने के लिए पाठ्यक्रम अनुकूलन में कौशलों का निरूपण करने में।
- विद्यालय, क्लस्टर, प्रखंड, जिला एवं राज्य स्तरों पर सुविधाओं का वर्णन करने में।
- उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करने या उपयोग करने में तथा CWSN वाली कक्षाओं को व्यवस्थित करने में।
- गृह आधारित शिक्षा/अनुदेश की समझ को निरुपित करने में।

टिप्पणी

9.2 CWSN की शैक्षिक चुनौतियां

एक शिक्षक के रूप में आपने 35 बच्चों वाली कक्षा का उपयोग किया होगा तथा आपने आराम से पाठ को पढ़ाया है। ऐसा इसलिए क्योंकि बच्चे एक दिये गये उम्र एवं कक्षा के हैं तथा सामान्यत: उनकी योग्यता समान है तथा उनकी क्षमता का एक निश्चित सीमा है। जब आपके पास आपकी कक्षा में एक CWSN है तो संभव है उसकी निश्चित जरूरते हों जो कि पूरी होनी हैं। बच्चों की अशक्तता जो उनमें हैं के आधार पर उनकी जरूरतें बच्चे-बच्चे में बदलेंगी। उदाहरणार्थ–एक श्रवण बाधित बच्चे की जरूरत बोर्ड को या दृश्यों को देखने के लिए पर्याप्त प्रकाश की हो सकती है एवं शिक्षक को स्पष्टता से बात करनी चाहिए तथा उसे चेहरे पर देखने की अनुमति देनी चाहिए ताकि वह ओठों को पढ़ सके। दूसरी तरफ एक अंधे बच्चे को मौखिक अनुदेशों एवं स्पर्श सामग्री की जरूरत होगी जिसे वह छू सके और सीख सके जब शिक्षक दृश्यों का उपयोग करता है। एक मानसिक मन्दन वाले बच्चे को एक संकल्पना को समझने के लिए मूर्त सामग्री एवं अनुदेशों की पुनरावृति को जरूरत होगी। एक गति प्रेरक बच्चे को जरूरत पर आधारित शारीरिक समर्थन की जरूरत होगी। अब हम देखेंगे कि आप कैसे अपनी कक्षा में ऐसे बच्चों की व्यक्तिगत जरूरतों को पहचानेंगे एवं संबोधित करेंगे।

9.2.1 CWSN के अधिगम अभिलक्षण

सभी बच्चे एक समान नहीं होते हैं तथा बच्चों की विविध शक्तियां एवं जरूरतें हो सकती है। ऐसी एक समझ अन्यों की सहायता की ओर एक कदम है साथ-ही-साथ एक समावेशी कक्षा-कक्षा में सहायता चाहती है। व्यस्क जीवन के लिए यह एक आवश्यक कौशल है क्योंकि मानव सत्तायें एक दूसरे पर निर्भर है और स्वतंत्र भी। प्रारंभिक जीवन में ऐसी एक समझ एक अच्छा नागरिक होने के मूल्यों को प्रोन्नत करता है। यह सकारात्मक अन्तर्निभरता का नेतृत्व करता है।

एक गति अशक्त बच्चा अपने हाथों एवं पैरों को शामिल कर कक्षा-कक्ष में किसी अन्य बच्चे के समान सीखेगा। यदि उसके हाथ प्रभावित हैं तो उसे लिखने और वस्तुओं के परिचालन में परेशानी होगी, यदि पैर प्रभावित हैं तो घूमने में परेशानी होगी। ऐसे बच्चों को उसकी अशक्तता की क्षतिपूर्ति के लिए साधनों एवं उपकरणों से उपयुक्त समर्थन की जरूरत होगी।

एक श्रवण बाधित बच्चा अपने दृष्टिकोण एवं कुछ प्रसार, अपने स्पर्श एवं गतिबोधक संवेदना का प्रयोग कर प्रबलतापूर्वक सीखने की ओर प्रवृत होता है। याद रखें कि एक श्रवण बाधित बच्चा कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के समान है, इसके अतिरिक्त कि वह स्वयं में श्रवण प्रभावित का संकाय है। वह बोल नहीं सकता क्योंकि वह सुनता नहीं है। जो व्यक्ति बच्चे से बात कर रहा है उसके चेहरे पर देखना बच्चे की सहायता करता है क्योंकि वह उनके ओठों को पढ़ता है। चॉक, बोर्ड एवं चार्ट तथा दृश्यों का पढ़ाने में उपयोग करना नियमित कक्षाकक्ष में सीखने में उनकी सहायता करता है। बचचे को हमेशा निर्धारित श्रवण यंत्र पहनने के लिए प्रोत्साहित करें। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो उसे टीम से मूल्यांकन प्राप्त करने का आग्रह करें जो

टिप्पणी

प्रमाणित करता है और मुफ्त श्रवण यंत्र प्रदान करता है। यह सरकार का एक प्रावधान है तथा यह सुनिश्चित करना हमारा कर्तव्य है कि प्रत्येक बच्चे का श्रवण परीक्षण हो चुका है और उसे आवश्यक सहायता प्रदान किया जा चुका है।

वैधानिक रूप से, दृष्टि बाधिता अंधता एवं कम दृष्टि को शामिल करता है। एक बच्चा जो पूरी तरह से अंधा है, अपनी श्रवण शक्ति एवं स्पर्श/अतिबोधक संवेदनाओं का उपयोग कर सीखता है। वह एक देखने वाले व्यक्ति की अपेक्षा गंध की संवेदना का अधिक उपयोग भी करता है। उदाहरण के लिए यदि आप कक्षा में प्रवेश करते हैं तो वह आपके बोलने से पहले, प्रतिदिन आपके लगाने वाले इत्र से आपकी उपस्थिति को जान जायेगा। एक कम दृष्टि वाला बच्चा विशेष रूप से निर्धारित चश्मा पहनता है और अपनी उपलब्ध दृष्टि का उपयोग कर पढ़ता है। फिर भी उसे बड़ा प्रिन्ट एवं विषम पृष्ठभूमि जरूरी होगा। कक्षा में बच्चों की जरूरतों एवं उपयुक्त रूप से की जा रहीं व्यवस्थाओं का मूल्यांकन करते समय बच्चे का समावेशन अग्रणी होगा।

विशिष्ट अधिगम अशक्तता एक स्थिति है जो PD Act द्वारा आवृत नहीं है जिसमें बच्चा खराब शैक्षिक निष्पादन दिखाता है यद्यपि उसमें कोई बौद्धिक या अन्य अशक्ततायें नहीं है। विशिष्ट अधिगम अशक्तता वाले बच्चे की तंत्रिका की स्थिति के कारण सूचना के क्रियान्वयन में परेशानी होती है तथा पढ़ने में (डिसलेविसया) जैसे लक्षणों को प्रदर्शित करता है, लिखने में डिस्ग्राफिया, तथा गणितीय संक्रियाओं (डिसकैलकुलिया) में परेशानी होती है। ध्यान, स्मरण, तर्कशीलता एवं स्वयं को संघटित करने से संबंधित कुछ समस्यायें प्रदर्शित होती हैं। सावधानीपूर्वक मूल्यांकन एवं कार्यक्रम की योजना उनकी अधिगम समस्याओं से पार पाने को एक वृहद विस्तार देता है।

विकासात्मक अशक्तताओं वाले बच्चे जैसे बौद्धिक अशक्तता (मानसिक मन्दन), आटिज्म, प्रमस्तिष्क पक्षाघात (CP) या बहु अशक्तताओं वालों के विशिष्ट अधिगम अभिलक्षण होंगे। बौद्धिक अशक्तता वाला बच्चा धीरे-धीरे सीखेगा तथा उसमें पढ़ाई सामग्री को ग्रहण करने की सीमित क्षमता होगी। उन्हें मूर्त संकल्पनाओं को समझने में परेशानी होगी। CP वाला बच्चा सीखने में सक्षम होगा किन्तु उसे समन्वयन, गतिशीलता एवं बोली में परेशानी हो सकती है। यदि उसमें बौद्धिक अशक्तता भी है तो वह उन अधिगम अभिलक्षणों को भी प्रदर्शित कर सकता है। ऑटिज्म वाले बच्चे को सामाजिक संबंधों तथा दूसरों से बात करने में परेशानी होगी। उनमें प्रतिबंधित रुचियां भी संभव हैं तथा उन्हें उपयुक्त समझ के साथ पढ़ाने की जरूरत होती है। उनमें से कुछ में बौद्धिक अशक्तता भी संभव है जो आगे चुनौती बन जाती है। बहु अशक्ततायें एक नाम को दिखाती हैं जिसमें दो या अधिक अशक्तताओं का संचय है तथा उनके लिए वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना जरूरी है।

9.2.2 शैक्षिक प्रणाली एवं CWSN जरूरतें

एक शिक्षक के रूप में आप हमारे शैक्षिक प्रणालियों से परिचित हैं। आप केंद्रीय बोर्ड या संबंधित राज्य शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालय में कार्यरत हो सकते हैं। जैसा भी प्रणाली द्वारा

टिप्पणी

अनुकरण किया जाता है। बच्चे दसवीं कक्षा तक कुछ विषयों को सीखते हैं। प्राय: बच्चे तीन भाषायें सीखते हैं, उनमें से एक निर्देश का माध्यम होता है। हमारे विद्यालयों में फारमेटिव एवं समेटिव मूल्यांकन हैं। फारमेटिव मूल्यांकन कक्षा जांचों के क्रम में प्रत्येक त्रैमासिक में किये जाते हैं तथा समेटिव मूल्यांकन वर्ष के अंत में किया जाता है। प्रारंभिक वर्षों में इन मूल्यांकनों का बच्चों को अगली कक्षा में प्रोन्नत करने के निर्णय में एक मुख्य भूमिका थी। जैसा कि आप जानते हैं, वर्तमान में स्वत: प्रोन्नत एवं न रोकने की नीति की प्रणाली ने स्थान ले लिया है। अधि कांश विद्यालयों में गतिविधि आधारित अधिगम एवं सतत् तथा समग्र मूल्यांकन किया गया है, विशेष रूप से CBSE (केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड) द्वारा संचालित विद्यालयों में।

इस दी गयी स्थिति में कई बार अशक्त बच्चे, विशेष रूप से वे जिनमें कम बौद्धिक अशक्तता या विशिष्ट अधिगम अशक्तता है वे अनदेखे रह जाते हैं। उदाहरण के लिए आप ऐसे छात्रों का पता लगा सकते हैं जो कक्षा VIII में पढ़ते हैं किन्तु कुछ विषयों में उनका निष्पादन कक्षा II या III जैसा है। उनकी प्रारंभिक पहचान महत्त्वपूर्ण है तथा उनके प्रारंभिक जीवन में उचित समर्थन प्रदान करता है ताकि समस्या आगे और जटिल नहीं हो। आप सहमत होंगे कि अशक्तता के कारण कम आत्म सम्मान, साथियों की स्वीकृति का अभाव या कभी-कभी शिक्षक उसे अनदेखा कर देते हैं जो बच्चे के मस्तिष्क में एक स्थायी चिह्न छोड़ जाता है जो उसके व्यक्तित्व का नाश कर देता है। एक शिक्षक के रूप में आपकी बच्चों की समस्याओं को पहचानने तथा उन्हें कुछ समर्थन प्रदान करने जिसमें सहपाठी भी उन्हें समझें एवं समर्थन दें में आपकी सार्थक भूमिका है।

अंधे विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त यंत्र एवं उपकरण जैसे ब्रेल, श्रवणबाधितों के लिए श्रवण यंत्र तथा गति चालक एवं शारीरिक अशक्तों के लिए गति यंत्र (जैसे–वॉकर, वैशाखी, व्हील चेयर, कैलिपर) तथा लेखन यंत्र (जैसे अनुकूलित पेंसिल एवं नोट बुक) उनकी चुनौतियों से निपटने के लिए प्रदान किया जाता है।

आगे चुनौतियों से निपटने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों के स्तर पर अशक्त बच्चों के लिए निश्चित लाभ एवं छूट प्रवर्तित किये गये हैं। कुछ उदाहरण शामिल हैं। एक अंधा या अधिगम अशक्त बच्चा को परीक्षा में लिखने के लिए एक व्यक्ति दिया जाता है जो उसके बोले गये जवाब को लिखता है। उन्हें तीन घंटे की परीक्षा में 30 मिनट अतिरिक्त दिये जाते हैं। एक श्रवण बाधित बच्चा द्वितीय/तृतीय भाषा नहीं पढ़ सकता है तथा उसे अन्य विषय से पुनर्स्थापित कर दिया जाता है।

प्रगति जांच-1

1. किन्हीं चार अशक्तताओं का नाम लिखें जो आपकी कक्षा में संभावित हैं।

.....

.....

.....

टिप्पणी

2. हमारे शिक्षा प्रणाली में स्थित चुनौतियों का वर्णन करें जो CWSN की समस्या को जटिल करती हैं।

.....

.....

.....

9.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन

एक अच्छा पाठ्यक्रम ज्ञान, कौशल एवं मूल्य प्रदान करने वाला होना चाहिए जो विद्यार्थियों के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समझ को प्रभावित करें। जब हम विशेष शिक्षा की बात करते हैं तो यह शिक्षा की पहुंच को अंतिम बिंदु तक सुनिश्चित करने से आगे का समय है तथा शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने पर लक्षित है। एक अच्छा पाठ्यक्रम शिक्षा में गुणवत्ता प्राप्त करने की कुंजी है। शैक्षिक सुधार केवल अकेले शिक्षक से सम्बद्ध नहीं है बल्कि नीति निर्माताओं, मीडिया एवं ऐसे नागरिकों से भी सम्बद्ध है। क्योंकि शिक्षा हमें एक प्रकार का नागरिक बनाती है जो हम हैं। पाठ्यचर्या का निर्णय शिक्षा के उद्देश्य से सम्बद्ध मान्यताओं एवं विश्वासों एवं इसके परिणामों के फायदे पर स्थापित किया गया है। प्रत्येक पाठ्यचर्या विद्यार्थियों की पूर्ण क्षमताओं को स्वीकार करने पर केंद्रित रहता है तथा उन्हें उत्पादक होने एवं समाज के सदस्यों को योगदान देने में सहायता करता है। जब हम अशक्त बच्चों, उनकी क्षमताओं एवं जरूरतों को देखते हैं तो वे विविध हैं एवं पाठ्यक्रम विषय वस्तु में अनुकूलन की मांग करती हैं तथा उद्देश्यों एवं अधिगम परिणामों से समझौता किये बिना संप्रेषण की मांग करते है।

9.3.1 पाठ्यचर्या अनुकूलन की जरूरत

"पाठ्यक्रम विकास संकल्पित प्रक्रिया है जिससे एक व्यक्ति या एक टीम विशेष अधि गमकर्ताओं के लिए शैक्षिक लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की पहचान करता है, एक उपयुक्त पाठ्यक्रम का प्रारूप बनाता है, अधिगमकर्ताओं के साथ पाठ्यक्रम क्रियान्वित करता है तथा इसके प्रभावों एवं प्रभाविताओं के मूल्यांकन के प्रकाश में इसे उन्नत करता है।" –शिक्षा का एक शब्दकोश (1981)

स्रोत : http://www.library,ualberta.ca/subject/education

परिभाषा में नोट किये गये मुख्य बिंदु है :

- अधिगमकर्ता का समूह
- पाठ्यक्रम विकसितकर्ताओं
- उपयुक्त पाठ्यक्रम के लक्ष्य

टिप्पणी

- क्रियान्वयन
- पाठ्यक्रम की उन्नति

यह प्रदर्शित करता है कि पाठ्यचर्या विकास एक सतत् प्रक्रिया है जिसे प्रवृत्तियों में परिवर्तनों के प्रभावों पर आधारित उन्नति अपेक्षित है। पाठ्यचर्या विकास विद्यार्थियों को सर्वोत्तम प्रदान करने के लक्ष्य के साथ प्रवर्धित है।

विद्यार्थियों की अधिगम वस्तुओं में सीमित रुचि है क्योंकि वे नहीं समझते है या फिर विषय वस्तु उनके लिए अप्रासंगिक प्रतीत होता है। यह विद्यार्थियों में न केवल प्रेरणा के अभाव को पैदा करता है बल्कि बोरियत या कुंठा के कारण चुनौतीपूर्ण व्यवहार भी पैदा करता है। यदि शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विषय वस्तु को अधिक अर्थवान बनाता है तो उसकी रुचि का स्तर बढ़ेगा और कुंठा कम होगी। इसे करने के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण पद्धति का प्रवर्धित होना जरूरी है। समावेशी व्यवस्था में शिक्षक जिस अन्य चुनौती का सामना करता है, वह है परीक्षाओं के लिए बच्चे को तैयार करना जो एक दृढ़ पैटर्न का अनुकरण करता है। नियमित विद्यालयों में अशक्त बच्चों के सफलतापूर्वक समावेशन के लिए पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रणाली में अनुकूलन अनिवार्य है।

9.3.2 CWSN की जरूरतों को जानने के लिए पाठ्यक्रम का अनुकूलन

विषय वस्तु का अनुकूलन–सामान्यत: अनुकूलन समायोजनों एवं आधुनिकीकरणों को शामिल करता है।

समायोजन–शिक्षण एवं अधिगम में निवेश एवं निर्गम प्रक्रियाओं में परिवर्तनों को दिखाता है। यह कार्य विषय वस्तु या मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन नहीं करता है। समायोजन उदाहरण के लिए वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों को शामिल कर सकता है जैसे–करके सीखना, विडीयो टेप, बोलती पुस्तकें, ब्रेल एवं अन्य जबकि अन्य बच्चे पारंपरिक शिक्षण से सीखते हैं।

आधुनिकीकरण–विषय वस्तु या मानकों में स्वयं परिवर्तनों को दिखाता है। उदाहरण के लिए–आधुनिकीकरण का अर्थ सीखने के लिए कम विषय वस्तु, विषय वस्तु का अन्य के साथ प्रतिस्थापन, प्राप्त करने के लिए विभिन्न उद्देश्य या विभिन्न मूल्यांकन पैटर्न हो सकता है। एक विद्यार्थी जो बधिर है उसे द्वितीय भाषा को अन्य कार्य अनुभव या विभिन्न पाठ्यक्रम से प्रतिस्थापित करने की स्वीकृति है, पाठ्यक्रम में आधुनिकीकरण कहलाता है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन - विलोपन, प्रतिस्थापन, विस्तारण

हमने चर्चा किया कि पाठ्यचर्या अनुकूलन समायोजन एवं आधुनिकीकरण की मांग करता है। यह विभिन्न उप चरणों जैसे–आधुनिकीकरण, प्रतिस्थापन या जरूरत के अनुसार विषय वस्तु के विलोपन को शामिल करता है। हम इसे विस्तार से देखते हैं :

विलोपन, पाठ्यचर्या से निश्चित विषय क्षेत्रों को हटाने को दिखाता है। उदाहरण के लिए–केंद्र एवं राज्य के शिक्षा बोर्डों ने अशक्त विद्यार्थियों के लिए छूट प्रदान किया है। जैसा कि हमारे

देश में शिक्षा में त्रि-भाषा नीति है जिसमें पाठ्यचर्या में निर्देश का माध्यम, द्वितीय भाषा एवं तृतीय भाषा शामिल है, श्रवण बाधित एवं विशिष्ट अधिगम अशक्तताओं वाले विद्यार्थियों को सभी तीनों भाषाओं को सीखने में परेशानी है। माध्यमिक शिक्षा बोर्डों ने एक भाषा छोड़ने की अनुमति दी है। ऐसे बच्चों को तीसरी भाषा जरूरी नहीं है।

पाठ्यचर्या में पाठ भी हैं जो विलोपित किये जाने हैं जैसे अंधे बच्चे के लिए रंग की संकल्पना या बहरे बच्चे के लिए संगीत।

प्रतिस्थापन, विषय वस्तु का प्रतिस्थापन एक विषय क्षेत्र से दूसरे विषय क्षेत्र में परिवर्तित करना कहलाता है। विलोपन के उदाहरण के अंतर्गत हमने देखा कि कि बहरे बच्चों के लिए द्वितीय भाषा हटा दी गई है। कुछ शिक्षा बोर्डों में इसे कम्प्यूटर एप्लीकेशन, कार्यानुभव एवं अन्य को एक विषय के रूप में शामिल करते हुए हटा दिया गया है। यह विषय का प्रतिस्थापन है।

गति अशक्त बच्चों के लिए शारीरिक शिक्षा को फिजियोथेरेपी या किसी अन्य उपयुक्त पाठ्यसहगामी गतिविधियों जैसे संगीत के द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

विस्तारण–विस्तारण बच्चे को संकल्पना को समझने में सहायता करने के लिए पाठ्यचर्या विषयवस्तु को विस्तृत करना है। हम गणित में विषय वस्तु के शिक्षण पर विचार करते हैं जो कि मानसिक मन्दन वाले बच्चे के लिए धन की संकल्पना को शामिल करता है। जबकि कक्षा में अन्य सभी बच्चे अपने नोट बुक में जोड़ को लिखित में कर सकते हैं, मानसिक मन्दन वाले बच्चे के लिए इस संकल्पना को बेहतर समझने के लिए वास्तविक मुद्रा या खरीददारी अनुभव जैसे ठोस उदाहरणों को देना जरूरी है। यहां शिक्षक उसे वास्तविक जीवन का अनुभव देकर विषय वस्तु का विस्तार करता है और फिर जोड़ों पर मुद्रा संकल्पना को शामिल कर वर्क शीट के साथ समझाता है।

अधिगम के लिए समय में नमनीयता

अनुकूलन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू है समय। प्रत्येक शैक्षिक वर्ष के लिए पाठ्यचर्या सख्त ढंग से तैयार किया जाता है जो कक्षाओं के आयोजन, एवं फारमेटिव तथा समेटिव मूल्यांकन को आगे के समय के लिए अच्छी तरह तैयार करता है। वास्तव में शैक्षिक वर्ष के शुरू होने से पहले अनुसूची का अति सावधानीपूर्वक पालन किया जाता है। एक समावेशी कक्षाकक्ष में जहां विविध योग्यताओं एवं जरूरतों वाले बच्चे हैं वहां आधुनिकीकरण के लिए गतिविधियों के लिए समय के आवंटन पर विचार होना भी जरूर है। बौद्धिक अशक्तता वाले कुछ बच्चों को सीखने के लिए अतिरिक्त समय जरूरी है ताकि वो अपनी गति से सीखें। दृष्टि बाधित एवं विशिष्ट अधिगम अशक्तता वाले बच्चों को परीक्षा के लिए अतिरिक्त समय जरूरी है। जैसा पहले वर्णित है, कक्षा X एवं कक्षा XII के लिए शिक्षा बोर्ड ऐसे बच्चों को परीक्षा के दौरान 30 मिनट अतिरिक्त प्रदान करते है।

सामग्री अनुकूलन–जैसा कि आप जानते हैं कि विविध प्रकार की सामग्रियां विद्यालयों में प्रयुक्त होती हैं जिसमें मुद्रित सामग्री जैसे पुस्तकें, वर्क शीट एवं नोट बुक तथा अमुद्रित सामग्री

टिप्पणी

जैसे ग्लोब, विज्ञान लैब के उपकरण, मॉडल एवं वीडियो शामिल हैं। अशक्तता के प्रकार और विस्तार के आधार पर अनुकूल पर निर्णय लिया जाता है। सूची के रूप में मानवीकृत पाठ्यक्रम रखते हुए विषय वस्तु प्रतिस्थापन या विषय वस्तु समृद्धि के संदर्भ में कक्षा में विशिष्ट अशक्तताओं वाले बच्चों की जरूरत के अनुकूल अनूकूलन किया जा सकता है। प्रतिस्थापन एक विषय वस्तु का विलोप कर उसकी जगह दूसरा विषय वस्तु जोड़ने को दिखाता है। समृद्धि समय के साथ सीखे विषय वस्तु को समझ एवं धारण को बढ़ाने के लिए सामग्री एवं रणनीतियों के उपयोग को दिखाता है। ये दोनों अशक्त विद्यार्थी में अनुकूलतम अधिगम में सहायता करते हैं।

9.3.3 CWSN के लिए मूल्यांकन विधियों का अनुकूलन

अशक्त बच्चे के उपयुक्त जांच एवं मूल्यांकन का अनुकूलित होना जरूरी है। ये अनुकूलन जांच की संरचना में (वस्तुनिष्ठ/व्यक्तिनिष्ठ), जांच प्रशासन के समय (अतिरिकत समय यदि जरूरी है), जवाब देने की विधि (मौखिक, लिखित, परीक्षा लिखने के लिए एक लेखक का प्रावधान), जांच के दौरान बैठने की व्यवस्था (कम दृष्टि वाले बच्चे को पर्याप्त प्रकाश हो) ग्रेडिंग प्रक्रियाओं एवं अन्य में हो सकता है।

मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अंग एवं खण्ड है। मूल्यांकन विधियां मूलत: भिन्न नहीं होती हैं क्योंकि विद्यार्थियों का मूल्यांकन विषय वस्तु पर होता है जो कि उनके लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार सार्थक है। जबकि दृढ़ सामान्य शैक्षिक पर्यावरण में विद्यार्थी ने जांच स्थितियों (निर्धारित जांच एवं परीक्षाओं) के अंतर्गत स्वतंत्रतापूर्वक क्या प्राप्त किया है के आधार पर मूल्यांकित होता है। यद्यपि यह एक मानक अभ्यास है, अशक्त बच्चों के लिए निर्देशात्मक स्थितियों के साथ-साथ प्राकृतिक वातावरण के अंतर्गत वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन सर्वोत्तम है। अत्यधिक एकत्रित सूचना निर्दिष्ट निर्णय बनाने में शिक्षक की सहायता करता है कि बच्चे के अनुकूलतम अधिगम के लिए क्या अनुकूलित होना जरूरी है। परेशानी के स्तरों का निर्धारण सर्वोत्तम है जब बच्चे का विविध मूल्यांकन विधियों द्वारा कक्षा के अंदर एवं बाहर सतत मूल्यांकन होता है। औपचारिक जांच मूल्यांकन का एक अंग हो सकता है। कसौटी आधारित मूल्यांकन, पारिस्थितकीय मूल्यांकन, उपाख्यानात्मक रिकार्ड, अभिभावक द्वारा निर्धारण एवं विद्यार्थी द्वारा स्व-मूल्यांकन, सभी परेशानी के स्तर को निर्धारित करने के निर्णय में योगदान दे सकते हैं। विद्यार्थी के सही या गलत जवाबों में स्थिरता, अनुकूलन पर निर्णय लेने में शिक्षक के लिए मुख्य संकेत है। पाठ्यचर्या आधारित मूल्यांकन/मापन, अशक्त विद्यार्थियों के लिए स्थान निर्धारण एवं पाठ्यचर्या अनुकूलन के निर्णय लेने में लोकप्रिय है।

9.4 CWSN की अधिगम जरूरतों को पोषित करने के लिए सुविधायें

जैसा पहले वर्णित हैं, सरकार ने बच्चों की अधिगम जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रावधान बनाया है जो विशेष एवं समावेशी विद्यालयों की स्थापना, घर आधारित निर्देशों, पाठ्यचर्या एवं निर्देशात्मक अनुकूलन, परीक्षा प्रावधानों एवं उपर्युक्त सभी उपयुक्त मानवीय संसाधनों को CWSN की शैक्षिक चुनौतियों को पूरा करने के लिए शामिल करता है।

टिप्पणी

9.4.1 विद्यालय, क्लस्टर, ब्लॉक, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरों पर

सरकार की ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) में भी बच्चों जिसमें CWSN शामिल हैं की शिक्षा के लिए निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- 2003-04 में प्रारंभिक विद्यालयों से बच्चों के बीच में छोड़ने की दर को 52% से घटाकर 2011-12 में 20% करना।
- प्रारंभिक विद्यालय में शैक्षिक उपलब्धि के न्यूनतम मानकों को विकसित करना एवं शिक्षा की प्रभाविता की नियमित जांच-निरीक्षण कर गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- 7 वर्ष या ऊपर की आयु के लोगों की साक्षरता दर 85% तक बढ़ाना।
- साक्षरता में निम्नतम लैंगिक अंतर 10% तक करना।
- उच्च शिक्षा के लिए जा रहे प्रत्येक दस्ते की प्रतिशतता को वर्तमान 10% से बढ़ाकर योजना के अंत तक 15% करना।

उद्देश्यों को स्वीकार करने के लिए विकसित होते हैं और विद्यालय, प्रखंड, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरों पर लागू होते हैं। NIOS के अंतर्गत ये विविध पाठ्यक्रम नियमित विद्यालयों में अशक्त बच्चों को शामिल करने के लिए शिक्षकों को तैयार करने का ऐसा ही प्रयास है। सर्व शिक्षा अभियान सभी राज्यों द्वारा क्रियान्वित एक केंद्र संचालित योजना, भारत सरकार की एक अन्य मेगा परियोजना है जो देश में सभी बच्चों को शिक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखती है। SSA अधिक संख्या में विशेष शिक्षकों को नियुक्त कर CWSN की शिक्षा पर केंद्रित करता है तथा उनको प्रभावी शिक्षक होने के लिए प्रशिक्षण देता है। Rehabilation Council of India (RCI) जो पुनर्वास व्यवसायियों के मानक एवं गुणवत्ता को नियंत्रित एवं सुनिश्चित करता है, देशभर में संगठनों/विश्वविद्यालयों के माध्यम से विशेष शिक्षा में मानव संसाधनों को सृजित करता है। SSA के द्वारा नियुक्त ऐसे शिक्षक प्रखंड, जिला एवं राज्य स्तरों पर व्यवस्थित निरीक्षण द्वारा गांवों के विद्यालयों में CWSN तक पहुंचते हैं। प्रखंड के विद्यालयों में जरूरी साध न सामग्रियों एवं व्यावसायिक समर्थन प्रदान करने के लिए कुछ राज्यों में प्रखंड संसाधन केंद्र (BRC) स्थापित किये गये हैं। साधन शिक्षक प्रशिक्षण के परिभ्रामी मॉडल के माध्यम से बारी-बारी अधिक विद्यालयों तक पहुंचते हैं तथा विद्यालयों में शिक्षकों के साथ समन्वय कर बच्चों को पढ़ाते हैं। यह अपेक्षित है कि ऐसी एक प्रणाली देशभर में शिक्षा के साथ CWSN तक पहुंचेगी।

9.4.2 अशक्त बच्चों को समावेशी शिक्षा

गांवों एवं शहरी क्षेत्रों के बहुत से विद्यालयों में कम अशक्तता वाले बच्चे विद्यालय में प्रवेश पा जाते हैं किन्तु विद्यालय छोड़ने को प्रवृत हो जाते हैं क्योंकि शिक्षक उन्हें अन्य बच्चों के समान सीखने वाला नहीं पाते। नियमित विद्यालयों में शिक्षक ऐसे बच्चों को जोड़ने के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं, इसलिए वे बच्चे को विशेष समर्थन देने के लिए अभिभावकों को सूचित करने

की ओर प्रवृत होते हैं। कुछ अवसरों पर बच्चे नियमित विद्यालय में रहते हैं किन्तु प्रारंभिक कक्षाओं से हटा दिये जाते हैं क्योंकि पाठ्यक्रम की शैक्षिक विषय वस्तु बढ़ जाती है। कुछ स्थानों में नियमित विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षक है जो अशक्तताओं को समझते हैं वहां अपेक्षाकृत अस्वीकृति की दर कम है। किन्तु ऐसे विद्यालय प्रधानता से प्राइवेट विद्यालय हैं। SSA का वर्तमान प्रयास जैसा कि ऊपर वर्णित है संभावित सकारात्मक परिवर्तन लाता है तथा अधिक CWSN को विद्यालयों में जोड़ता है। गंभीर अशक्तता वाले बच्चों को प्राय: प्रारंभिक वर्षों में चिकित्सीय सहायता अपेक्षित है। घर आधारित निर्देश सामान्यत: ऐसे बच्चों के लिए व्यवहार्य पाये जाते हैं।

प्रगति जांच-2

1. अनुकूलनों के प्रकारों का वर्णन करें जिन्हें आप पाठ्यक्रम में कर सकते हैं।

   .....

   .....

   .....

2. क्या परेशानियां हैं जिनका समावेशी शिक्षा व्यवस्था में विशेष जरूरत वाले बच्चे सामना करते है?

   .....

   .....

   .....

9.5 समावेशी कक्षा-कक्ष

नियमित कक्षाओं में बच्चों को शामिल करना संभव है। समावेशन के प्रति जितना प्रारंभ में प्रयास किये जाते हैं, परिणाम उतने ही बेहतर होंगे। प्रत्येक प्रारंभिक विद्यालय में एक सक्षम संसाधन शिक्षक के साथ संसाधन कक्षाओं का होना एक आदर्श है। यदि एक संसाधन कक्ष का संघटन करना कठिन है तो आप उपलब्ध संसाधनों के साथ CWSN को जोड़ने की सोच सकते हैं। कुछ मुख्य बिंदु है जो सफल समावेशन के लिए विचारित होते हैं। इसमें विशेष जरूरत वाले बच्चों का उन्नत प्रोफाइल, बच्चे की अधिगम योग्यताओं के बारे में कक्षाध्यापक की दिलचस्पी, मां-पिता की दिलचस्पी तथा शिक्षक की सक्षमतायें शामिल होती हैं।

9.5.1 कक्षाकक्ष का समायोजन एवं प्रबंधन

कक्षाकक्ष के समायोजन एवं प्रबंधन के लिए कुछ बिंदुओं पर विचार करना जिसमें शामिल है:

टिप्पणी

- शिक्षण के लिए योजना
- कक्षाध्यापक एवं अभिभावकों के बीच समन्वय, संसाधन शिक्षक एवं बच्चे की जरूरतों पर निर्भर अन्यों के बीच समन्वय।
- वैयक्तिक जरूरतों पर आधारित शिक्षण
- समूहों में शिक्षण
- सामग्री की जरूरत
- प्रलेखन प्रणालियां

आपके पास सर्वोत्तम संसाधनों के रूप में एक शिक्षक है तथा कक्षा में विद्यार्थियों के रूप में विशाल मानवीय संसाधन है। सहपाठी के शिक्षण को अपनाकर एवं सहयोगी अधिगम तकनीकों को अपनाकर उनका प्रभावी उपयोग करें।

Kagan (1994) सहयोगी अधिगम को सकारात्मक मानवीय संबंधों, सहपाठियों के बीच समन्वय, सक्रिय अधिगम, शैक्षिक उपलब्धि, समान भागीदारी, एवं कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों की समान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए संरचित सहपाठी अंत:क्रिया के एक प्रकार के रूप में परिभाषित करता है। यह पाठ्यचर्या में किसी भी विषय को पढ़ाने में प्रयुक्त हो सकता है।

सहपाठी शिक्षण एक रणनीति है जो विस्तृत अशक्तताओं वाले विद्यार्थियों एवं सभी स्तरों पर प्रयुक्त हो सकता है। जबकि सफल क्रियान्वयन सहपाठी शिक्षण की प्रक्रिया एवं भूमिकाओं में सभी विद्यार्थियों के प्रशिक्षण को आवश्यक बनाता है। अशक्तताओं वाले बच्चों विशेषत: मानसिक मन्दन वाले बच्चों को वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम और शिक्षण अपेक्षित हैं। नियमित कक्षा में शिक्षक विद्यार्थियों के रूप में बहुसंख्यक मानवीय संसाधनों से समर्थ हैं। एक कुशल शिक्षक अशक्तताओं वाले विद्यार्थियों को सीखाने में सहायता करने में सहपाठी शिक्षण के रूप में उनका प्रभावी उपयोग करेगा। इससे न केवल उसका कार्य भार कम होगा बल्कि अशक्त एवं सामान्य बच्चे भी लाभान्वित होते हैं। अशक्त बच्चों में कमजोर विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व की समझ विकसित होती हैं एवं सहायता महसूस होती है तथा अशक्त विद्यार्थियों में सहपाठियों की सहायता के लिए उनमें आदर विकसित होता है।

9.5.2 उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीक का उपयोग

जब हम अशक्त बच्चों के साथ कार्य करते हैं तो शिक्षण अधिगम सामग्री के चयन एवं उपयोग में विशेष ध्यान एवं सलाह की जरूरत होती है, शिक्षकों के रूप में हम साधनों एवं उपकरणों का उपयोग कर उनकी अशक्तता की क्षतिपूर्ति करते हैं साथ ही साथ एक तरीके से जिससे वे संकल्पना को अच्छी प्रकार समझते हैं सामग्री का उपयोग कर पाठ्यचर्या को संप्रेषित करते है। शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण सामग्रियों का चयन एक महत्त्वपूर्ण घटक है। प्रक्रियाओं के पश्चात्

टिप्पणी

शिक्षण कार्यक्रम की तकनीकें निर्धारित होती हैं, शिक्षण सामग्रियों का या तो चयन या संरचना आवश्यक है जो कि एक कार्य के शिक्षण में प्रयुक्त होगा।

शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन करते समय विचार किये जाने वाले बिंदु :

- **उपयुक्त आयु**–उदाहरण के लिए, एक बौद्धिक अशक्तता वाला 10 वर्षों का बच्चा एक 5 वर्ष की मानसिक योग्यता वाले बच्चे से मिलता हैं को 5 वर्ष के बच्चे की जरूरत खिलौनों की अपेक्षा उसकी उम्र के उपयुक्त सामग्री होनी चाहिए।
- **सक्रिय भागीदारी**–विद्यार्थी को सामग्री का उपयोग करने, अन्वेषण करने एवं सीखने में सक्षम होना चाहिए।
- **सृजनात्मक उपयोग**–बहुमुखी होना चाहिए, विविध सृजनात्मक उपयोग के लिए स्वीकृति होनी चाहिए।
- **उपलब्धता**–यदि विद्यार्थी को विस्तारित गृह प्रशिक्षण के लिए सामग्री खरीदनी पड़े तो वह सामग्री आसानी से उपलब्ध, वहन करने योग्य एवं पहुंच योग्य होनी चाहिए।
- **उपयुक्त स्तर**–सामग्री मानसिक मन्दन वाले बच्चे के कार्य के स्तर के उपयुक्त होनी चाहिए ताकि उसके लिए अधिगम सार्थक हो।
- **प्रशिक्षण का स्थानांत्तरण**–सामग्री का उपयोग अन्य संदर्भों एवं परिस्थितियों में सीखी गयी संकल्पना को आसानी से सामान्यीकृत करने में बच्चे की स्वीकृति होनी चाहिए।

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक

आपको सहमत होना होगा कि वर्तमान पीढ़ी के बच्चे पुरानी पीढ़ी की तुलना में तकनीक के जानकार हैं। तकनीकी उन्नति के कारण अब किसी के साथ कहीं भी कभी भी बात करना आसान है। एक बटन को छूते ही बहुत सी चीजें सम्पादित हो जाती हैं। CWSN के लिए साधनों एवं उपकरणों का उपयोग तथा तकनीक का उपयोग कर शिक्षण करना भी अब प्रचलन में है। अधिकांश विद्यालयों में CWSN के अनुकूलन के साथ कम्प्यूटर लैब भी हैं। अंधे बच्चों के लिए बोलती पुस्तकें एवं कम्प्यूटर, परिष्कृत व्हील चेयर तथा शैक्षिक सॉफ्टवेयर वर्तमान में मांग में है।

9.6 गृह आधारित शिक्षा

जैसा कि हमने पहले वर्णित किया है, कुछ गंभीर या बहुत अशक्तताओं वाले बच्चों को परेशानियां हो सकती हैं, उनको विद्यालय पहुंचने में परेशानी होगी। चूंकि हमारे देश में शिक्षा प्रत्येक बच्चे का एक मौलिक अधिकार है, तो इन बच्चों तक उपयुक्त शिक्षा भी पहुंचनी चाहिए। अत: ये बच्चे घर पर शिक्षित होते हैं।

टिप्पणी

9.6.1 संकल्पना

यद्यपि शैक्षिक सुविधायें बढ़ रही हैं, फिर भी CWSN की शिक्षा बहुत सी चुनौतियों का सामना करती है। कुछ बच्चों को जटिल परिस्थितियों के साथ ऐसी गंभीर अशक्ततायें होती हैं कि वे सीखने के लिए विद्यालय नहीं पहुंच सकते है। हमारे देश के सुदूर गांवों, जनजातीय या पहाड़ी क्षेत्रों में एक CWSN को विद्यालय पहुंचना संभव नहीं हो सकता है। कुछ सुदूर स्थानों में CWSN की पहुंच से विद्यालय बहुत दूर हो सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा को बच्चे तक पहुंचना है। बच्चे को पढ़ाने के लिए परिवार के सदस्यों का प्रशिक्षण इन बच्चों की शिक्षा को सुनिश्चित करने का एक तरीका है। चूंकि घर आधारित शिक्षा ऐसे बच्चों को शिक्षित करने की विधियों में से एक है जो विद्यालय पहुंचने में अक्षम हैं।

9.6.2 गृह आधारित शिक्षा की क्रियाविधि

एक विशेष शिक्षक सैलानी शिक्षक के रूप में भी जाना जाता है, जो सामान्यत: विद्यार्थी के घर का दौरा करता है तथा वह बच्चा एवं जिस वातावरण में वह रहता है उसका मूल्यांकन करता है। परिवार एवं शिक्षक दौरे की बारंबारता एवं समय की उपयुक्तता का निर्धारण करते हैं। एक विस्तृत मूल्यांकन के बाद उपयुक्त लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के साथ एक शैक्षिक योजना विकसित होती है। शिक्षण रणनीतियां निरुपण के माध्यम से शिक्षक द्वारा परिवार के सदस्य जो परिवार में एक प्रशिक्षक के रूप में पहचाने गये है को पढ़ायी जाती हैं। शिक्षक द्वारा व्यवस्थित रिकार्ड रखा जाता है। कुछ बच्चों को बोलने एवं गति पहलुओं के लिए थेरेपी अपेक्षित होगी तथा यह सैलानी शिक्षक द्वारा समन्वित होगा। जैसे बच्चे में सुधार होता है, अगले स्तर के कार्यक्रम की योजना की जाती है।

प्रगति जांच-3

1. शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन करते समय कौन से बिंदु विचार किये जाते हैं?

.....

.....

.....

2. गृह आधारित शिक्षा किसके लिए उपयुक्त है?

.....

.....

.....

टिप्पणी

9.7 सारांश

इस इकाई में हमने विशेष जरूरतों वाले बच्चों विशेषत: जिनमें अशक्ततायें हैं की शैक्षिक जरूरतों एवं चुनौतियों पर चर्चा किया है। अशक्त बच्चों की उनकी अशक्तताओं के प्रकार एवं गंभीरता पर आधारित विशिष्ट जरूरतें होती हैं। दृष्टि बाधित श्रवण बाधित, गति प्रेरक अशक्ततायें, मानसिक मन्दन या विशिष्ट अधिगम अशक्तताओं वाले बच्चों को उनकी जरूरतों पर आधारित एक समावेशी कक्षा में शिक्षक द्वारा संबोधित किया जाता है। अशक्त बच्चों को जोड़ने के लिए सरकार द्वारा शैक्षिक व्यवस्थाओं को राष्ट्रीय, राज्य, जिला, प्रखण्ड एवं विद्यालय स्तरों पर बनाया गया है।

हमारे देश में पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रणालियों सहित शिक्षा के केंद्रीय एवं राज्य बोर्डों द्वारा नियंत्रित होते हैं। यद्यपि नहीं रोकने की नीति बच्चों को एक दिये गये स्तर में क्षमता को सुनिश्चित किये बगैर अगले स्तर में प्रोन्नत करने में सहायता करती है। यह CWSN के साथ भी सत्य है। CWSN से न्याय करने में शिक्षक को पाठ्यचर्या के अनुकूलन, निर्देशात्मक विधि यों को अपनाने, उपयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग करने की जरूरत होती है तथा जागरूक होने एवं विशिष्ट अशक्तताओं के लिए सरकार द्वारा बनाये गये मूल्यांकन प्रावधानों का उपयोग करने की जरूरत है। अनुकूलनों में बच्चे की जरूरत पर आधारित पाठ्यचर्या में संयोजन, विलोपन, रूपान्तरण एवं विस्तारण शामिल है। शिक्षक बच्चों की सहायता के लिए साथी समूहों का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं।

बच्चे जो गंभीर अशक्तताओं या सुदूर क्षेत्रों में रहने के कारण विद्यालय नहीं पहुंच सकते उनको गृह आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है। इस प्रणाली में शिक्षक बच्चे की घर तक पहुंचता है और उपयुक्त शिक्षा प्रदान करता है।

9.8 प्रगति जांच के उत्तर

प्रगति जांच-1

1. अंधता, कम दृष्टि, श्रवण बाधित, गति प्रेरक, अशक्तता, बौद्धिक अशक्तता, ऑटिज्म युक्त विकासात्मक अशक्तता, प्रमस्तिष्क पक्षाघात, विशिष्ट अधिगम अशक्तता (कोई चार)।
2. नहीं रोकने की नीति, त्रिभाषा नीति, प्रत्येक कक्षा में अधिक बच्चे (अपने अनुभव से और अधिक जोड़े)।

प्रगति जांच-2

1. समायोजन, रूपान्तरण, विलोपन, प्रतिस्थापन, विस्तारण।
2. बच्चे विद्यालय में प्रवेश लेते हैं किन्तु बीच में छोड़ देते हैं या शिक्षक द्वारा उन्हें अधिगम के लिए अन्य बच्चों के समान नहीं पाने पर अस्वीकृत कर दिया जाता है। नियमित विद्यालयों में शिक्षक ऐसे बच्चों को जोड़ने के लिए प्रशिक्षित नहीं है इसलिए वे अभिभावकों को बच्चे के लिए विशेष समर्थन का सुझाव देते हैं। बच्चे नियमित विद्यालय

टिप्पणी

में रहते हैं किन्तु जैसे पाठ्यचर्या का शैक्षिक विषय वस्तु बढ़ता है वे प्रारंभिक कक्षाओं से हटा दिये जाते हैं।

प्रगति जांच-3

1. उपयुक्त आयु, सक्रिय भागीदारी, सृजनात्मक उपयोग, उपलब्धता, उपयुक्त स्तर, प्रशिक्षण का स्थानान्तरण।
2. गंभीर या बहु अशक्तताओं वाले बच्चे एवं वे जो विद्यालयों में नहीं जा पाते हैं।

9.9 सदंर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Browder D.M. & Snell M.E. (1983) Functional Academics in M.E. Snell (Edn). Instruction of Students with Severe Disalibilities, New York. Mac Millan Publishing Co.P-443.
- ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12) Planning commission, nic.in/plans/planrel/11 thf.htm
- GoI, Min. of Social Justice and Empowerment (1995), Persons with Disability, (Equal, oppourtunity, Protection of Rights and Full Participation) Act, New Delhi-Govt. Press.
- GoI, Min of Social Justice and Empowerment (1992), Rehabilitation Council of India Act, New Delhi : Govt. Press
- January && Snell M.E. (2000) Modifying School Work. Baltomore: Paul Brookes Publishing Co. P.-18-19.
- Kagan S. (1994). Cooperative Learning. San Clemente. Resource for Teachers.

9.10 अन्त्य इकाई अभ्यास

1. विषय की पाठ्य पुस्तक से एक अध्याय को चुनें जो आपने अपने विद्यालय में पढ़ाया हैं। जिन विद्यार्थियों की निम्नलिखित विशेष जरूरते हैं–अंधता, श्रवण बाधिता, बौद्धिक अशक्तता उन्हें पढ़ाने के लिए अध्याय को अपनायें।
2. अपने विद्यालय से सम्बद्ध सरकारी शैक्षिक बोर्ड द्वारा CWSN के बनाये प्रावधानों को संकलित करें।
3. एक खेल तैयार करें जिसमें सभी बच्चों का उपयोग हो सकता है जिसे खेलने में CWSN शामिल हो सकते है।
4. एक प्रोजेक्ट की योजना करें तथा प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने के लिए सहयोगी अधिगम का उपयोग करें।

इकाई-10 अवधारण कौशलों का विकास (Development of Adoptive Skills), सहायक उपकरण (Assistive Devices), विशेष उपचार (Special Therapies)

संरचना

10.0 प्रस्तावना

10.1 अधिगम उद्देश्य

10.2 अनुकूलित कौशल

10.2.1 अनुकूलित कौशल का अर्थ

10.2.2 श्रवण बाधित, वाचन बाधित के लिए अनुकूलित कौशल

10.2.3 बहु अशक्तता/प्रमस्तिष्क पक्षाघात के लिए अनुकूलित कौशल

10.2.4 अधिगम अशक्तता के लिए अनुकूलन

10.2.5 बौद्धिक अशक्तता के लिए अनुकूलन

10.2.6 दृष्टि बाधित के लिए अनुकूलन

10.2.7 गति प्रेरक अशक्तता के लिए अनुकूलन

10.2.8 शिक्षकों की भूमिका

10.2.9 अभ्यास

10.3 सहयोगी युक्तियां

10.3.1 सहयोगी युक्तियों का अर्थ

10.3.2 विभिन्न बाधितों एवं अशक्तताओं के लिए सहयोगी युक्तियां (मेज)

10.3.3 कक्षाकक्ष में शिक्षक की भूमिका

10.3.4 बहु अशक्तताओं (प्रमस्तिष्क पक्षाघात, गति प्रेरक अशक्तता) के लिए सहयोगी युक्तियां

10.3.5 दृष्टि बाधिता

10.3.6 अधिगम परेशानी

10.3.7 श्रवण बाधिता

10.3.8 वाचन बाधिता

10.4 विशेष विधियां

10.5 सारांश

10.6 प्रगति जाँच के उत्तर

10.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

10.0 प्रस्तावना

पूर्व के पाठों में आपने विभिन्न अशक्तताओं से प्रभावित बच्चों की मौलिक प्रकृति, जरूरतों, प्रकारों एवं असामान्यताओं के विभिन्न कारणों और उनकी शैक्षिक जरूरतों को सीखा है। प्रारंभिक अशक्तता चाहे यह शारीरिक, सांवेदिक, संज्ञानात्मक हो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की सामान्य प्रक्रिया के साथ हस्तक्षेप करता है। उपयुक्त अधिगम परिणामों को प्राप्त करने में विद्यार्थियों की सहायता के लिए शिक्षण को प्रारूपित होना चाहिए। अशक्त बच्चों को उनके विद्यालय एवं सामाजिक पर्यावरण दोनों में अनुकूलित कौशलों, सहयोगी युक्तियों एवं विशेष विधियों की जरूरत है। यह इकाई इन मुद्दों पर चर्चा करने का एक प्रयास करती है।

10.1 अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप सक्षम होंगे :

- अनुकूलित कौशलों के अर्थ की व्याख्या करने में।
- विभिन्न अशक्ताओं के लिए विविध अनुकूलित कौशलों को सूचीबद्ध करने में।
- अशक्त बच्चों का मूल्यांकन करने में शिक्षक की भूमिका का वर्णन करने में।
- सहयोगी युक्तियों के अर्थ की व्याख्या करने में।
- बच्चों के वातावरण में सहयोगी युक्तियों के उपयोगों की व्याख्या करने में।
- बेहतर कार्य के लिए विभिन्न विधियों के उपयोगों की व्याख्या करने में।

10.2 अनुकूलित कौशल

अशक्त बच्चों में विविध अक्षमतायें होती हैं। वे अपनी अशक्तता के कारण अन्य बच्चों के समान जीवनशैली को जीने में सक्षम नहीं हैं। उनकी अशक्ततायें उनके व्यक्तिगत एवं बौद्धिक वृद्धि के लिए समस्या होती है।

चूंकि इन बच्चों को नये कौशलों को अपनाना जरूरी है जो उनकी अशक्तताओं की क्षतिपूर्ति कर देंगे। ये अनुकूलित कौशल बच्चों को उनके विद्यालय एवं दैनिक गतिविधियों में सहायता करेंगे। दैनिक गतिविधियां इन बच्चों के लिए सामान्य प्रविधियों को प्रतिस्थापित कर नई प्रविधियों की मांग करती हैं। पहुंच एक अन्य प्रश्न है, जिसका उत्तर मुक्त स्रोत है। ये अनुकूलन

लोगों से लोगों में भिन्न होता है। बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए अनुकूलन। एक शिक्षक में बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों के लिए सामर्थ्य होनी चाहिए।

10.2.1 अनुकूलित कौशलों का अर्थ

अशक्त लोगों में कौशलों का विकास करने एवं सामर्थ्य अर्जित करने के लिए अभिभावकों एवं शिक्षकों द्वारा अनुकूलन सरलतम विधियां हैं। प्राकृतिक व्यवस्था में कौशलों को सीखने में बच्चों को अनुकूलनों को लागू करने में सक्षम होना चाहिए। अनुकूलन उन्हें स्वतंत्रता से जीने में सहायक होंगे। उनमें लिखना, पढ़ना, गणित शामिल है। अनुकूलन में कौशल सरलतम कार्यों में बंटे हैं ताकि वे आसानी से सीखें।

10.2.2 श्रवण एवं वाचन बाधित बच्चों के लिए अनुकूलित कौशल

यहां ये बच्चे सामान्य हैं और उन्हें समझने में समस्या नहीं है। अनुकूलन के लिए पहले मनोवैज्ञानिक लक्षणों को सुधारा जाता है और फिर वे अन्य महत्त्वपूर्ण कौशलों को सीख सकते हैं। सुनने को समर्थ करने में तीव्र बातचीत के द्वारा स्वर एवं तीव्रता को सुधारा जाता है। सामान्यत: श्रवण बाधित बच्चे अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान बोली अर्जित कर लेते हैं। बातचीत बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, बिना श्रवण के बोली प्राप्त करना मुश्किल होगा। बातचीत के दो तरीके हैं–अमौखिक एवं मौखिक।

यहां अमौखिक ही केवल एक तरीका है जिससे वे बात कर सकते हैं। सांकेतिक भाषा हैं–American Sign Language (ASL), British Sign Language (BSL) इशारा एवं बोलने वाले बोर्ड। मुख्य विचार संकेतों को सीखाना नहीं है किन्तु सहायक श्रवण एवं बोली पठन से समर्थित चिह्नों के उपयोग के माध्यम से भाषा सीखना। दर्पण के सामने खड़े होकर ओष्ठ पठन ओर चेहरे की गतियों का अनुकरण करना एक बड़े प्रसार में सहायता भी करेगा।

10.2.3 बहु अशक्त/प्रमस्तिष्क पक्षाघात के लिए अनुकूलन

प्रमस्तिष्क पक्षाघात मस्तिष्क की कुसंरचना के कारण उत्पन्न होता है। जैसे उम्र बढ़ती है व्यक्ति में गति एवं मांसपेशियों में जकड़न की समस्या होती है। एक व्यक्ति जिसमें 2 या 3 अशक्ततायें हैं बहु अशक्त कहलाता है तथा उसे विशेष तरीके की शैक्षिक विधि जरूरी है। अत: पाठ्यचर्या अनुकूलन अपेक्षित है। इन बच्चों को कम या लम्बी अवधि की स्मृति की सूचना को धारण करने में समस्यायें होंगी। उन्हें मूर्त चिन्तन में परेशानी होती है। प्रत्येक बच्चे में उसका एक स्वभाव, अनुभव एवं अशक्तता होती है।

उपागम शब्द का उपयोग प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक समग्र कार्यक्रम की संरचना एवं क्रियान्वयन के लिए होना चाहिए। टीम में विभिन्न प्रकार के व्यवसायियों, पारिवारिक सदस्यों एवं देखरेख करने वालों का संगठन होना चाहिए। बहु अनुशासनात्मक टीम में हो सकते हैं–

- विशेष शिक्षक

- फिजियोथेरेपिस्ट
- व्यावसायिक थेरेपिस्ट
- मनोवैज्ञानिक
- सामाजिक कार्यकर्ता
- पारिवारिक सदस्य

10.2.4 अधिगम परेशानियों के लिए अनुकूलन

सामान्य पाठ्यचर्या में किये गये अनुकूलन अधिगम अशक्त बच्चों की सहायता करते हैं। कभी-कभी वे भ्रमवश कम अधिगमकर्ता समझ लिये जाते हैं। अधिगम अशक्तता के कई प्रकार हैं :

- **डिसलेक्सिया (पढ़ने में समस्या)** : बच्चा पढ़ते समय वर्णों का लोप कर देता है, प्रतिस्थापित कर देता है या उलट देता है।
- **डिसग्राफिया (लिखने में समस्या)** : बच्चा स्थिरता से लिखने में अक्षम है। उसका लेखन भद्दा है एवं अनुपयुक्त स्थान लेता है।
- **डिसकैलकुलिया (गणना करने में समस्या)** : बच्चे को सामान्य गणनायें करने में परेशानी होती है।
- **Attention Deficit Hyperactive Disorder (ADHD) (ध्यान देने में समस्या)** : ऐसी स्थिति में ध्यान का विस्तार बहुत सीमित होता है तथा बच्चा अशान्त होता है। वह असंगत प्रेरण की ओर ध्यान देने में प्रवृत होता है तथा अतिसक्रियता की विचारणीय मात्रा दिखाता है। यहां तक कि बच्चा एक क्षण के लिए भी एक स्थान पर नहीं बैठता है।
- **डिसफेसिया (भाषा विकार)** : इसके दो प्रकार हैं। या तो बच्चा अर्थपूर्ण भाषा का उपयोग करने में अक्षम है या बोले गये शब्दों को समझने में अक्षम है। ऐसे बच्चों से निपटने की मुख्य विधि है कार्य विश्लेषण।

कार्य विश्लेषण :

- शिक्षक को एक अधिगम कार्य चुनना चाहिए।
- यह व्यवहारात्मक शब्दों में कहा जाता है।
- मुख्य कार्य को एक सरलतम कार्य में बाँटकर एक कौशल सीखायें।
- चरणबद्ध पढ़ायें।
- इस आकृति के लिए अन्य नाम

टिप्पणी

- प्रत्येक चरण प्रबलित है
- प्रथम चरण का अर्जन छात्र को दूसरे चरण के लिए प्रेरित करेगा।
- संरचनात्मक पाठ प्रस्तुतीकरण

10.2.5 बौद्धिक अशक्तता के लिए अनुकूलन

विशेष शिक्षा में अनुकूलन के उद्देश्यों में से एक है बौद्धिक अशक्त बच्चे को अपनी व्यक्तिगत जरूरतों-खाने, पीने, शौच, ब्रश करने, नहाने, कपड़े पहनने एवं शृंगार करने की देखभाल करना जो भिन्न पर्यावरण में भिन्न तरीकों में अपेक्षित हो। उदाहरण के लिए-हम घर, विद्यालय एवं होटलों में खाते एवं पीते हैं। कई बार माता-पिता ऐसे बच्चों को खाने के उपयुक्त कौशलों या अन्य कौशलों, शिक्षण तरीकों के अभाव में इन स्थानों एवं उत्सवों में नहीं ले जाते हैं।

प्रत्येक कार्य का विश्लेषण करें

कार्य विश्लेषण का उपयोग करें : प्रत्येक कौशल को सरलतम एवं आसान चरणों में पढ़ाने में।

कार्य के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का उपयोग करें।

बच्चा जब प्रत्येक चरण सीखता है उसके बाद पुरस्कार दें।

यह प्रविधि पढ़ने, लिखने, अंक गणित करने के समय की जा सकती है (संकेत शब्द-शौचालय, विष, खतरा) अंकगणित में/सरल से जटिल प्रविधि अपनायी जा सकती है।

इस प्रकार हम बौद्धिक अशक्त बच्चे को उसकी अधिगम प्रक्रिया में अनुकूलनों का उपयोग कर पढ़ा सकते हैं।

10.2.6 दृष्टि बाधित के लिए अनुकूलन

इन दृष्टि बाधित बच्चों के लिए हम कर सकते है :

ब्रेल लिपि

अन्य दृष्टि युक्तियां

- लेन्स-कम दृष्टि एक निश्चित विस्तार तक सुधारी जा सकती है।
- विशेष चश्में जो वर्णों को बढ़ा सकते हैं तथा पढ़ने को सुसाध्य कर सकते हैं।
- बड़े छपाई की पुस्तकें
- वस्तु को पहचानने के लिए अच्छा प्रदीपन
- दृष्टि को सुधारने के लिए रेटिना का ऑपरेशन
- मोतिया बिंद एवं अन्य अस्थायी समस्यायें भी सुधारी जा सकती हैं।

10.2.7 गति चालक अशक्तता के लिए अनुकूलन

इन लोगों में ऐसी समस्यायें होती हैं जैसे–गति, अंग का न होना, अंगों में दर्द और सख्ती। इन लोगों के लिए मुख्य अनुकूलन होंगे:

- मसाज एवं कमजोर मांशपेशियों में पुन: शक्ति लाना।
- सामान्य मांशपेशियों का सशक्तिकरण।
- सहायता के लिए खपची या कैलिपर प्रदान करना।
- **संपूर्ण सर्जरी**–स्टील के एक रॉड का उपयोग कर एक प्रकार का समर्थन दिया जाता है तथा यह गति चालक अशक्त लोगों को चलने के लिए एक स्थायी अनुकूलन है। ऐसे लोगों को दर्द होता होगा जो परिगणनीय या उपचार्य नहीं हैं। यह प्रकृति की चेतावनी है कि यह शरीर की क्षति है। दर्द में आराम या तो दर्द निवारक द्वारा या प्रभावित स्थान पर गर्म या ठंडे की सीकाई से पाया जा सकता है। गति अशक्त लोगों को अप्रिय दबाव होता होगा। इन समस्याओं को बोरिक पाउडर लगाकर या बेडशीट बदलकर तथा सफाई का ध्यान रखकर दूर किया जा सकता है।

10.2.8 शिक्षक की भूमिका

किसी भी प्रकार की अशक्तता वाला बच्चा दो समस्याओं का सामना करता है। पहला–वह अन्य बच्चों के समान अपनी दैनिक गतिविधियों को करने में सक्षम नहीं है। दूसरा–अशक्तता के कारण शिक्षा ग्रहण करने में चुनौतियों का सामना करता है। विद्यालय सत्ता को बच्चे की समस्या को समझने में सक्षम होना चाहिए तथा बच्चे की सहायता करनी चाहिए। शिक्षक बच्चे एवं पुस्तक में दिये गये ज्ञान के बीच एक मध्यस्थ है अत: उसे बच्चे द्वारा सामना किये जा रहे अशक्तता को पहचानने में अच्छी तरह प्रशिक्षित होना चाहिए।

एक उदाहरण उपर्युक्त को समझाता है–लोकप्रिय सिनेमा 'तारे जमीन पर' में–बच्चे के शिक्षक बच्चे की समस्या: डिसलेक्सिया को नहीं समझते हैं और उसे सजा देते हैं क्योंकि वह अंक लाने में सक्षम नहीं था और ऐसा होने से कक्षा में ध्यान नहीं देता था।

एक शिक्षक को इन अशक्तताओं को पहचानने में अवश्य शिक्षित होना चाहिए तथा प्रोत्साहित करने के लिए नई विधियों को अपनाने की स्थिति में होना चाहिए एवं उसके अवरोधों को चिहिन्त करने में बच्चे की सहायता करनी चाहिए। बच्चों को उनकी अशक्तताओं के बावजूद शिक्षा में ध्यान लगाने में शिक्षक को अवश्य सहायता करनी चाहिए। एक शिक्षक बच्चे की कई प्रकार से सहायता कर सकता है। पहला चरण है अशक्तता को समझना एवं उसके बारे में सीखना, बच्चे को प्रोत्साहित करना, पढ़ाने के लिए अतिरिक्त समय देकर अध्ययन में बच्चे की सहायता करना, गति प्रेरक अशक्तता के मामले में बैठने की उचित व्यवस्था करना या शिक्षक को नई विधियों को अपनाना आदि।

टिप्पणी

प्रगति जाँच-1

निम्नलिखित प्रश्नों का जवाब 1 या 2 वाक्यों में दे :

1. अनुकूलित कौशलों से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

2. गति चालक अशक्त, प्रमस्तिष्क पक्षाघात, श्रवण बाधित, दृष्टि बाधित लोगों के लिए अनुकूलित कौशलों की सूची बनायें।

.....

.....

.....

इन पर संक्षिप्त नोट लिखें:

1. शिक्षक की भूमिका
2. गति चालक अशक्त एवं प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले लोगों के लिए अनुकूलित कौशल
3. श्रवण बाधित एवं अधिगम अशक्तता वाले लोगों के लिए अनुकूलित कौशल

10.3 सहयोगी युक्तियां

अशक्तताओं वाले बच्चों को बहुत से कार्यों विशेष रूप से दैनिक कार्यों का निष्पादन करने में परेशानी होती है। अत: वे दूसरों पर निर्भर हैं। हमें उन्हें स्वयं समर्थ बनाने की जरूरत है या अन्य बच्चों के समान कार्यों को करने में सक्षम बनाने की जरूरत है। सहयोगी युक्तियां वे युक्तियां हैं जो इन बच्चों को उनके दैनिक कार्यों में सहायता करती हैं। ये दो प्रकार की हैं–वे जो सम्बद्ध लोगों द्वारा प्रयुक्त हो सकती हैं तथा वे जो सम्बद्ध लोगों द्वारा अन्यों की सहायता से प्रयुक्त की जा सकती हैं।

सहयोगी युक्तियां इस तरह से होनी चाहिए कि अशक्त व्यक्ति को इसका उपयोग कर अधि कतम लाभ प्राप्त करना चाहिए। उदाहरणार्थ, एक गति चालक अशक्त व्यक्ति एक व्हील चेयर या क्रच का उपयोग कर सकेगा। यह युक्ति उसके अशक्त पैरों को प्रतिस्थापित करती है। एक श्रवण अशक्त व्यक्ति अन्यों को सुनने के लिए श्रवण यंत्र का उपयोग करेगा तथा इसलिए अन्यों की बात करने, व्याख्यान सुनने, संगीत सुनने आदि में सक्षम होना।

10.3.1 सहयोगी युक्तियों का अर्थ

कोई भी युक्तियां सहयोगी युक्तियाँ हैं जो अशक्त लोगों को दैनिक जीवन की गतिविधियों का उत्तरदायित्व लेने में, शिक्षा ग्रहण करने में, सूचना अर्जित करने में, अपने वातावरण में स्वच्छन्द विचरण का आनंद लेने में तथा कार्य करने एवं शारीरिक निष्पादन को सुधारने के लिए फुरसत की गतिविधियों में लगने में प्रत्यक्षत: सहायता करती है। सहयोगी युक्तियों को अशक्त लोगों को उनकी आकांक्षायें पूर्ण करने में भी समर्थ होना चाहिए। सहयोगी युक्तियों का उपयोग कर कोई भी आगे की अशक्तता को रोक सकता है तथा अवशिष्ट क्षमता वाले व्यक्ति को स्वतंत्र जीवन प्राप्त करने में प्रशिक्षित भी कर सकता है।

10.3.2 बाधित एवं अशक्त लोगों के लिए सहयोगी युक्तियां :

बाधिता/अशक्तता का प्रकार	युक्तियां
गति प्रेरक अशक्तता	खड़े होने वाला ढांचा, स्पिलन्टर
प्रमस्तिष्क पक्षाघात	टहलने वाला उपकरण, व्हील चेयर
दृष्टि बाधिता	गिनतारा, ब्रेल, अंकगणितीय फ्रेम
श्रवण बाधिता	श्रवण यंत्र, संचार साधन, संचार बोर्ड, बोलने वाला बोर्ड
वाचन बाधिता	ओष्ट पठन, स्पीच मॉडल, ओष्ठ की गति का प्रेक्षण
अधिगम अशक्तता	बड़े एवं आकर्षक वर्ण, मिलते जुलते तस्वीर एवं वस्तुएं
बहु अशक्तता	रैंप, बैठने की अच्छी व्यवस्था, वैशाखियां, वॉकर, व्हील चेअर

बौद्धिक अशक्तता, यह अन्य अशक्तताओं जैसे श्रवण बाधिता, दृष्टि बाधिता के साथ-साथ होती हैं एवं उन्हें सहयोगी युक्तियां अपेक्षित हैं। अन्यथा और कोई जरूरत नहीं है।

10.3.3 कक्षाकक्ष में शिक्षक की भूमिका

विभिन्न अशक्ताओं वाले बच्चों के लिए सहयोगी युक्तियां भिन्न है। पहली भूमिका उनको कक्षा में स्थान देना है। बौद्धिक रूप से अशक्त बच्चों के मामले में 'U' और 'Y' आकृति वाली बैठने की व्यवस्था है। बहुत बड़े, रंगीन और आकर्षक शिक्षण अधिगम सामग्री प्रयुक्त होते हैं। चार्ट, मोतियां, फ्लैश कार्ड बहुत उपयोगी हैं। वैयक्तिक शिक्षण इन बच्चों की सहायता करता है। बहु अशक्त एवं प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चों को केवल गतिशीलता की समस्या होती है।

बाधा मुक्त वातावरण एवं बैठने की अच्छी व्यवस्था इन बच्चों को कक्षाकक्ष में बेहतर सीखने में सहायता करेगी। श्रवण बाधित बच्चे आवाज प्रवर्धित प्रणाली वाले कक्षाकक्ष में होंगे तथा श्रवण यंत्र अधिगम प्रक्रिया में साधन होंगे। सफेद छड़ी एवं ब्रेल सामग्री दृष्टि बाधित बच्चों को

टिप्पणी

उनके बेहतर अधिगम में साधन होंगे। एक विशेष अध्यापक को 2 या 3 अशक्तताओं का प्रबंध न करने में प्रशिक्षण लेना जरूरी है। एक विशेष विद्यालय में शिक्षकों के संयुक्त प्रयास अशक्त बच्चों की अधिगम प्रक्रिया में एक सुसाधक कारक के रूप में कार्य करेंगे।

10.3.4 बहु अशक्तताओं वाले लोगों (प्रमस्तिष्क पक्षाघत, गतिचालक) के लिए सहयोगी युक्तियां

एक से अधिक अशक्तता का होना बहु अशक्तता कहलाता है। एक व्यक्ति बौद्धिक रूप से अशक्त के साथ दृष्टि बाधित हो सकता है। दूसरा व्यक्ति श्रवण बाधित और शारीरिक विकलांग हो सकता है। ऐसे लोगों में संबद्ध परिस्थितियों के कारण समझने, गतिशीलता, अधिगम एवं शारीरिक विरूपता में समस्यायें होती है। अत: ये स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने में अक्षम हैं।

ऐसे लोगों के लिए निम्नलिखित सहयोगी युक्तियां है :

पॉटी चेयर (शौचालय में आरामपूर्वक बैठना)

मुक्त गति के लिए व्हील चेयर, वाकर, वैशाखी, रैम्प, तीपहिया साइकिल आदि।

पश्चिमी शैली के शौचालय

NGO या सरकारी योजनाओं के अंतर्गत लागत प्रभावी, मरम्मत योग्य तथा आसानी से उपलब्ध होने चाहिए।

प्रमस्तिष्क पक्षाघात वाले बच्चों को अनुकूलित टूथ ब्रश, मोटे पेन आदि अच्छी पकड़ के लिए होने चाहिए।

घुटने के पट्टी के नीचे हल्के वजन

चलना सीखने में वाकिंग फ्रेम सहायता कर सकते है।

कैलिपर

जो बच्चे सामान्य कुर्सी उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं उनके लिए उपयुक्त कार्नर चेअर।

10.3.5 दृष्टि बाधिता

एक अंधा, व्यक्ति इतना अंधा है कि वह किसी कार्य को जिसके लिए दृष्टि अनिवार्य है करने में अक्षम है। दूसरी तरफ बहुत से दृष्टि बाधित लोगों में कुछ अवशिष्ट दृष्टि होती है जो एक उपयुक्त सहयोगी युक्ति के प्रावधान से प्रभावी रूप से इस्तेमाल हो सकता है। दृष्टि आंशिक होगी या व्यक्ति के लिए कुछ भी देख पाना संभव नहीं होगा।

ऐसे लोगों के लिए निम्नलिखित सहयोगी युक्तियां हैं :

मुक्त एवं सुरक्षित गति के लिए सफेद छड़ी।

ABACUS (गिनने के लिए गिन तारा)

गणितीय समस्याओं को हल करने के लिए अंक गणितीय फ्रेम

ब्रेल-पढ़ने के लिए बिंदु प्रणाली (धीमी गति से सीखना)

बोलने वाला थर्मामीटर

बोलने वाली घड़ी

बोलने वाला मोबाइल

10.3.6 अधिगम अशक्तता

अधिगम अशक्तता लोगों की या तो देख और सुनकर व्याख्या करने की क्षमता को प्रभावित करता है या सूचना को मस्तिष्क के विभिन्न अंगों से जोड़ने की क्षमता को प्रभावित करता है। ऐसी परेशानियां विद्यालय के कार्यों तक विस्तारित होती है और पढ़ने, लिखने और गणित के अधिगम को प्रभावित कर सकती हैं। किसी सहायक युक्ति से कक्षाकक्ष में अधिक सहायता हो सकती है। वे इस प्रकार हैं :

- आंख-हाथ के समन्वय को सुधारना।
- क्रमिक स्मृति को सुधारना।
- वर्णों की स्थिति।
- स्थान/रूप को आसानी से पहचाना जाना जो है–उल्टे, विपरीत या घुमाये हुए।
- तस्वीरों को वास्तविक वस्तुओं से मिलाना।
- लिखने में सुने गये तथ्यों का उपयोग।
- सामूहिक तस्वीरों की नकल करना।

10.3.7 श्रवण वाधिता

कुछ बच्चों में श्रवण बाधिता होती है, आवाजों को सुनने, पता लगाने और अनुदित करने में परेशानी होती है। इसलिए भाषा एवं बोली के अर्जन की स्वाभाविक प्रक्रिया का निवारण किया जाता है। जब तक समस्या दूर नहीं कर ली जाती है, उसके दीर्घकालीन परिणाम गंभीर और विस्तृत होते है।

श्रवण यंत्र

सुनने की युक्ति जैसे–टेप रिकार्डर, ओवरहेड प्रोजेक्टर

बोलने वाला पैड–आवाज बढ़ाता है।

कम्प्यूटर

टिप्पणी

उच्चरित वर्णों को ओवर हेड प्रोजेक्टर से पढ़ाना।

सामान्य बुद्धि होना।

10.3.8 वाचन बाधिता

बोली हमेशा से संचार के लिए भाषा के उपयोग का प्राथमिक माध्यम रही है। शब्दों के संकेत एवं भंगिमायें संचार के लिए प्रयुक्त होती है। बहुत सी सांकेतिक भाषायें हैं–American Sign Language (ASL), British Sign Language (BSL), Indian Sign Language (ISL) ऐसे लोगों के लिए निम्नलिखित सहयोगी युक्तियाँ है:

संचार बोर्ड

अंगुलियों के संकेत

बोलने वाले बोर्ड

फ्लैश कार्ड

चार्ट

दृष्टि शब्द जैसे–शौचालय, खतरा, निकास, प्रवेश, विष

10.4 विशेष विधियां

विधियों में से कुछ का अशक्त लोगों पर प्रभाव है तथा वातावरण में उनके सहज क्रियान्वयन का नेतृत्व भी कर सकती हैं। गंभीर अशक्तता के मामले में चिकित्सिय उपचार प्रदान किया जाता है।

- **परिवार को परामर्श :** लोगों के परिवार को उनकी स्थिति के बारे में शिक्षित करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह अशक्त लोगों को जरूरी संवेदनात्मक समर्थन प्रदान करने में सहायता करता है।
- **समस्यात्मक व्यवहार का निवारण :** यह नकारात्मक व्यवहार को चिह्नित करने में सहायता करता है।
- **खेल विधि के माध्यम से निवारण :** खेल विधि तनाव, शरीर के जकड़न को घटाता है तथा फालूत एवं समय गुजारने के रूप में भी कार्य करेगा।
- **योग :** यह सम्बद्ध व्यक्ति को चुस्त बनाने में सहायता करता है तथा एक सीमा तक अशक्तता को कम करता है।
- **बोली की समस्या का निवारण :** यह सम्बद्ध व्यक्ति को स्वयं या अधिक स्वतंत्रता से अभिव्यक्ति करने को प्रेरित करता है।

- **शारीरिक एवं मानसिक प्रेरण :** शारीरिक सुदृढ़ता एवं सूचना संग्रहण बढ़ाता है।
- **अभ्यास की विधि :** यह शारीरिक एवं मानसिक तनाव को घटाता है।
- **आयु के उपयुक्त गतिविधियों को सुधारना :** एक अशक्तता की समुचित समझ एवं उपचार के प्रति आयु के उपयुक्त गतिविधियां पहला कदम होंगी।
- **सही स्थिति एवं की जाने वाली विधि :** सही पोस्चर शारीरिक अशक्त लोगों के लिए एक आश्चर्य कर सकती है।

स्कैन की हुई तस्वीरें

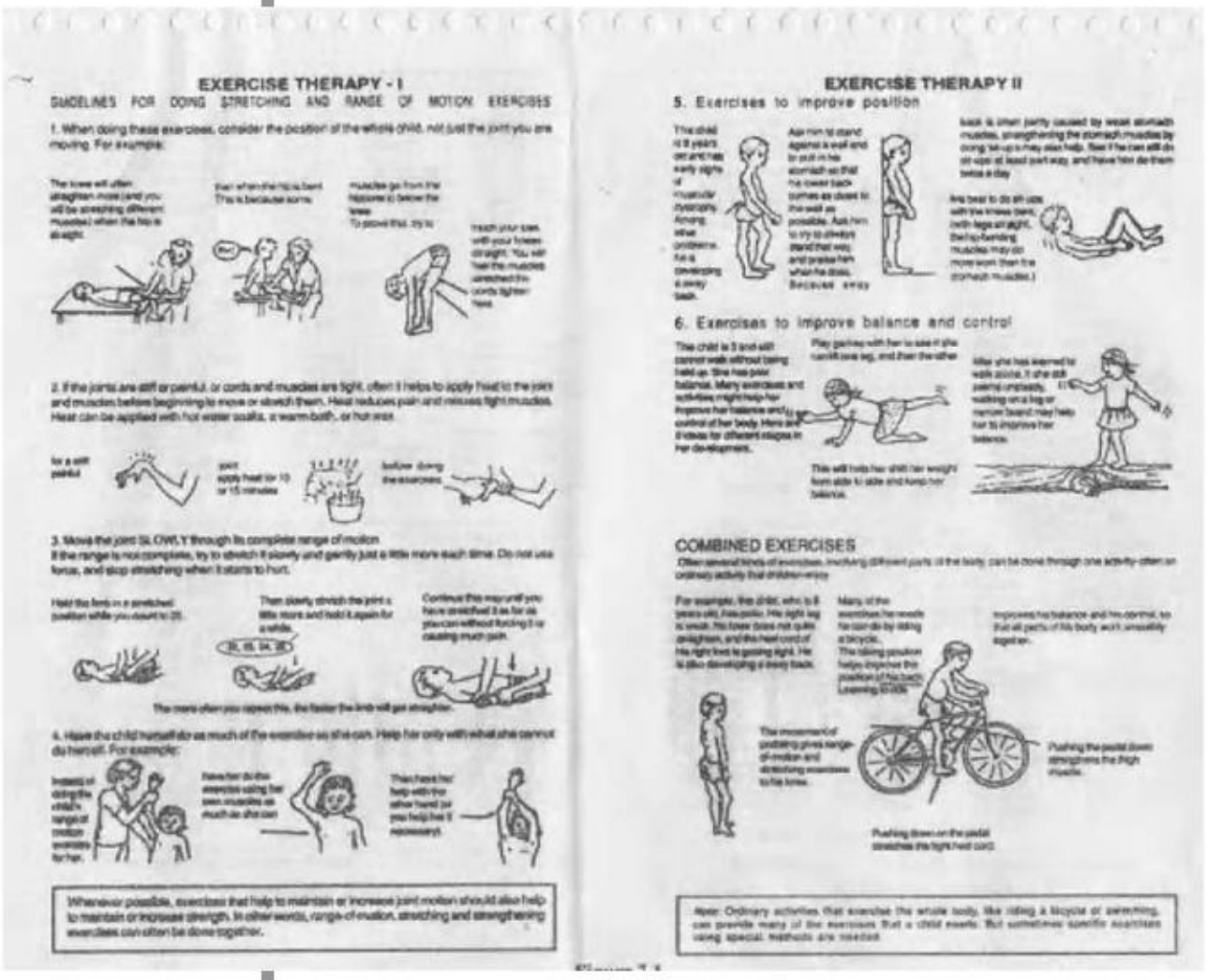

EXERCISE THERAPY - I

GUIDELINES FOR DOING STRETCHING AND RANGE OF MOTION EXERCISES

1. When doing these exercises, consider the position of the whole child, not just the joint you are moving. For example:

2. If the joints are stiff or painful, or cords and muscles are tight, often it helps to apply heat to the joint and muscles before beginning to move or stretch them. Heat reduces pain and relaxes tight muscles. Heat can be applied with hot water bottle, a warm bath, or hot wax.

3. Move the joint SLOWLY through its complete range of motion.
If the range is not complete, try to stretch it slowly and gently just a little more each time. Do not use force, and stop stretching when it starts to hurt.

4. Have the child herself do as much of the exercise as she can. Help her only with what she cannot do herself. For example:

Whenever possible, exercises that help to maintain or increase joint motion should also help to maintain or increase strength. In other words, range-of-motion, stretching and strengthening exercises can often be done together.

EXERCISE THERAPY II

5. Exercises to improve position

6. Exercises to improve balance and control

COMBINED EXERCISES

Note: Ordinary activities that exercise the whole body, like riding a bicycle or swimming, can provide many of the exercises that a child needs. But sometimes specific exercises using special methods are needed.

टिप्पणी

प्रगति जाँच-2

निम्नलिखित का 1 या 2 वाक्यों में उत्तर दें:

2 विशेष विधियों से आप क्या समझते है?

.....

.....

.....

प्रगति जाँच-3

4 विशेष विधियां

.....

.....

.....

10.5 सारांश

इस अध्याय में आपने विविध तकनीकों को पढ़ा जो एक अशक्त बच्चा के लिए अपनी शिक्षा एवं दैनिक जीवन में सहायक हो सकता है। जबकि अनुकूलित कौशल बच्चे को विभिन्न गतिविधियों का उत्तरदायित्व लेने के लिए विभिन्न तकनीकों को अपनाने में सहायता करते हैं, सहयोगी युक्तियां सामान्य स्थितियों के लिए प्रतिस्थापन के रूप में कार्य करती हैं एवं बच्चे को आराम देह जीवन जीने को प्रेरित करता है।

विशेष विधियां अशक्त लोगों के लिए अनिवार्य हैं। योग, खेल, परिवार को परामर्श, अन्यों के बीच शारीरिक एवं मानसिक प्रेरण जैसी विधियां अशक्त लोगों पर प्रभाव डाल सकती हैं एवं उनके वातावरण में सुचारू कार्यान्वयन को भी प्रेरित करती है। यह उनकी अच्छी देखभाल के लिए उनके अभिभावकों की भी सहायता करेगा।

अशक्त बच्चों की शिक्षा में शिक्षक को भूमिका भी आमंत्रणीय है। शिक्षकों को विभिन्न अशक्तताओं से प्रभावित बच्चों के बारे में पूर्ण जानकारी होनी चाहिए तथा ऐसी विधियों को अपनाना चाहिए जिसके माध्यम से वे अशक्त बच्चों को अन्य बच्चों के समान ज्ञान अर्जित करने में सहायता कर सके।

यहां विभिन्न अशक्तताओं के लिए विभिन्न अनुकूलित कौशल एवं सहयोगी युक्तियां हैं। अधि कतम लाभ प्राप्त करने के लिए इनका समुचित रूप से क्रियान्वयन होना ही चाहिए।

10.6 प्रगति जाँच के उत्तर

प्रगति जाँच 1

1. अनुकूलित कौशल वे कौशल हैं जो अशक्तता की जरूरतों के अनुसार अपनायी जाती है। ये अशक्तताओं से अशक्तताओं में बदलती रहती हैं। यह दैनिक जीवन की गतिविधियों, लिखने, पढ़ने, पर्यावरणीय सामंजस्य अर्जित करने में एक शक्तिशाली भूमिका निभाता है।

2. (a) **गतिप्रेरक अशक्तता :** अनुकूलित कौशल नियमित शिक्षण विधियां हो सकती हैं या कार्य विश्लेषण, यदि बच्चा कम बुद्धि लब्धि वाला है तो IEP, पाठ योजना।

   (b) **प्रमस्तिष्क पक्षाघात :** यदि परिस्थितियां सम्बद्ध नहीं है तो नियमित शिक्षण विधि प्रयुक्त हो सकती है। अनुकूलन नहीं किया जा सकता। आंख-हाथ के समन्वय को सुधारना।

   (c) **श्रवण बाधिता :** यदि मानसिक मन्दन, एपीलेप्सी साथ-साथ हैं तो नियमित शिक्षण विधियों को विशेष विधि जरूरी है, व्यक्तिगत कौशलों का शिक्षण।

   (d) **दृष्टि बाधिता :** ब्रेल के शिक्षण, IEP, अतिरिक्त पाठ्यचर्या, एबेकस तथा, कक्षाकक्ष में विशेष सुविधायें, बाधा मुक्त वातावरण।

प्रगति जाँच 2

1. सहयोगी युक्तियां वे युक्तियां हैं जो इन बच्चों के दैनिक जीवन की गतिविधियों में सहायता करती हैं। ये युक्तियां अनुपूरक के रूप में कार्य करती हैं। इनके दो प्रकार है : वे जो संबद्ध व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त हो सकती हैं तथा दूसरा जो अन्यों की सहायता से।

2. (a) **बौद्धिक अशक्तता :** क्लच, कोने की सीट, श्रवण यंत्र, समानांतर स्तंभ, सफेद छड़ी आदि।

   (b) **वाचन बाधिता :** ओष्ट पठन प्रशिक्षक, श्रवण विधि, श्रवण यंत्र, बोलने वाले बोर्ड, संकेत भाषायें।

   (c) **अधिगम अशक्तता :** बड़े एवं आकर्षक वर्ण, मिलती जुलती तस्वीरें एवं वस्तुएं।

   (d) **बहु अशक्तता :** रैम्प, बैठने की अच्छी व्यवस्था, वैशाखियां, वाकर, व्हील चेअर।

   (e) **दृष्टि बाधिता :** अतिरिक्त पाठ्यचर्या का उपयोग करते हुए पाठ योजना, सफेद छड़ी, विशेष चश्मे, लिखित परीक्षा के लिए लेखक, टेलर, फ्रेम, गिनतारा, ब्रेल प्रशिक्षक।

टिप्पणी

3. **शिक्षक की भूमिका :** एक विशेष शिक्षक को बच्चे की समस्या समझनी चाहिए। शिक्षक मध्यस्थ है। उसे बच्चे की जरूरतों को जानने के लिए अवश्य शिक्षित होना चाहिए। शिक्षक को बच्चे को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उनकी बाधाओं को छायांकित करने में बच्चे की सहायता करनी चाहिए। एक शिक्षक बच्चे की कई प्रकार से सहायता कर सकता है।

प्रगति जाँच 3

1. **विशेष विधियां :** विधियों में से कुछ अशक्त व्यक्तियों पर प्रभाव छोड़ती है तथा वातावरण में उनके सुचारू कार्यान्वयन को भी प्रेरित कर सकती है।

   (a) परिवार को परामर्श

   (b) खेल विधि

   (c) योग

   (d) अभ्यास

   (e) सही आसन एवं करने की विधि

   (f) गंभीर अशक्तताओं के लिए चिकित्सय उपचार

10.7 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Special education for mentally handicapped pupils–A teaching manual 1987, times mirror.
- Help me to help my child–Till Bloom Brown & co 2001 Mc Graw Co.
- Class management and control–A teaching skills work books 2010 Journal of Psychology extract author–Ebaly Stewart W.
- DES teacher education project focus books–EC Wragg NIMHPUB 1999
- Text book on physiotherapy–DSEMR Course book 1993. NIMH PUB.
- Moving away from labels–Indumati Rao, Vidya Pramod 2010 CBR PUB.
- Assistive devices and therapy–book-4-FCEB, Course Material 2009 IGNOU Study material.

10.8 अन्त्य इकाई अभ्यास

Write a short note of special methods.